V Class Hindi First Language

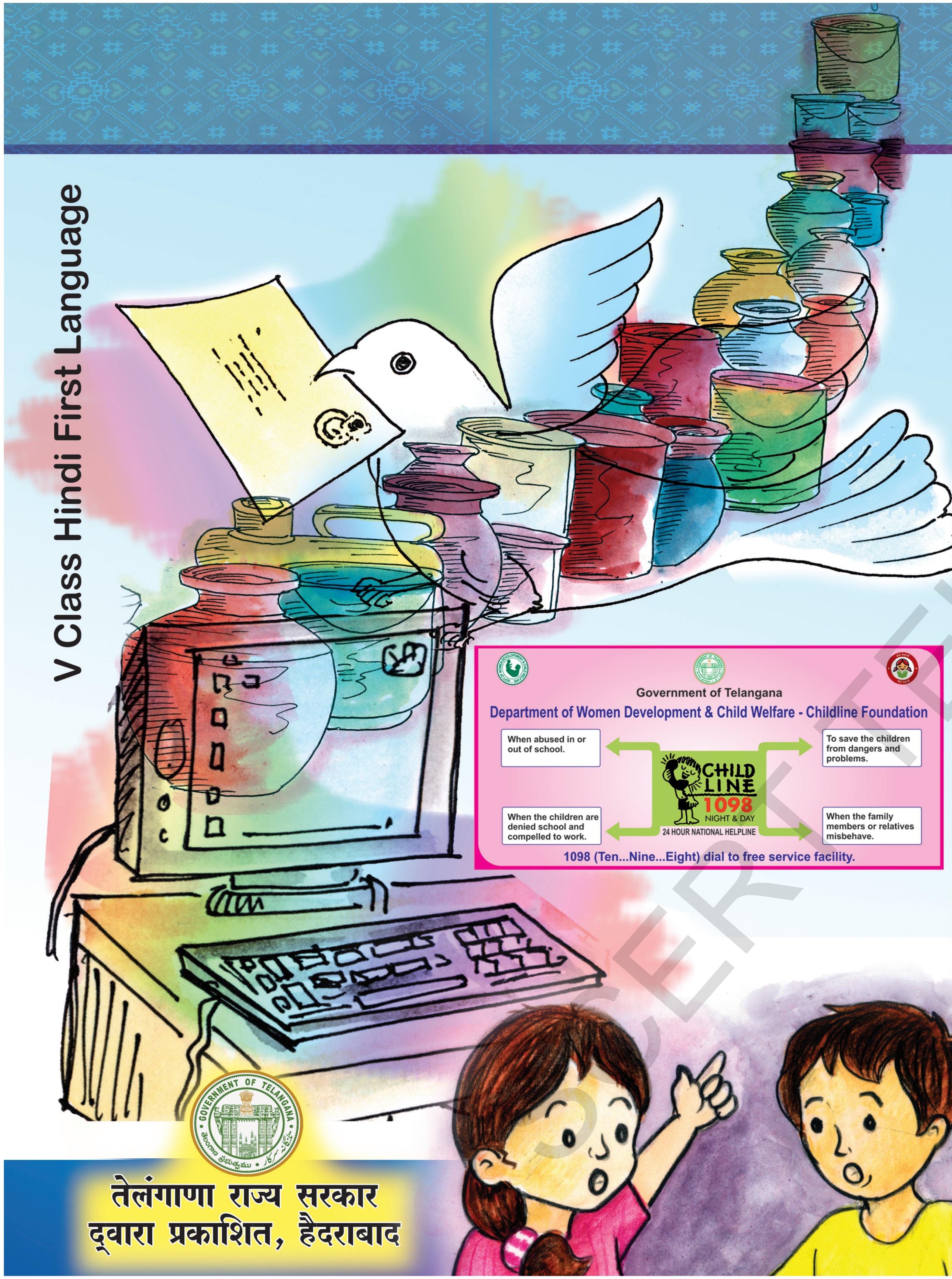

Government of Telangana
Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation
When abused in or out of school.
When the children are denied school and compelled to work.
CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY
24 HOUR NATIONAL HELPLINE
To save the children from dangers and problems.
When the family members or relatives misbehave.
1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

तेलंगाणा राज्य सरकार
द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

मुस्कान 5

FREE

प्रथम भाषा हिंदी
कक्षा-5 की पाठ्यपुस्तक

Hindi Reader
(First Language)
Class - V

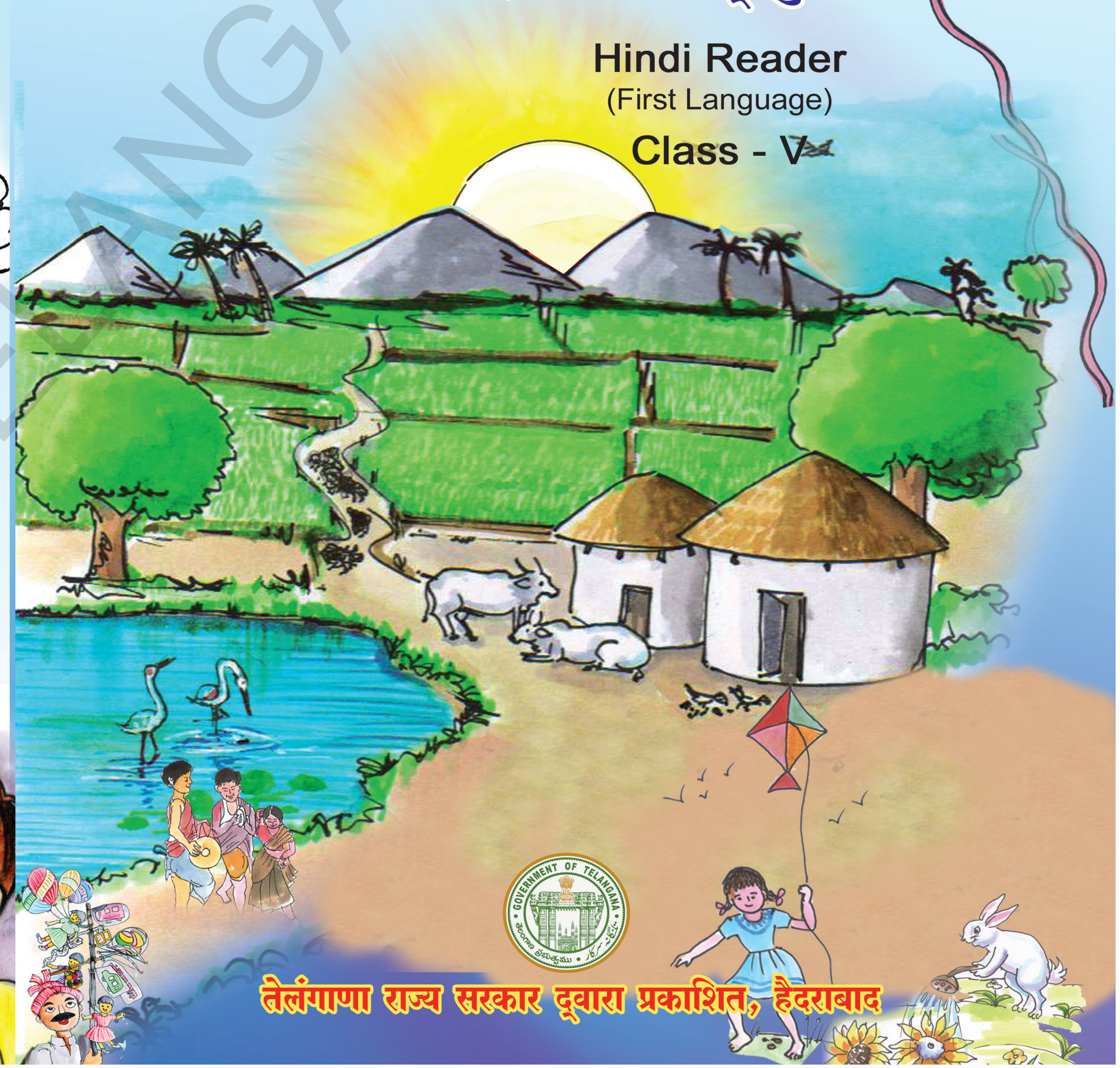

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ व अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आपको सबसे पहले संज्ञा शब्दों, क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों द्वारा चर्चा करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आप में पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।
* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।
* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।
* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' के प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।
* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

SCERT TELANGANA

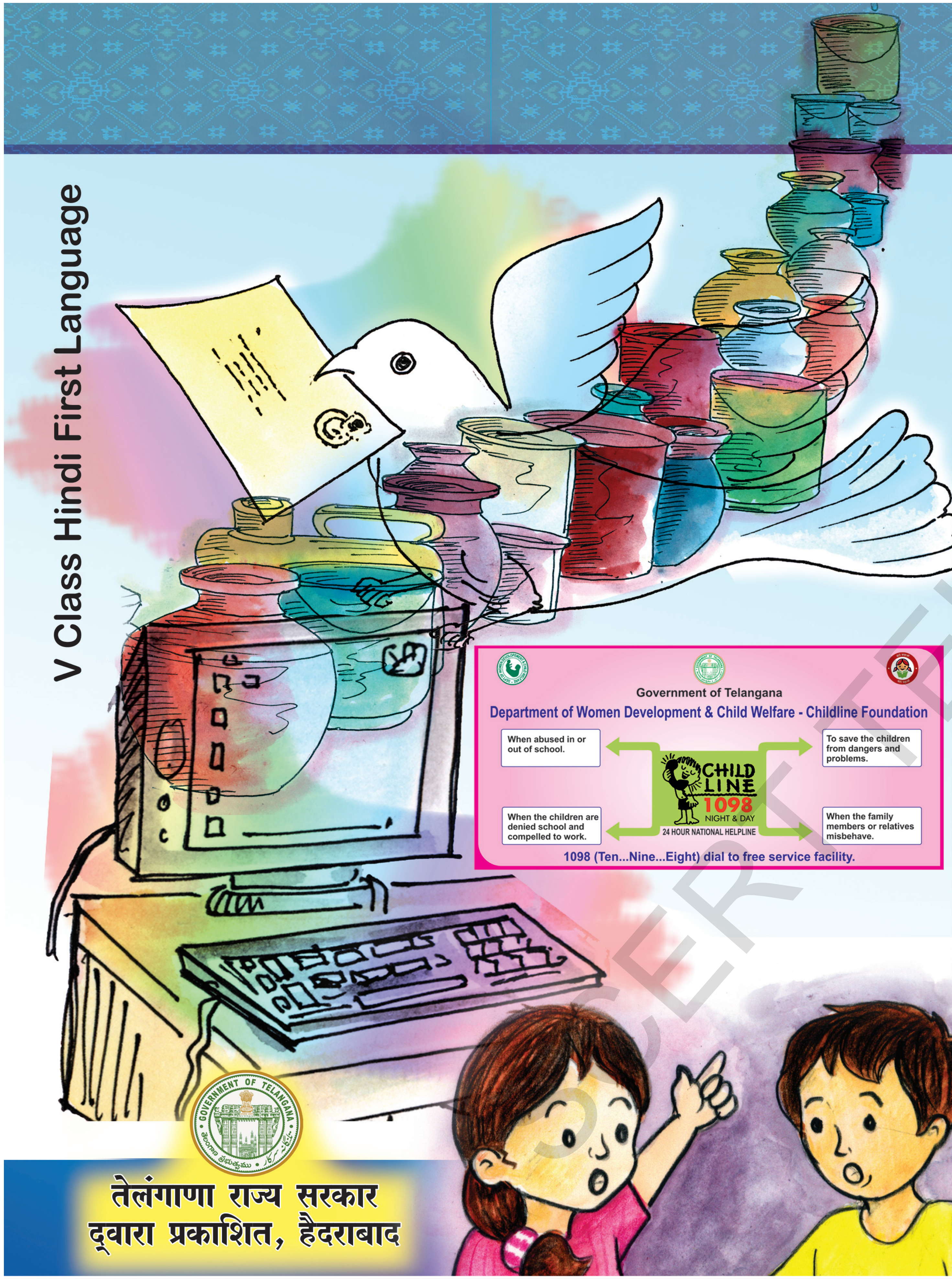

V Class Hindi First Language

Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY 24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

तेलंगाणा राज्य सरकार
द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

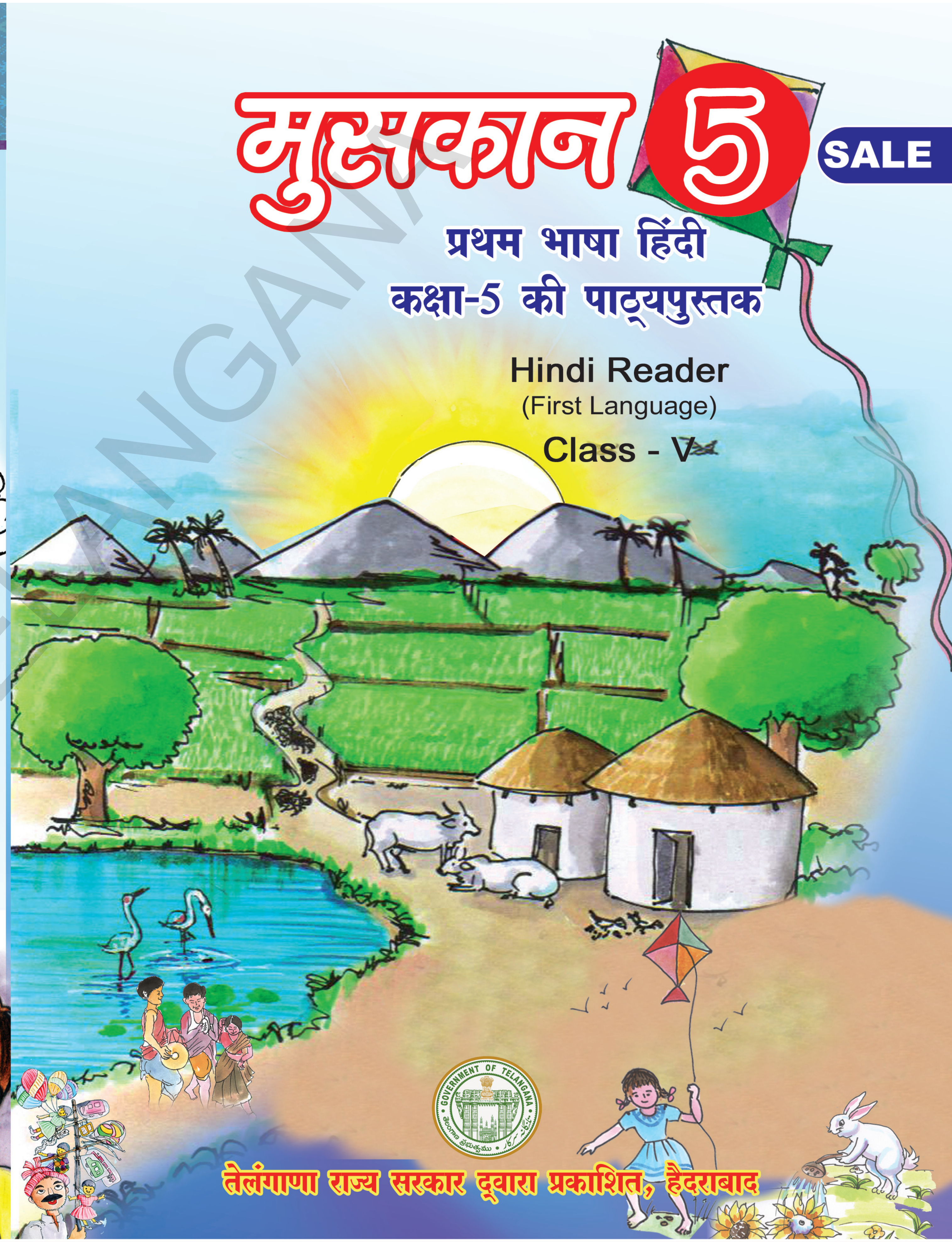

मुस्कान 5

SALE

प्रथम भाषा हिंदी
कक्षा-5 की पाठ्यपुस्तक

Hindi Reader
(First Language)
Class - V

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

मुसकान- 5

कक्षा- 5 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-**5** Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
प्रोफेसर, उस्मानिया विश्वविद्यालय

डॉ. अनीता गांगुली
असोसियेट प्रोफेसर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद

विषय विशेषज्ञ

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त भाषाविद्
भारतीय भाषा आधार-पत्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, हैदराबाद

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, हैदराबाद

श्रीमती जी. किरण
जी.एच.एस. फॉर द डेफ,
मलकपेट, हैदराबाद

सलाहकार – लिंग संवेदनशीलता तथा बाल लैंगिक प्रताड़ना
श्रीमती चारू सिन्हा, I.P.S., निदेशक, ACB, तेलंगाणा, हैदराबाद

पाठ्य पुस्तक एवं प्रकाशन समिति

श्री. ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी, हैदराबाद

डॉ. एन उपेन्दर रेड्डी
प्रोफेसर, पाठ्यक्रम
व पाठ्यपुस्तक विभाग
एस.सी.ई.आर.टी, हैदराबाद

श्री पी. सुधाकर
निदेशक
सरकारी पाठ्य पुस्तक प्रेस,
हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से आगे बढ़ो।
विनय से रहो।

क़ानून का आदर करो।
अधिकार प्राप्त करो।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2013

New Impression 2015, 2016, 2017, 2018, 2019

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2019-20

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana State.

— o —

SCERT TELANGANA

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई-2009, ए.पी.एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों के जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत से विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल- केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार माने और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारिणी में लचीलापन उतना ही जरूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होगी। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है । इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती हैं।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो.रमाकांत अग्निहोत्री तथा सुवर्ण विनायक और पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्‍या भवन सोसाईटी के विषय विशेषज्ञों श्री कुमार अनुपम तथा श्री प्रदीप झा को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व आभार व्यक्त करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया। इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्रयासों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया हैं, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन संस्थाओं के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा राज्य

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्‍वारा निशुल्क वितरण 2019-20

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन हैं हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

सहभागी गण

श्रीमती जी. किरण
समन्वयक एवं राज्य हिंदी संसाधक
जी. एच. एस. फॉर द डेफ,
मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती के. संध्या
जी.जी.एच. एस
वेस्ट मारडपल्ली, सिकन्दराबाद

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक
जी.बी.एच.एस, चादरघाट नं. 2
हैदराबाद

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक,
तेलंगाणा राज्य

श्रीमती सरोज कुलकर्णी
जी.एच.एस. नया बाज़ार
सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद

श्री. श्रीनिवास मनोहर श्रौती
जिला परिषद सेकेंडरी स्कूल
एडबिड, आदिलाबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक
यू.पी.एस. याडारम, मेडचल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
जी.एच.एस. काचीगुड़ा,
हैदराबाद

श्रीमती गोर्ती पद्मजा
जिला परिषद हाई स्कूल
माकवारपालेम, विशाखापट्टणम

श्री सुरेश कुमार मिश्रा
राज्य हिंदी संसाधक,
तेलंगाणा राज्य

चित्रांकन

के. पार्वती
हिन्दु कॉलेज हाई स्कूल,
गुंटूर

के. रघुवीर गौड़
डाइट, करीमनगर

टी.वी. मोहन राजु
जूनियर कॉलेज, बेलुगोंडा,
प्रकाशम

टी.वी. रामाकृष्णा
जेड.पी.एच. एस, दुद्देदा
मेदक

लेआउट डिज़ाइन

कुर्रा सुरेश बाबू, एम.ए., एम.फिल., बी.टेक.

SCERT TELANGANA

अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

1. 160 कार्यदिवसों को दृष्टि में रखकर यह पुस्तक बनायी गयी है।

2. बच्चों द्वारा अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ पाठ्यपुस्तक में क्रमबद्ध दी गयी हैं। यह देखना है कि बच्चे उन्हें अवश्य अर्जित करें। पुस्तक की चार इकाइयाँ हैं। कुल चौदह पाठ हैं। इकाई में दिये गये पाठों को क्रमवार पूरा करना है।

3. हर पाठ को उस पाठ में दी गयी दक्षताओं के अनुसार पूरा करना है।

4. प्रतिदिन प्रथम भाषा पढ़ाने के लिए नब्बे मिनट का समय दिया जाएगा। इन नब्बे मिनटों में पहले पैंतालीस मिनट पढ़ाये जाने वाले अभ्यास कार्य करवाएँ। अगले पैंतालीस मिनटों में उस दिन पढ़ाये जाने वाले अंशों से संबंधित अभ्यास सामूहिक रूप से करवायें। पिछड़े बच्चों पर अध्यापक व्यक्तिगत रूप से ध्यान दें और उनके स्तर के अनुसार अभ्यास करवायें।

5. पाठ की क्रिया उन्मुखीकरण चित्र से लेकर 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' तक चलनी चाहिए।

6. चित्र द्वारा उन्मुखीकरण करते समय बच्चों से स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करवायें। दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्न भी पूछें।

7. उन्मुखीकरण चित्र पर बातचीत करने और छात्रों से पाठ पढ़ाने के लिए एक कालांश निर्धारित करें। तीन से चार कालांशों का उपयोग पाठ पढ़ाने के लिए करें।

8. शेष पाँच से छह कालांशों में अभ्यास कार्य छात्रों से पाठशाला में ही करवायें।

9. प्रतिदिन भाषा के लिए दिये गये नब्बे मिनटों में से पहले पैंतालीस मिनटों में अभ्यास कार्यों के बारे में सूचनाएँ दें। बच्चों द्वारा किये गये कार्य की जाँच करें और उन्हें निर्देश दें। अगले पैंतालीस मिनटों में छात्रों से व्यक्तिगत रूप से अभ्यास कार्य करवायें।

10. पहले पैंतालीस मिनटों में पढ़ाये जाने वाले पाठ और अभ्यास प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी अवश्य दें। पढ़ाये जाने वाले कालांश में निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दें। सभी बच्चों की सहभागिता अत्यावश्यक है। अध्यापक कम बोलें, बच्चों को बातचीत के अधिक अवसर दें। बच्चों से प्रश्न पूछें। उन्हें स्वयं भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। इस कार्य के लिए कक्षाकक्ष गतिविधि द्वारा या समूह कार्य द्वारा अधिगम प्रक्रिया का निर्वाह करें।

11. एक पाठ को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित सोपानों का पालन करें-
    - चित्र के बारे में प्रश्न पूछें।
    - शीर्षक की घोषणा करें।
    - पाठ का उद्देश्य और विवरण दें।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

- व्यक्तिगत वाचन करवायें और काठिन्य निवारण करें।
- पाठ के चित्रों पर बातचीत करें।
- पाठ पढ़ायें।
- अभ्यास करवायें।
- स्वमूल्यांकन-क्या मैं ये कर सकता हूँ? करवायें।

विशेष शिक्षण

- उपर्युक्त तरीके से पहले पैंतालीस मिनटों में इस तरह पाठ का अधिगम करें कि बच्चे पाठ में दी गयी दक्षताएँ अर्जित कर सकें।
- अगले पैंतालीस मिनटों में उस दिन पढ़ाये जाने वाले अंशों या दक्षताओं से संबंधित अभ्यास करवायें। इसे निम्न तरीके से पूरा करें-

दक्षताएँ	पूरा करने का तरीका
- सुनना, सोचकर बोलना	- पूर्ण कक्षाकक्ष क्रिया
- पढ़ना	- सामूहिक कार्य या व्यक्तिगत कार्य
- लिखना	- समूह लेखन या व्यक्तिगत लेखन
- शब्द-भंडार	- सामूहिक कार्य या व्यक्तिगत कार्य
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति	- सामूहिक कार्य या व्यक्तिगत कार्य
- प्रशंसा	- सामूहिक कार्य या व्यक्तिगत कार्य
- भाषा की बात	- व्यक्तिगत कार्य
- परियोजना कार्य	- सामूहिक कार्य या व्यक्तिगत कार्य

SCERT TELANGANA

क्या कहाँ है?

इकाई	क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं
I	1	खिलौनेवाला	कविता	जून	1
	*	ईदगाह	उपवाचक	जून	7
	2	वे दिन भी क्या दिन थे	विज्ञान कथा	जुलाई	11
	3	राख की रस्सी	लोककथा	जुलाई	17
II	4	पानी रे पानी	निबंध	जुलाई	24
	5	बढ़े चलो, बढ़े चलो	कविता	अगस्त	31
	6	चावल की रोटियाँ	नाटक	अगस्त	39
	7	चुनौती हिमालय की	यात्रा वर्णन	सितंबर	53
	*	मेरी दैनिकी	उपवाचक	अक्तूबर	63
III	8	एक माँ की बेबसी	कविता	अक्तूबर	65
	*	नन्हा नटखट खरगोश	उपवाचक	नवंबर	73
	9	एक दिन की बादशाहत	कहानी	नवंबर	76
	10	फ़सलों के त्यौहार	निबंध	दिसंबर	84
	11	जहाँ चाह वहाँ राह	लेख	दिसंबर	93
IV	12	बाघ आया उस रात	कविता	जनवरी	100
	13	चिट्ठी का सफ़र	लेख	जनवरी	106
	*	डाकिए की कहानी (कँवरसिंह की ज़बानी)	उपवाचक	फरवरी	114
	14	बिशन की दिलेरी	कहानी	फरवरी	117

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

इस पाठ्यपुस्तक से बच्चों द्वारा अर्जित की जानेवाली दक्षताएँ

सुनना-बोलना

- गीत, सूचनाएँ, कहानियाँ, वार्तालाप, निबंध आदि सुनकर अर्थ ग्रहण कर सकेंगे। अपने शब्दों में बोल सकेंगे।
- जाने और सुने गये अंशों के बारे में स्पष्ट उच्चारण के साथ सही क्रम में बोल सकेंगे, गीत गा सकेंगे, अभिनय कर सकेंगे।
- विभिन्न परिस्थितियों में संदर्भोचित भाषा का उपयोग कर सकेंगे।

पढ़ना

- गीत सूचनाएँ, कहानियाँ, वार्तालाप, निबंध आदि धाराप्रवाह के साथ पढ़ सकेंगे। पढ़े गए अंशों से संबंधित प्रश्नों का समाधान कर सकेंगे।
- पढ़े गए अंशों के शब्दों को संदर्भानुसार ग्रहण कर सकेंगे।
- पर्याय शब्द, विलोम शब्द, युग्म शब्द पहचान सकेंगे।

लिखना

- पढ़े गए विषयों को समझ सकेंगे, बोल सकेंगे, लिख सकेंगे।
- विभिन्न रूपों में पाये जाने वाले बाल-साहित्य को धाराप्रवाह के साथ पढ़ सकेंगे और अर्थ समझ कर लिख सकेंगे।
- पाठ्यपुस्तक में पीछे दिए गए शब्दों के अर्थ समझ सकेंगे और उनका उपयोग कर सकेंगे।
- जाने, सुने और देखे हुए विषयों - कहानियों, स्व-अनुभव, पसंद-नापसंद आदि के बारे में पाँच वाक्यों में अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- लिखते समय, सही शब्दों को क्रमानुसार, विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए बिना त्रुटियों के लिख सकेंगे।

शब्द-भंडार

- शब्द भंडार का संदर्भोचित उपयोग कर सकेंगे, अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
- दिए गए शब्दों से नए शब्द बना सकेंगे, उनका उपयोग कर सकेंगे।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- कविता, कहानियाँ आगे बढ़ा सकेंगे। वार्तालाप, आत्मकथा, पत्र आदि लिख सकेंगे।
- चित्र उतारकर रंग भर कर उनके बारे में लिख सकेंगे।

प्रशंसा

- सहपाठियों, महिलाओं, अन्य वर्गों, अन्य संस्कृतियों, भाषाओं, महानुभावों आदि की प्रशंसा कर सकेंगे।

भाषा की बात

- अर्थपूर्ण वाक्य बना सकेंगे। वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया पहचान सकेंगे।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

1. खिलौनेवाला

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. बच्चे क्या कर रहे हैं?
3. इस चित्र को देखकर आप क्या सोच रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह कविता पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

SCERT TELANGANA

वह देखो माँ आज
खिलौनेवाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर-सुंदर
नए खिलौने लाया है।

हरा-हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी-सी मोटर गाड़ी है
सर-सर-सर चलने वाली।

सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक-भक
करती चलने वाली रेल।

गुड़िया भी है बहुत भली-सी
पहिने कानों में बाली
छोटा-सा 'टी सेट' है
छोटे-छोटे हैं लोटा-थाली।

छोटे-छोटे धनुष-बाण हैं
हैं छोटी-छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर ज़ोर वह रहा पुकार।

मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल-मचल सरला कहती है
माँ से लेने को साड़ी।

कभी खिलौनेवाला भी माँ
क्या साड़ी ले आता है।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी-कभी दे जाता है।

अम्मा तुमने तो लाकर के
मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूँ मैं
तुम भी मन में करो विचार।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. यह कविता आपको कैसी लगी? और क्यों ? बताइए।
2. यह कविता किससे संबंधित है? आपके पास कौन-कौन से खिलौने हैं? उन खिलौनों से आप कैसे खेलते हैं?
3. कविता में लड़के की जगह तुम होते तो कौनसा खिलौना लेते और क्यों?

पढ़िए

I. **'सर-सर', 'सुंदर-सुंदर'** ऐसे शब्दों का प्रयोग कविता में हुआ है। आप कविता में ऐसे शब्दों को रेखांकित कीजिए और लिखिए।

II. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए।

कभी खिलौनेवाला भी माँ

....

साड़ी तो वह कपड़े वाला

....

III. नीचे दिये गये भाव कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं उन्हें पहचानिए और लिखिए ।

1. खिलौनेवाला साड़ी नहीं बेचता है ।

   ....

2. खिलौनेवाला बच्चों को खिलौने लेने के लिए आवाज़ें लगा रहा है ।

   ....

3. मुझे कौन-सा खिलौना चाहिए-उसमें माँ की सलाह चाहिए ।

   ....

IV. कविता पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. बालक तोता, बिल्ली, मोटर जैसे खिलौने क्यों नहीं खरीदना चाहता था ?
2. खिलौनेवाले के पास कौन-कौन से खिलौने हैं ?
3. खिलौनेवाला साड़ी क्यों नहीं लाता है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. कविता में आये खिलौनों के अलावा अन्य खिलौनों के नाम लिखिए।
2. फेरीवाले जो सामान बेचते हैं, वे दुकानों में भी मिलते हैं। आप सामान कहाँ से खरीदना पसंद करते हैं और क्यों?
3. खिलौने वाले की तरह मिठाई वाला आता तो उसके पास कौन-कौनसी मिठाइयाँ होतीं?
4. कविता में आगे क्या हुआ होगा? सोचकर बताइए।

शब्द भंडार

1. आपके पास कई खिलौने होंगे। जैसे मोटर, कार, जहाज़ आदि। आप कुछ और खिलौनों के नाम लिखिए। साथ में यह भी बताइए कि वे खिलौने किन चीज़ों से बने हैं।

उदाहरणः गेंद - रबर

2. खिलौने की दुकान से आपने 'टी-सेट' ख़रीदा है। आप चाय बनाना चाहते हैं। चाय बनाने के लिए आपको किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होगी।

....

....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

खिलौनेवाले के पास से मनु खिलौना ख़रीदना चाहती है। साथ में उसकी माँ भी है। खिलौनेवाले, माँ और मनु के बीच होने वाले वार्तालाप को आगे बढ़ाइए :

खिलौनेवाला - खिलौने ले लो, खिलौने, रंग-बिरंगे खिलौने, सस्ते और मस्त खिलौने।
मनु - माँ, माँ, मुझे खिलौना चाहिए।
माँ - ....
मनु - ....
खिलौनेवाला - ....

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

धूप, जाड़ा, वर्षा-हर मौसम में कठिनाइयों का सामना करते हुए फेरीवाले गली-गली घूमकर आप की ज़रूरत की चीज़ें आप तक पहुँचाते हैं। इन फेरीवालों की प्रशंसा में पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

'खिलौनेवाला' शब्द संज्ञा में **'वाला'** जोड़ने से बना है । दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द कुछ संज्ञा से बने हैं, कुछ क्रिया से, उन्हें छाँटकर लिखिए ।

1 टोपीवाला कहाँ जा रहा है?
2 पानवाले की दुकान आज बंद है।
3 मेरी दिल्लीवाली मौसी बस कंडक्टर है।
4 मैंने नाचने वाला बंदर देखा।
5 नंदू को बोलने वाली गुड़िया चाहिए।

परियोजना कार्य

अपने पाँच मित्रों के नाम लिखिए, उनसे पता कीजिए कि उन्हें कौन से खिलौने पसंद हैं। उन खिलौनों के नाम इस तालिका में लिखिए।

मित्र का नाम	पसंद के खिलौने

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता लय के साथ सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से तुकबंद वाक्य लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

ईदगाह

उपवाचक

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर और सुहावना प्रभात है। वृक्षों में कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो। कितना प्यारा, कितना शीतल मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे अधिक प्रसन्न हैं। जल्दी मची है कि लोग ईदगाह के लिए चलते नहीं।

हामिद बड़ा प्रसन्न है। चार-पाँच साल का गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। हामिद अब अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में ही सोता है।

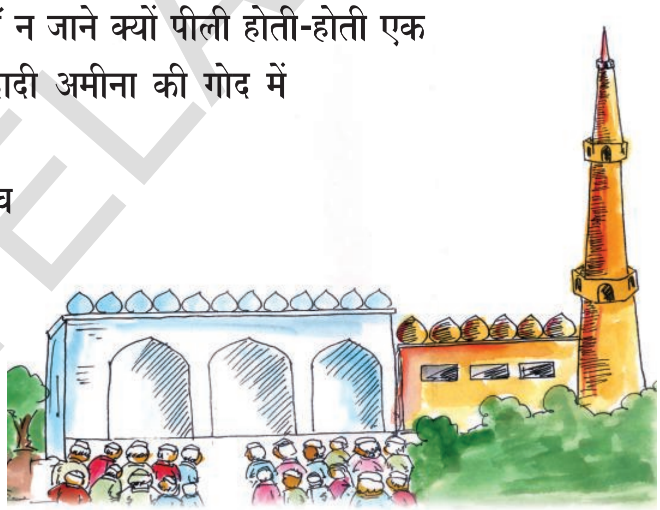

अमीना का दिल कचपचा रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का अब अमीना के सिवा कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दें। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाये तो क्या हो? नन्हीं सी जान। तीन कोस पैदल कैसे चलेगा? पैरों में छाले पड़ जायेंगे। पर हामिद के उत्साह का क्या करे? अधिक पैसे भी पास नहीं हैं। हामिद भीतर जाकर कहता है -तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा, बिल्कुल मत डरना''।

गाँव से मेला चला। अन्य बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। कभी किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों की प्रतीक्षा करते।

सहसा ईदगाह पर दृष्टि पड़ी। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फ़र्श है जिस पर बिछायत हो रही है। नमाज़ियों की पंक्तियाँ एक कतार के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं। धन और पद का यहाँ कोई प्रश्न है नहीं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुकते हैं। फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

बैठ जाते हैं। जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ जल उठें और फिर एक साथ बुझ जायें। अपूर्व दृश्य था जैसे भ्रातृत्व भाव का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हो। नमाज़ समाप्त हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। बूढ़े और बच्चे सभी मगन है। मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धरना शुरू हो गया। उधर दुकानों की कतारें लगी हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं। सिपाही और मुजरिम, राजा और वकील, भिश्ती और धोबी। वाह, कितने सुन्दर खिलौने हैं। बस अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है। खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला कंधे पर बन्दूक रखे हुए मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया - कमर झुकी है, ऊपर मशक रखी है। नूरे को वकील से प्रेम है - काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानूनी पोथा लिए हुए मालूम होता है, अभी-अभी अदालत से बहस किये चले आ रहे हैं। सब दो-दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। वह इतने महंगे खिलौने कैसे ले?

खिलौने के बाद मिठाई का नंबर आता है। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन। मजे से खा रहे हैं।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की थी। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। अकेला हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ख्याल आया - दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होगी। फिर उसकी अंगुलियाँ कभी न जलेंगी। खिलौनों से क्या फायदा? जरा देर तो खुशी होती है। फिर तो कोई उनकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता। कई तो घर पहुँचते-पहुँचते ही टूट-फूट कर बराबर हो जायेंगे।

हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं। सवील पर सबके सब शरबत पी रहे हैं। हामिद सोचता है। देखो, कैसे हैं, ये सब। इतनी मिठाइयाँ ली। मुझे किसी ने एक भी नहीं दी। उस पर कहते

SCERT TELANGANA

हैं, मेरे साथ खेलो। खायें मिठाइयाँ, उन्हीं का मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियाँ निकलेंगी, जबान चटोरी हो जायेगी। मैं क्यों जीभ खराब करूँ? मैं तो चिमटा ही लूँगा। दादी उसे देखेंगी। दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी। कहेंगी - ''मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है।'' हज़ारों दुआएँ देंगी। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआ देगा? मेरे पास पैसे नहीं हैं, तभी तो मोहसिन और महमूद मिजाज दिखाते हैं। सबके सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है? हँसो मेरी बला से।

उसने दुकानदार से पूछा- ''यह चिमटा कितने का है?'' दुकानदार ने छह पैसे बताये। हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना है तो लो, नहीं तो चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा - ''तीन पैसे लोगे?''
और यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि कहीं दुकानदार घुड़क न दे। लेकिन दुकानदार ने घुड़की नहीं दी। बुलाकर तीन पैसे में चिमटा दे दिया। हामिद ने इस तरह उसे कंधे पर रखा मानो वह बंदूक हो, और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर कहा- ''यह चिमटा क्यों लाया, पगले?'' हामिद ने सफाई दी- ''तुम्हारे खिलौने क्या हैं? कोरी मिट्टी जरा नीचे गिर पड़े तो टूट-फूटकर खत्म हो जायें, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भाग जाये, वकील साहब चोंगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जायें। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमें हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जायेगा, और उसकी आँखें निकाल लेगा। ''

हामिद के तर्क का और बच्चों के पास जवाब नहीं था। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये पर कोई काम की चीज़ नहीं ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा दिया। हामिद की बात का ऐसा रौब पड़ा कि जो साथी अभी तक उसे कुछ समझ ही नहीं रहे थे, वे बारी-बारी से उसे अपने खिलौने दिखाने लगे। हामिद ने भी खुले दिल से उन खिलौनों की तारीफ की। उसका चिमटा भी बारी-बारी से सबके हाथों से गुज़रा और सबने उसको खूब सराहा।

SCERT TELANGANA

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेलेवाले घर पहुँचे। मोहसिन की छोटी बहिन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ पड़े और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे ने दीवार पर दो खूँटियाँ गाड़ी। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा। पटरे पर कागज का कालीन रखा गया और नूरे के वकील साहब उस पर राजा भोज की तरह विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब लुढ़क पड़े और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया।

रहा महमूद का सिपाही, उसके लिए एक टोकरी आयी। उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाये गये जिसमें सिपाही आराम से लेटे। महमूद ने टोकरी उठायी और द्वार पर चक्कर लगाने लगा। उसके दोनों भाई सिपाही की तरफ से ''जागते रहो '' पुकारते हुए चले। इतने में महमूद को ठोकर लगी। टोकरी नीचे गिरी और उसके साथ मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिये जमीन पर आ गिरे। बेचारे की एक टाँग टूट गयी।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में लेकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'' यह चिमटा कहाँ से आया?''

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे में।''

अमीना को क्रोध आया। ''दो पहर हो गये। न कुछ खाया न पिया। तीन पैसे थे। उनका भी यह चिमटा उठा लाया।''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा ''तुम्हारी अंगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसीलिए मैंने इसे ले लिया। ''

अमीना का क्रोध काफ़ूर हो गया। बच्चे में कितना त्याग है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। पर इसे वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी का इतना ध्यान रहा। यह सब सोचते हुए बुढ़िया गद्‌गद्‌ हो गयी और रो उठी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं। और उधर हामिद अपनी दादी की प्यार भरी गोदी में दुबका जा रहा था।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

2. वे दिन भी क्या दिन थे

सोचिए-बोलिए

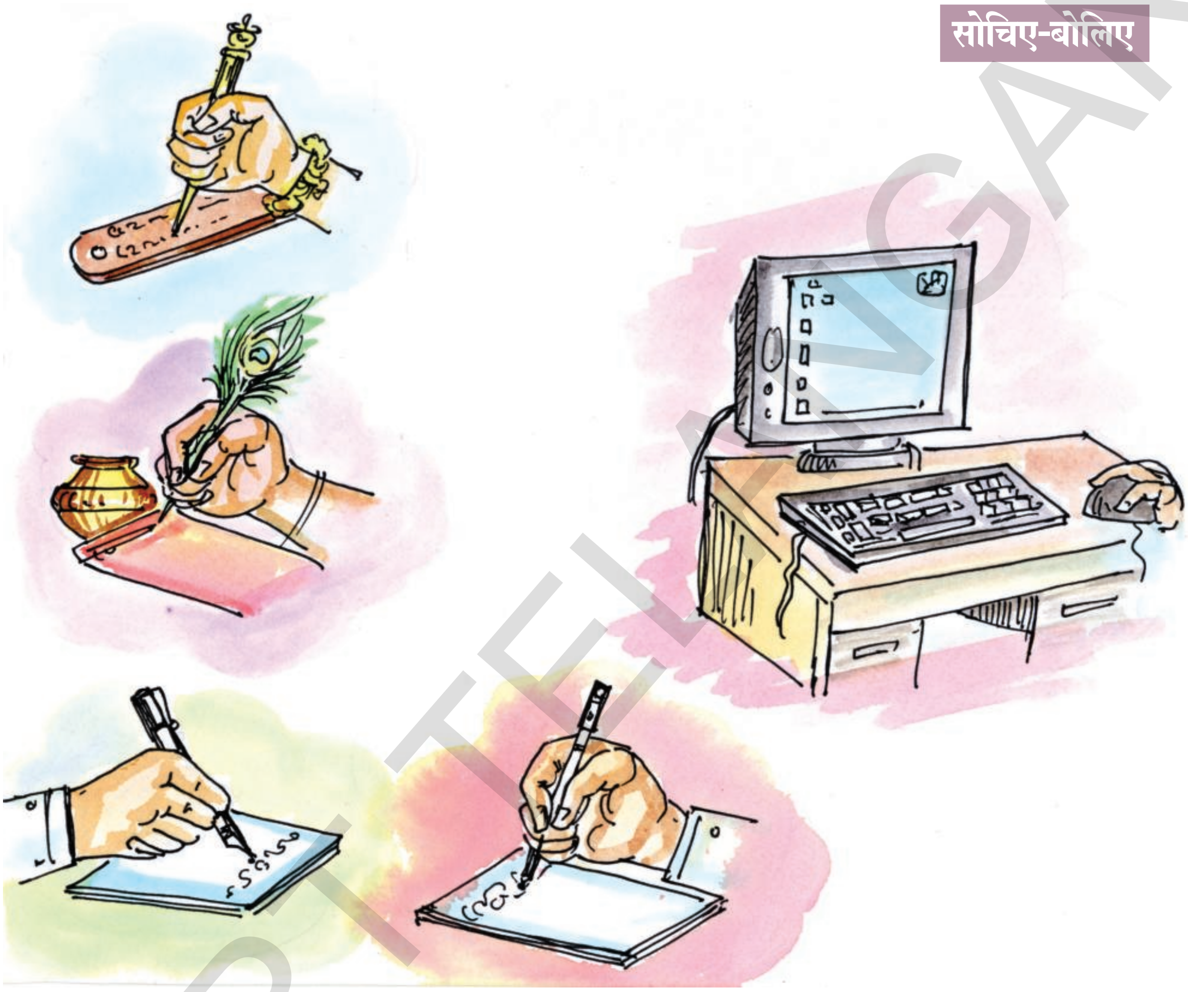

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. पुराने ज़माने में लिखने के लिए किन-किन चीज़ों का प्रयोग किया जाता था?
3. कंप्यूटर से क्या-क्या लाभ हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

घटना महत्वपूर्ण थी वरना कुम्मी अपनी डायरी में उसे क्यों लिखती। अपनी डायरी में उसने 17 मई 2155 की रात को लिखा, '' आज रोहित को सचमुच की एक पुस्तक मिली है।''

वह पुस्तक बहुत पुरानी थी। कुम्मी के दादा ने बताया था कि जब वे बहुत छोटे थे तब उनके दादा ने कहा था कि उनके ज़माने में सारी कहानियाँ कागज़ पर छपती थीं और पढ़ी जाती थीं। पुस्तकों में पृष्ठ होते थे जिन पर कहानियाँ छपी होती थीं और हर पृष्ठ पढ़ने के पश्चात् दूसरा पृष्ठ पलटकर आगे पढ़ना होता था। सारे शब्द स्थिर रहते थे, चलते नहीं थे जैसे आजकल पर्दे पर चलते हैं।

रोहित ने कहा था, ''कितनी पुस्तकें बेकार जाती होंगी। एक बार पढ़ी और फिर बेकार हो गई। अब तो हमारे टेलीविज़न के पर्दे पर न जाने कितनी पुस्तकों की सामग्री आ जाती है और फिर भी यह पुस्तक नई की नई रहती है।''

कुम्मी ने भी रोहित की हाँ में हाँ मिलाई। फिर पूछा, ''तुम्हें वह पुस्तक कहाँ मिली?''

रोहित ने बताया, ''अपने घर में। एक पुराना डिब्बा कहीं दबा पड़ा था। उसी को फेंक रहे थे कि उसमें से यह पुस्तक मिली।''

''इसमें क्या लिखा है?''

''स्कूलों के बारे में लिखा है।''

''स्कूल?'' कुम्मी ने प्रश्न किया।

उसके विषय में लिखने को है ही क्या? हर विद्यार्थी के घर पर एक मशीन होती है जिसमें टेलीविज़न की तरह का एक पर्दा होता है। रोज़ नियमित रूप से उसके सामने बैठकर हमें यह सब याद करना होता है जो वह मशीन हमें बताती है। सारा गृहकार्य करके दूसरे दिन उसी मशीन में डाल देना होता है। हमारी गलतियाँ बताकर फिर वह हमें समझाती है। एक विषय पूरा होने पर वही मशीन हमारी परीक्षा लेकर हमें आगे पढ़ाना आरंभ कर देती है.....'' कहते-कहते कुम्मी थक गई थी। अंत में बोली, ''कितना उबाऊ होता है यह सारा स्कूल का काम!''

रोहित मुस्कुराते हुए उसकी बातें सुन रहा था, ''अरे बुद्धू, जैसे स्कूल का वर्णन इस पुस्तक में है, वह इससे भिन्न होता था। इसमें तो उन स्कूलों के बारे में लिखा है जो सदियों पहले होते थे।''

कुम्मी के मन में कुछ उत्सुकता जगी, बोली, ''फिर भी उनके यहाँ मशीन के बने अध्यापक तो होते ही होंगे?''

कुम्मी को याद आया कि एक बार जब उससे भूगोल में रोज़ वही गलतियाँ होने लगी थीं, तो उसकी माँ ने मुहल्ले के अध्यक्ष को बताया था। तब एक आदमी आया था और उसने उस मशीन के पुर्ज़े-पुर्ज़े अलग कर दिये थे। तब उसने मन-ही-मन यह मनाया था कि वह आदमी इस बोर करने वाले अध्यापक को पुनः जोड़ न पाए, तो उसे हमेशा के लिए छुट्टी मिल जाए। लेकिन उस आदमी ने मशीन को फिर से जोड़कर उसकी माँ को बताया था, ''लगता है

SCERT TELANGANA

मशीन के भूगोल की चक्की कुछ तेज़ रफ़्तार पर थी, सो आपकी लड़की के लिए उसे समझना कठिन हो गया था। मैंने अब उसकी गति कुछ धीमी कर दी है, सो आशा है अब ठीक रहेगा।''

और कुम्मी को उसी समय भूगोल का सबक़ सीखने बैठ जाना पड़ा था। मन-ही-मन वह उस मशीनी-अध्यापक को कोसती रही थी।

तभी रोहित ने सोचने के सिलसिले को तोड़ा। बोला, ''हाँ, तब अध्यापक तो होते थे परंतु मशीन नहीं, स्त्रियाँ और पुरुष होते थे।''

''क्या कहा? कहीं कोई स्त्री या पुरुष इतने सारे विषय हमें सिखा सकता है?''

''क्यों नहीं? वह बच्चों को सारे विषय समझाते थे, गृहकार्य देते थे और प्रश्न पूछते थे। अध्यापक बच्चे के घर नहीं जाते थे बल्कि बच्चे एक विशेष भवन में जाते थे जिसे स्कूल कहते थे।'' कुम्मी का अगला प्रश्न था, ''तो क्या सब बच्चे एक समय में एक जैसी चीजें सीखते थे?''

''हाँ। एक आयु के बच्चे एक साथ बैठते थे।''

''लेकिन माँ कहती हैं कि मशीनी अध्यापक हर बच्चे की समझ के अनुसार पढ़ाता है, फिर पुराने ज़माने में यह कैसे संभव होता था?''

''तब वे लोग इस प्रकार नहीं करते थे। रहने दो, तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं वह पुस्तक तुम्हें नहीं दूँगा।''

कुम्मी झट बोली, ''नहीं नहीं, मैं उसे पढ़ना चाहूँगी कि तब स्कूल कैसे होते थे। कितनी अजीब-अजीब बातें जानने को मिलेंगी।''

इतने में अंदर से माँ की आवाज़ सुनकर कुम्मी बोली, ''लगता है सबक़ का समय हो गया है।''

रोहित भी उठा और अपने घर की ओर चला गया। कुम्मी अपने घर की ओर चली गई। अंदर मशीन आगे का सबक़ देने के लिए तैयार थी। मशीन से आवाज़ आनी आरंभ हो गई। ''सबसे पहले आज तुम्हें गणित सीखना है। कल का होम-वर्क छेद में डालो..''

कुम्मी ने वैसा ही किया। वह सोच रही थी कि कितने अच्छे होते होंगे वे पुराने स्कूल जहाँ एक ही आयु के सारे बच्चे हँसते खेलते-कूदते स्कूल जाते होंगे..और पढ़ाने वाले पुरुष और स्त्रियाँ होते होंगे....

इतने में मशीन से स्वर आना आरंभ हो गया था और पर्दे पर चलते हुए अक्षर एवं अंक आने शुरू हो गए थे। और कुम्मी सोच रही थी कि तब स्कूल जाने में कितना आनंद आता होगा, कितने खुश रहते होंगे सारे बच्चे।

-आइज़क असीमोव

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. इस पाठ को सुनने के बाद आपके मन में कैसे विचार उठ रहे हैं? बताइए।
2. रोहित ने कहा था, ''कितनी पुस्तकें बेकार जाती होंगी। एक बार पढ़ी और फिर बेकार हो गईं।'' क्या सचमुच में ऐसा होता है, बताइए।
3. हमें किताबें पढ़ना चाहिए। किताबें हमारे लिए किस प्रकार लाभदायक हैं, बताइए।

पढ़िए

I. नीचे दिये गये शब्दों से संबंधित शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए।
उदाहरणः **<u>नई</u>** पुस्तक
1.......... डिब्बा 2.......... अध्यापक 3.......... भवन

II. पाठ में से कुछ प्रश्नवाचक वाक्यों को चुनकर लिखिए।
उदाहरण :- इसमें क्या लिखा है?

III. पाठ पढ़िए और लिखिए कि निम्नलिखित शब्दों के बारे में पाठ में क्या कहा गया है-
1. शब्द 2. कहानी 3. पुस्तक 4. स्कूल

IV. पाठ पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
1. पाठ में किन-किन विषयों के नाम आये हैं? लिखिए।
2. कुम्मी मन-ही-मन में मशीनी अध्यापक को क्यों कोस रही थी?
3. कुम्मी ने अपनी डायरी कब लिखी थी?

लिखिए

1. कुम्मी के स्थान पर यदि आप होते तो 2155 के स्कूलों की स्थितियों का वर्णन कैसे करते? आपके और कुम्मी के विचारों में किन-किन बातों में अंतर होता?
2. आप मशीन की मदद से पढ़ना चाहेंगे या अध्यापक की मदद से? दोनों के पढ़ाने में कौन-कौन सी आसानियाँ और मुश्किलें हैं? लिखिए।
3. मशीनी अध्यापक विषयों को पढ़ाने के अतिरिक्त क्या खेल के मैदान में भी आप की मदद कर सकता है? बताइए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

I. आज हमारे अधिकतर काम कंम्प्यूटर की मदद से होते हैं। सोचिए और लिखिए कि अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में हम कंप्यूटर का इस्तेमाल किन-किन कार्यों के लिए करते हैं।

व्यक्तिगत जीवन	**सार्वजनिक जीवन**
1. उदा : ई-मेल	प्रस्तुतीकरण

II. 1. रोहित की पुस्तक पुरानी थी किन्तु कुम्मी की पुस्तक नई थी।

2. भूगोल की चक्की कुछ तेज़ रफ्तार पर थी सो मैंने अब उसकी गति कुछ धीमी कर दी है।

(उपर्युक्त वाक्यों में विलोम शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनसे एक-एक वाक्य बनाइए)

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

इस कार्यक्रम का नाम है ''डायल यूअर टीचर''। अध्यापक / अध्यापिका श्यामपट को टेलीविज़न का पर्दा मानकर स्वयं उद्घोषिका/ उद्घोषक (आँकर) बनती/ बनता है। सारे बच्चे अपने हाथों को फोन के रूप में उपयोग कर फोन डायल करते हैं। छात्रों को अपने फोन नं. पहले ही दिए जा चुके हैं । छात्र एक-के-बाद एक फोन करेंगे और विज्ञान की प्रगति के बारे में बोलेंगे ।

उदाहरण के रूप में :

(1) फिल्मों में ....
(2) गाँवों की हालत में ....
(3) पर्यावरण में ....
(4) स्कूल में ....
(5) दैनिक जीवन में ....

उपर्युक्त विषयों के संबंध में हुए परिवर्तन को अपने शब्दों में लिखिए।

प्रशंसा

अपनी मनपसंद कहानियों की किताब के बारे में लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

था, है, होगा

I. असीमोव की कहानी 2155 यानि भविष्य में आने वाले समय के बारे में है। फिर भी कहानी में 'थे' का इस्तेमाल हुआ है जो बीते समय के बारे में बताता है । ऐसा क्यों है?

II. (1) 'मैं' जब छोटा था ....इस शीर्षक से जुड़े किसी अनुभव का वर्णन कीजिए।

(2) अपने स्वभाव, अच्छाइयों, कमियों,पसंद-नापसंद के बारे में लिखिए।

(3) अगली छुट्टियों में आपको नानी के पास जाना है। वहाँ आप क्या-क्या करेंगे, कैसे वक़्त बितायेंगे - इस पर एक अनुच्छेद लिखिए।

आपने जो तीन अनुच्छेद लिखे हैं, उनमें से पहले का संबंध उससे है जो बीत चुका है।

दूसरे में अभी की बात है।

तीसरे में बाद में घटने वाली घटनाओं का वर्णन है।

इन अनुच्छेदों में इस्तेमाल की गयी क्रियाओं को ध्यान से देखिए। ये **बीते हुए**, **अभी के** और **बाद के** समय के बारे में बताती हैं।

परियोजना कार्य

नीचे कुछ वस्तुओं के नाम दिये गये हैं। बड़ों से पूछकर पता कीजिए कि बीस साल पहले इनकी क्या कीमत थी और अब इनका कितना दाम है ?

वस्तु का नाम	बीस साल पहले	अब
1. आलू	....	....
2. केला	....	....
3. शक्कर	....	....
4. दाल	....	....

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटी कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - I

3. राख की रस्सी

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. यह किस प्रदेश का लोक नृत्य है?
3. अपने प्रदेश के कुछ लोक नृत्यों के नाम बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

लोनपो गार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गांपो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से ज़िंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। लोनपो गार ने सोचा, ''मेरा बेटा बहुत सीधा-सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!''एक दिन लोनपो गार ने अपने बेटे को सौ भेड़ देते हुए कहा, ''तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ जौ के बोरों के साथ। वरना मैं तुम्हें घर में नहीं घुसने दूँगा।'' इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपो गार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपए ही कहाँ थे? वह समस्या पर सोचने-विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आ खड़ी हुई।

''क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो?'' लोनपो गार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। ''इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल देती हूँ।'' इतना कहकर लड़की

SCERT TELANGANA

ने भेड़ों के बाल उतारे और उन्हें बाज़ार में बेच दिया। जो रुपये मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीद कर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपो गार के बेटे को लगा कि उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आपबीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, ''पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर आओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे लेकर ही लौटना।''

एक बार फिर निराश लोनपो गार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्यों उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह सुनाई, ''अब तो बिना जौ के सौ बोरों के मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।'' लड़की सोचकर बोली, ''एक तरीक़ा है।'' उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपए मिले उनसे सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपो गार के बेटे को सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपो गार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर लोनपो गार बोले, ''उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दें।'' उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, ''मैं रस्सी बना तो दूँगी, मगर तुम्हारे पिता को वह गले में पहननी होगी।'' लोनपो गार ने सोचा ऐसी रस्सी बनाना ही

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

असंभव है। इसलिए लड़की की शर्त मंज़ूर कर ली। अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर से सिल पर रखा और जला दिया। रस्सी जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपो गार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा। लोनपो गार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी। लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। बिना वक़्त गँवाए लोनपो गार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गई।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. तिब्बत के मंत्री अपने बेटे के भोलेपन से चिंतित रहते थे? आप तिब्बत के मंत्री होते तो क्या उपाय करते?
2. 'होशियार' और 'चालाक' में क्या अंतर होता है? किस आधार पर किसी को आप होशियार या चालाक कह सकते हैं?
3. कुछ ऐसे व्यक्तियों के बारे में बताइए जो इतिहास में अपनी चतुराई और हाज़िरजवाबी के लिए प्रसिद्ध हैं?

पढ़िए

I. नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। पाठ के आधार पर इन्हें सही क्रम (1,2,....5) दीजिए।

1. उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। (   )
2. होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। (   )
3. मैं इसका हल निकाल देती हूँ। (   )

II. पाठ में से दो प्रश्नवाचक वाक्यों को चुनकर लिखिए।

III. पाठ पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तिब्बत के मंत्री किसलिए प्रसिद्‌ध थे?
2. तिब्बत के मंत्री ने अपने बेटे के सामने कौन-सी तीन शर्तें रखीं?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया। उसने अपने बेटे को शहर ही क्यों भेजा?
2. मंत्री ने अपने बेटे से कहा ''पिछली बार भेड़ों के बाल उतार कर बेचना मुझे जरा भी पसंद नहीं आया'' क्या मंत्री को सचमुच यह बात पसंद नहीं आयी थी? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।
3. जिन लोगों ने भेड़ों के बाल और सींग खरीदे होंगे,उन्होंने उनका क्या किया होगा?
4. मंत्री ने लड़की से नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर देने के लिए ही क्यों कहा होगा?

शब्द भंडार

1. 'जौ' एक तरह का अनाज है, जिसका कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी रोटी बनाई जाती है, सत्तू बनाया जाता है और सूखा भूनकर भी खाया जाता है। अपने घर में और स्कूल में बातचीत करके कुछ और अनाजों के नाम पता कीजिए और लिखिए।

   उदाः गेहूँ

2. इस पाठ का शीर्षक राख की रस्सी है। रस्सी को किन-किन चीज़ों से बनाया जा सकता हैं? बताइए और लिखिए कि उन रस्सियों का उपयोग किन कामों में किया जा सकता है।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- 'सूझबूझ' या 'चतुराई' से संबंधित एक छोटी सी कहानी लिखिए।

प्रशंसा

आपके मित्र ने 'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अपने मित्र की प्रशंसा में पाँच वाक्य लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. 'गेहूँ' और 'जौ' 'अनाज' होते हैं। ये तीनों शब्द संज्ञा हैं। 'गेहूँ' और 'जौ' अलग किस्म के 'अनाज' हैं। इसलिए ये दोनों व्यक्तिवाचक संज्ञा है और अनाज 'जातिवाचक' संज्ञा है। इसी प्रकार 'मुसकान' व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'पाठ्यपुस्तक' जातिवाचक संज्ञा है। नीचे दी गई संज्ञाओं का वर्गीकरण इन दो प्रकार की संज्ञाओं में कीजिए और लिखिए।

राज्य	धातु	शेरवानी	फल
ताँबा	तेलंगाणा	कपड़ा	केला

ऊपर लिखी हर जातिवाचक संज्ञा के लिए तीन व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ लिखिए।

2. <u>क्या</u> बात है, तुम इतने दुखी क्यों हो ?

आप <u>कहाँ</u> जा रहे हैं ?

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। **क्या, कहाँ** इन शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त और भी ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है। **जैसे-कब, कैसे, किन, किधर, कितना** आदि। अब आप इन शब्दों का उपयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।

परियोजना कार्य

विभिन्न प्रदेशों से संबंधित लोक कथाएँ पढ़िए और किसी एक लोक कथा को अपनी कॉपी में लिखिए ।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर लोक कथा लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-II

4. पानी रे पानी

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. टैंकर के पास भीड़ क्यों लगी है?
3. आज भी पीने का पानी सब के लिए उपलब्ध नहीं है। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ़ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू मैं-मैं भी होने लगती हैं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाईप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो

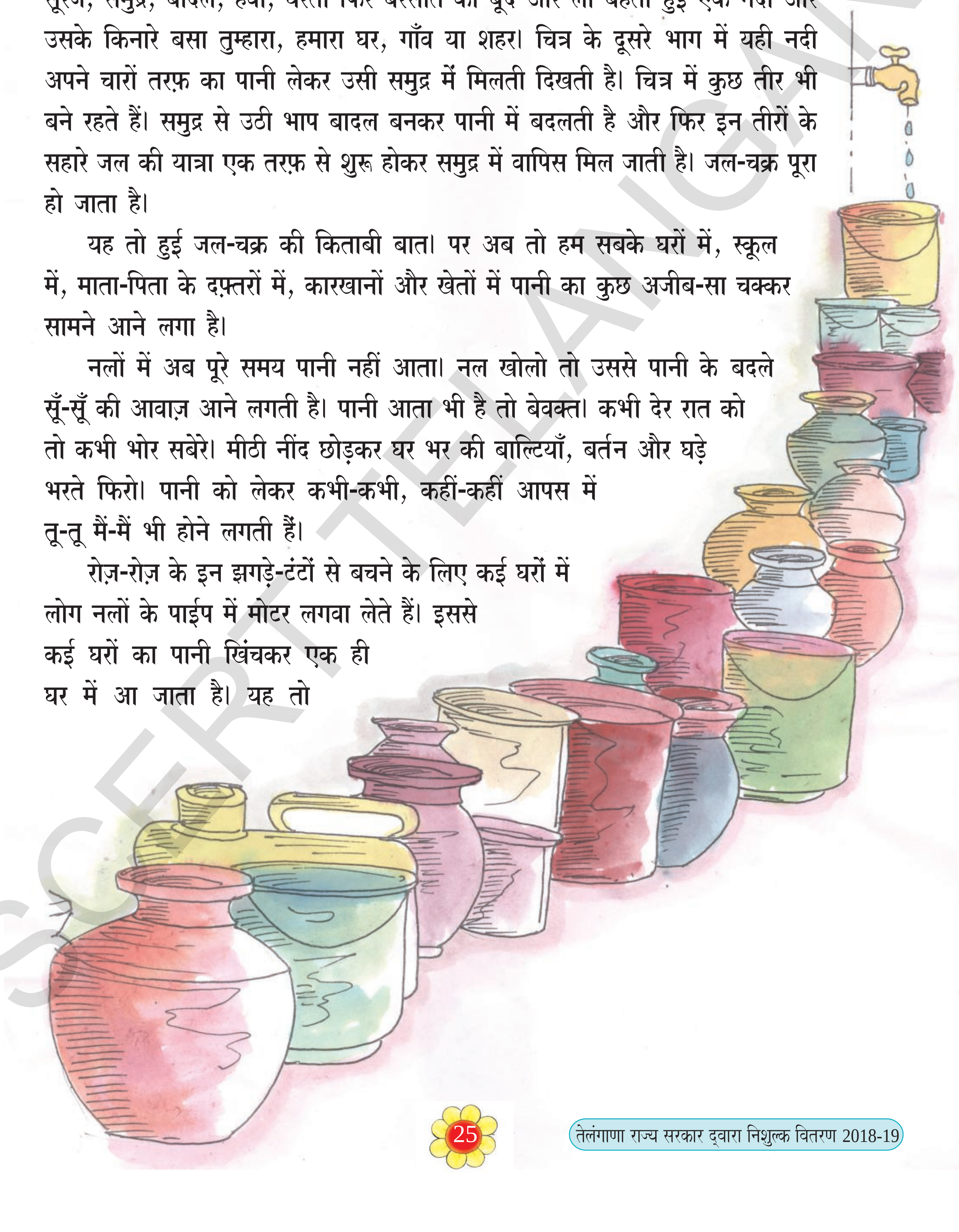

SCERT TELANGANA

अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

SCERT TELANGANA

एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्‌टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुनी कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खज़ाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खज़ाने से ही बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में,खेतों में,पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाट कर, भर कर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी। जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें जरूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

अनुपम मिश्र

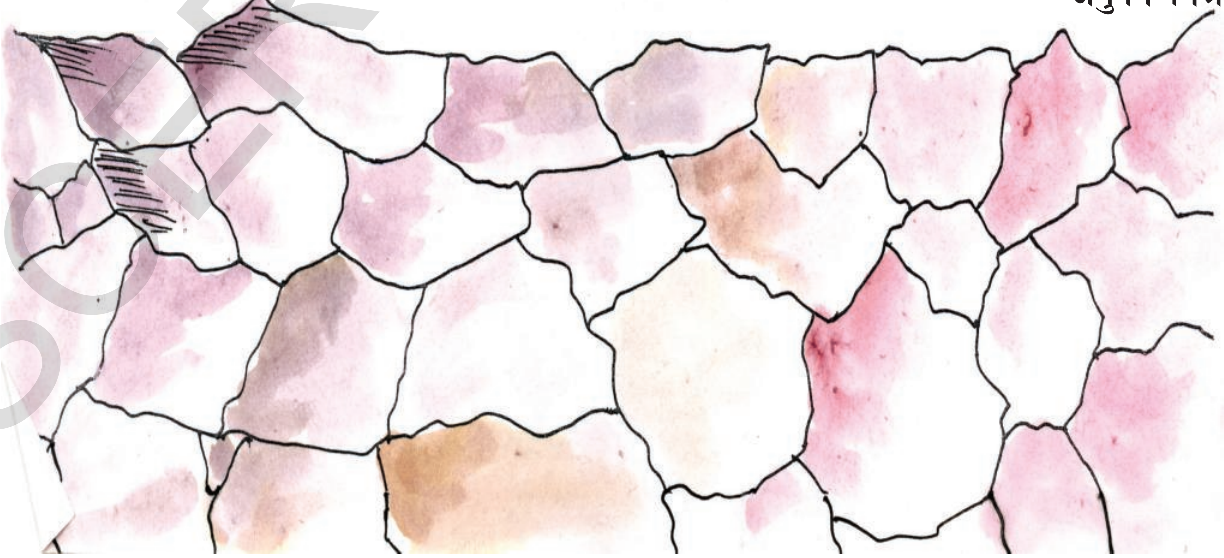

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. आपके घर में पानी कहाँ से आता है? घर का मैला पानी बहकर कहाँ जाता है?
2. पानी की फ़िजूलखर्ची से क्या मतलब है? इससे क्या होता है?
3. क्या आपको या आपके मोहल्ले वालों को रोजमर्रा की ज़रूरतें पूरी करने के लिए पानी खरीदना पड़ता है? कितने लीटर पानी खरीदा जाता है? इस पर कितना खर्च होता है?

पढ़िए

I. (1) पाठ में आए हुए युग्म शब्दों को रेखांकित कर लिखिए।
जैसे- छोटे-बड़े
(2) पाठ में आए कुछ पानी के स्रोतों को छाँटकर लिखिए।

II. निम्नलिखित वाक्यों को पाठ के आधार पर क्रम में लिखिए।
(1) पानी की कमी और बढ़ जाती है। ( )
(2) इस बड़ी गलती की सज़ा अब हमको मिल रही है। ( )
(3) भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बतायी जाती है। ( )
(4) अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ( )
(5) देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। ( )

III. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(1) जल-चक्र का क्रम बताइए।
(2) धरती की गुल्लक किन-किन साधनों से भरती है?
(3) पानी आता भी है तो बेवक्त। ऐसा होने से क्या परेशानियाँ होती हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

लिखिए

1. ''अपने घर के नल के पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है।'' लेखक ऐसा क्यों मानते हैं? सोचकर लिखिए।
2. बरसात में आयी बाढ़ के बारे में लिखिए।

SCERT TELANGANA

3. ''जमीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाट कर, भर कर समतल बना दिया।'' इससे हमें किन संकटों का सामना करना पड़ रहा है?

शब्द भंडार

1. पानी कहाँ-कहाँ से प्राप्त होता है? कुछ पानी से स्रोतों के नाम लिखिए। (पाठ के अतिरिक्त)

   जैसे- कुआँ ,................, ..., ...,

2. कुछ प्राणी पानी में ही रहते हैं। कुछ पानी पीकर जीवित रहते हैं। इनके नाम दी गई तालिका में लिखिए।

पानी में रहने वाले प्राणी	**पानी पीकर जीवित रहने वाले प्राणी**
1. मछली	1. बंदर
2.	2. ....
3.	3. ....
4.	4. ....
5.	5. ....

3. नदी के <u>तीर</u> पर नारियल के पेड़ थे।

   शिकारी ने <u>तीर</u> से पक्षी को मार गिराया।

   पहले वाक्य में 'तीर' शब्द का अर्थ है - 'किनारा' दूसरे वाक्य में 'तीर' शब्द का अर्थ है - 'बाण'। इसी तरह अब आप नीचे दिये गये शब्दों के दो अलग-अलग अर्थ बताइए।

   1. अंबर   ....
   2. उत्तर   ....
   3. घट   ....

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपकी पाठशाला में, मुहल्ले में पानी की फ़िज़ूलखर्ची रोकने के लिए पानी के स्रोतों के पास लगाने के लिए पोस्टर तैयार कीजिए और उस पर सूचनाएँ लिखिए।

प्रशंसा

अपने देश में सरकार द्वारा पानी संग्रह करने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। सरकार के इन प्रयासों के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(अ) जिस प्रकार पानी अपने जीवन में महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार मुहावरों की दुनिया में भी उसकी खास जगह है। पानी से संबंधित निम्नलिखित मुहावरे पढ़िए और उनके अर्थ लिखिए।

1. पानी पानी होना
2. मुँह में पानी आना
3. दूध का दूध पानी का पानी
4. पानी फिर जाना
5. घड़ों पानी पड़ना

(आ) ऊपर दिये गए मुहावरों में से किन्हीं दो का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

अपने प्रदेश के विभिन्न जलाशयों के चित्र इकट्ठे कीजिए। इन चित्रों को चार्ट पर चिपकाइए। उनके नाम लिखिए और बताइए कि वे कहाँ पर स्थित हैं?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (√)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-II

5. बढ़े चलो, बढ़े चलो

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. यह ''कारगिल युद्ध की विजय'' का चित्र है। चित्र में सैनिक खुश क्यों दिखाई दे रहे हैं?
3. विजय प्राप्त करते समय उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह कविता पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

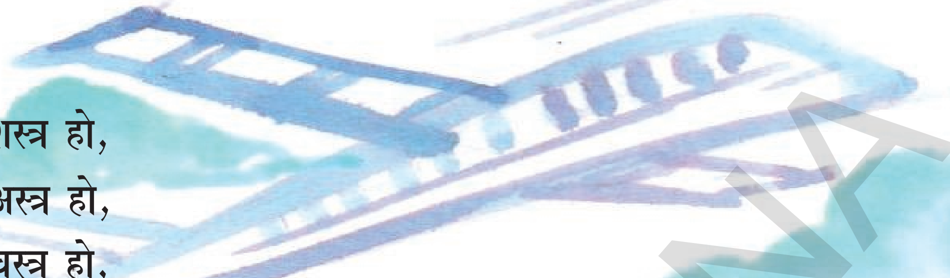

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

घटा घिरी अटूट हो,
अधर पै कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो,
जिये चलो,
मरे चलो।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो।

SCERT TELANGANA

अड़ो वहीं ,
गड़ो वहीं।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।
चलो, नयी मिसाल हो,
जलो, नयी मशाल हो,
बढ़ो, नया कमाल हो,
झुको नहीं,
रुको नहीं।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।
अशेष रक्त तोल दो,
स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं,
मरो वहीं ।
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. कोई भी एक देशभक्ति गीत सुनाइए।
2. अपने देश के कुछ महान नेताओं के नाम बताइए जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण त्याग दिये।
3. क्या आपने कभी किसी खतरे का सामना किया है? कैसे ? बताइए।
4. अपने देश की सेवा आप किस प्रकार कर सकते हैं? बताइए।

पढ़िए

I. नीचे दिये गये भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ चुनकर लिखिए -

(1) चाहे हमारे हाथ में अस्त्र-शस्त्र न हो।

....

....

(2) विष को भी अमृत समझ कर पी लें।

....

....

(इ) सभी के सामने एक उदाहरण रखकर नई मशाल जलाओ।

....

....

2. उचित शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

(अ) दूसरों के लिए ....बनो। (मशाल / मिसाल)

(आ) युगों के बंधन ....दो। (खोल / तोल)

(इ) अपने खून का ....हो। (आग / फाग)

(ई) चाहे ....जाये बिखर। (तन / मन)

3. कविता में कुछ ध्वनि साम्य शब्द आए हैं। दिए गए उदाहरण के अनुसार ध्वनि साम्य शब्द चुनकर लिखिए -

SCERT TELANGANA

(अ) शिखर -निखर

(आ) अटूट -

(इ) निखर -

(ई) अस्त्र -

(उ) अड़ो -

(ऊ) मिसाल -

(ए) मोल -

(ऐ) तोल -

4. कविता ध्यान से पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(अ) देश को संकट से बचाने के लिए कवि क्या करने और क्या नहीं करने के लिए कह रहे हैं?

(आ) इस कविता में अपने प्रण को पूरा करने के लिए कवि किसका त्याग करने की बात कह रहे हैं?

(इ) कवि ने कविता में किन-किन संकटों के बारे में कहा है?

लिखिए

1. हमें देश की स्वतंत्रता बनाये रखने के लिए क्या-क्या करना चाहिए?
2. हमें किस प्रकार दूसरों के लिए मिसाल बनना है? क्यों?
3. हमें किस रास्ते पर आगे बढ़ना चाहिए? क्यों?
4. जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहने से क्या लाभ होते हैं?

शब्द भंडार

1. नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द वर्ग पहेली से चुनकर लिखिए।

आ	का	श	सो	म	अ	र	त
स	या	री	स	खू	न	पा	नी
मा	क	र	क्त	ज	ल	ल	च
न	क	प	ल	स	अ	मृ	त

SCERT TELANGANA

1. तन - काया, शरीर

2. सुधा - ....

3. गगन - ....

4. लहू - ....

5. नीर - ....

2. नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्द गोले में से चुनकर लिखिए -

अ. गगन = ...

आ. प्रण = ...

इ. आग = ...

ई. हिम = ...

उ. नीर = ...

ऊ. अधर = ...

ए. कालकूट = ...

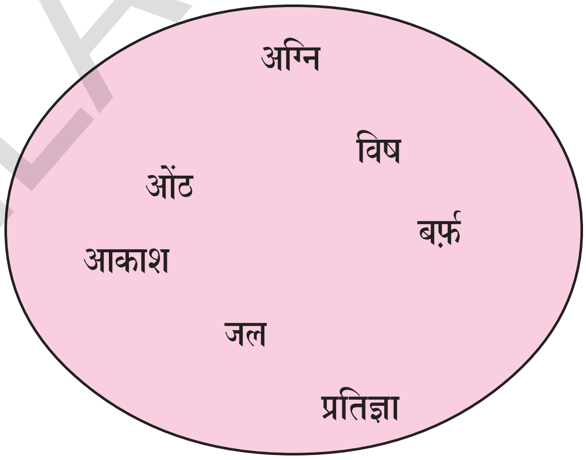

3. 'शेष' शब्द में 'अ' जोड़ने से वह उसका विलोम बन गया।

अ + शेष = अशेष शेष **x** अशेष

इसी प्रकार निम्न शब्दों में 'अ' जोड़कर विलोम शब्द बनाइए।

.... + सफल = ... **x** ....

.... + ज्ञान = ... **x** ....

.... + साधारण = ... **x** ....

ऐसे ही कुछ और शब्द बनाइए -

SCERT TELANGANA

.... + ... = ... x ....

.... + ... = ... x ....

.... + ... = ... x ....

.... + ... = ... x ....

.... + ... = ... x ....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर स्वतंत्रता दिवस पर एक निबंध लिखिए।

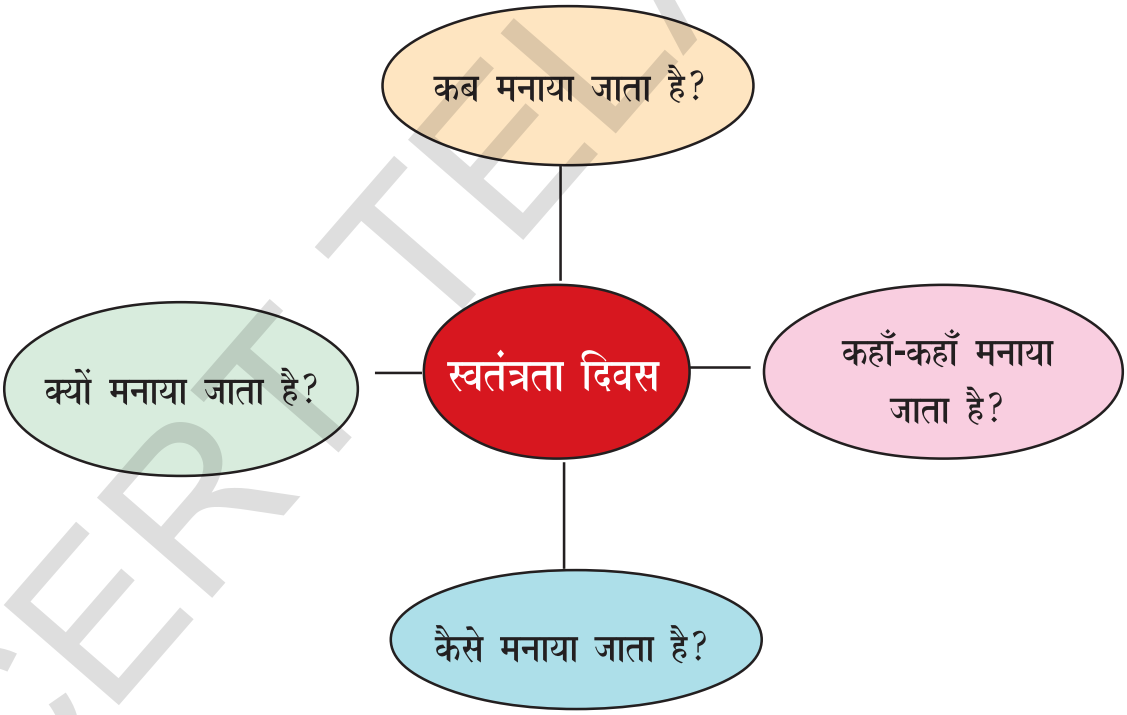

प्रशंसा

लोग तरह-तरह से देश सेवा करते हैं। कोई सैनिक बनकर, कोई इंजीनियर बनकर, तो कोई वैज्ञानिक। आप देश-सेवा किस प्रकार करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. मैं हर दिन पाठशाला जाता हूँ।

(अ) 'मैं' की जगह तुम,आप, वह, वे, शब्द लिखकर वाक्य लिखिए-

तुम ....

आप ....

वह ....

वे...

II. रमेश ने कहा <u>मेरी</u> पुस्तक खो गई है।

राजेश, क्या तुम <u>मुझे</u> पुस्तक ढूँढ़ कर दोगे?

इन वाक्यों में मेरी, मुझे शब्द 'रमेश' के लिए आए हैं। आपको पता ही है कि 'मेरी' और 'मुझे' सर्वनाम शब्द हैं। अब आप निम्न वाक्यों के रिक्त स्थानों को सही सर्वनाम शब्दों से पूरा कीजिए :

(अ) रामू अच्छा लड़का है, लेकिन ....भाई आलसी है।

(आ) सविता ने कहा ....पुस्तक चाहिए।

(इ) अफज़ल कल दिल्ली जा रहा है, इसीलिए ....

कल पाठशाला नहीं आ पाएगा।

परियोजना कार्य

देशभक्ति से संबंधित अन्य कविताएँ पढ़िए। किसी एक कविता को सुंदर अक्षरों में चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता लय के साथ सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से तुकबंद शब्द लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-II

6. चावल की रोटियाँ

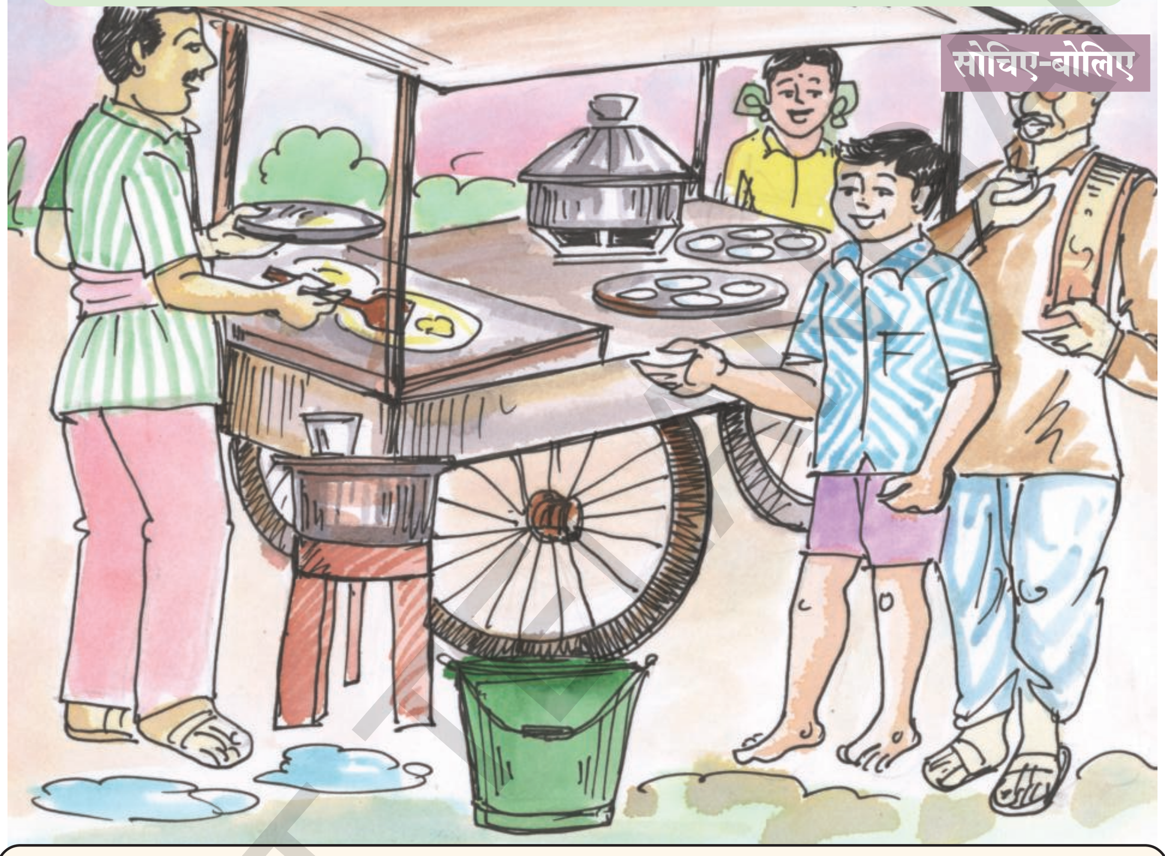

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. ठेले वाला क्या बना रहा होगा?
3. इस चित्र को देखकर आप के मन में क्या विचार उठ रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

पात्र परिचय

कोको	:	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा
नीनी	:	नौ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
तिन सू	:	आठ साल का बर्मी लड़का, कोको का दोस्त
मिमि	:	सात साल की बर्मी लड़की, कोको की दोस्त
उ बा तुन	:	जनता की दुकान का प्रबंधक (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ । एक दीवार के सहारे रखी अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। कोको आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)

कोको : माता-पिता धान लगाने खेतों में चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौट कर नहीं आती। मुझे घर की देखभाल करनी है। हूँ........ऊँ...............ऊँ.....देखता हूँ माँ ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बना कर रखा है।

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकाल कर देखता है कि चावल की चार रोटियाँ हैं । वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

कोको : आहा....मज़ा आ गया। चावल की रोटियाँ। मेरी मनपसंद चीज़।

(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)

कोको : आज डट कर नाश्ता होगा ।

(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)

नीनी : कोको...ए कोको दरवाज़ा खोलो । मैं हूँ नीनी।

SCERT TELANGANA

कोको : गज़ब हो गया । यह तो भुक्खड़ नीनी है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ी तो ज़रूर माँगेगा।मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

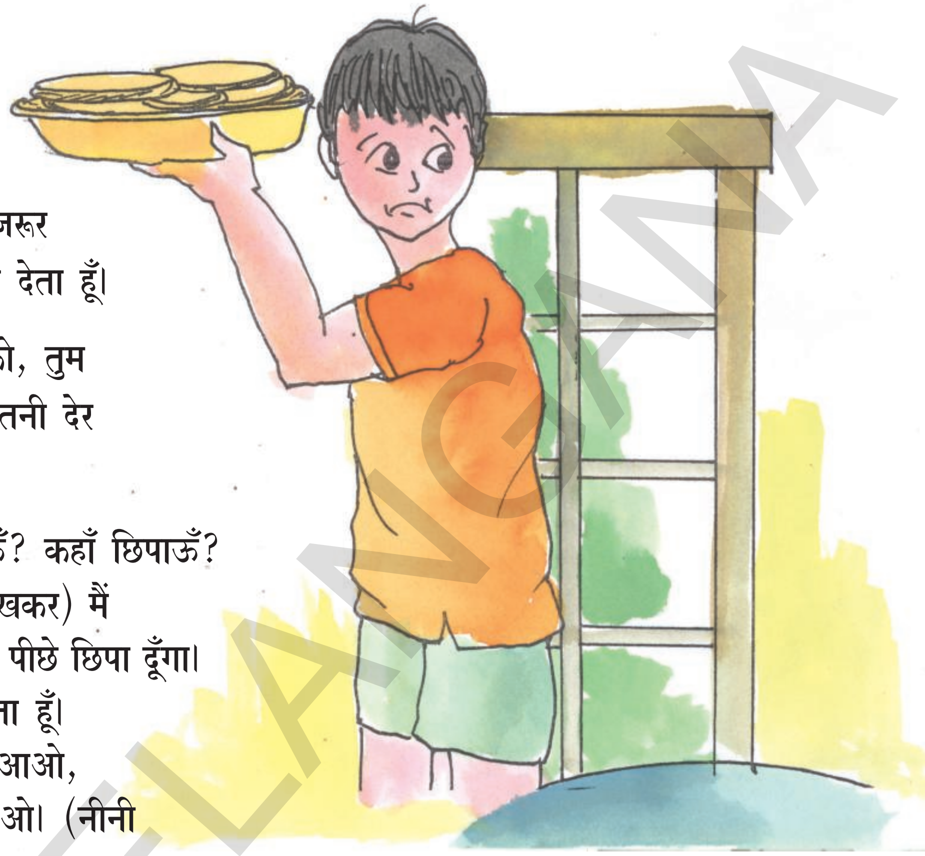

नीनी : दरवाज़ा खोलो कोको, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।

कोको : मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (रेडियो की तरफ़ देखकर) मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। (ज़ोर से) अभी आता हूँ। नीनी...ज़रा रुको। आओ, नीनी। अंदर आ जाओ। (नीनी अंदर आती है।)

नीनी : दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

कोको : कुछ खास नहीं.......मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था ।बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

नीनी : क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

कोको : लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

नीनी : वह खराब है । इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा। (नीनी गोल मेज़ के पास बैठ जाता है)

नीनी : रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

कोको : नीनी, हमारे रेडियों में भी कुछ खराबी है।

नीनी : आओ, कोशिश करके देखें । मैं उठाकर ले आता हूँ । (नीनी अलमारी की तरफ जाने लगता है)

कोको : नहीं,नहीं। नीनी, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा। (नीनी रुक जाता है)

SCERT TELANGANA

नीनी : मैंने तो इसे छू लिया था। भई, मैं खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे?

कोको : नहीं। अच्छा फिर मिलेंगे।

(नीनी तेज़ी से बाहर निकल जाता है)

कोको : (गहरी सांस लेकर) बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(कोको तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।)

कोको : (तश्तरी नीचे देखकर) जाने अब कौन आ टपका।

मिमि : कोको, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मिमि।

कोको : बाप रे। यह तो मिमि है। उसे चावल की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

मिमि : (फिर दरवाज़ा खटखटाकर) कोको, दरवाज़ा खोलो न...इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

कोको : कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (कमरे के चारों तरफ़ देखकर ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूँ?)

(कोको फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। मिमि कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है)

SCERT TELANGANA

मिमि : दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी?

कोको : मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुँह धोने लगा था। आओ बैठो। (कोको और मिमि मेज़ के इर्द-गिर्द बैठते हैं।)

मिमि : मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

कोको : चावल की रोटियाँ? हाँ थीं तो । लेकिन मैंने सब खा लीं ।

मिमि : एक भी नहीं बची?

कोको : सॉरी मिमि, मैंने सब खा लीं। (हाथ से पेट मलते हुए) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

मिमि : बहुत बुरी बात। मेरी माँ ने केले के पापड़ बनाए थे । मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँट कर खाऊँगी । मैं चार पापड़ लाई हूँ । दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए । सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा । (मिमि कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज़ पर रखती है)

मिमि : गरमागरम है और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिल्कुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते ।

कोको : (पापड़ देखकर होंठो पर जीभ फेरकर, स्वगत) मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि चारों पापड़ वह खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ दे।

मिमि : (एक पापड़ उठाकर) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है ?

कोको : हाँ, हाँ, अलमारी पर है । मैं ले आता हूँ। (कोको चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। मिमि एक कप में चाय डालती है।)

मिमि : तुम तो चाय पिआगे नहीं। पेट भरा होगा।

कोको : (स्वगत) मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मिमि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मिमि : (पापड़ खाते हुए) यह कैसी आवाज़ है?

कोको : आवाज़? कैसी आवाज़?

मिमि : हल्की-सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?

SCERT TELANGANA

कोको : यह...? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है।

(दरवाज़े पर दस्तक)

कोको : कौन?

तिन सूः मैं हूँ तिन सू।

(कोको उठने लगता है।)

मिमि : तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।

(मिमि दरवाज़ा खोलती है। तिन सू गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।)

तिनसू : आहा! मिमि भी यहाँ है।

मिमि : आओ तिन सू।

तिनसू : (मेज़ के पास जाकर) हैलो कोको। क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

कोको : हैलो तिन सू।

(मिमि और तिन सू मेज़ के पास बैठते हैं।)

मिमि : (तिन सू से) वह ठीक हैं। बस, नाश्ते में चावल की रोटियाँ खा ली हैं।

तिन सूः (केले के पापड़ों की तरफ़ देखकर) आहा, केले के पापड़!

मिमि : मैं कोको के लिए भी लायी थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सूः नेकी और पूछ-पूछ। तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है। तिन सू (एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मिमि उसके लिए कप में चाय डालती है।)

मिमि : (कप देकर) यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सूः (चाय की चुस्की लेकर होठों पर जीभ फिराकर) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।

कोको : (स्वगत) तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(मिमि और तिन सू एक-एक पापड़ खा लेते हैं और मिमि दूसरा उठाती है।)

मिमि : यह लो तिन सू। एक और खाओ।

तिन सूः नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।

SCERT TELANGANA

मिमि : आधा तो ले लो। दूसरा आधा मैं खा लूँगी। एक कोको के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

तिन सू: तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।

कोको : (स्वगत) चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं । मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।

तिन सू: यह आवाज़ कैसी है?

मिमि : यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। कोको कहता है, वही यह आवाज़ करता है।

तिन सू: ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।

(तिन सू और मिमि पापड़ खत्म करते हैं।)

मिमि : अच्छा, ये फूल कैसे हैं?

तिन सू: ओह, मैं तो भूल गया था। मेरी माँ ने कहा है कि कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (इधर-उधर देखता है। उसे अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है) वह रहा फूलदान, अलमारी पर।

मिमि : मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूँ।

कोको : नहीं, नहीं मिमि।

मिमि : तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

कोको : ये फूल.....ये फूल । मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती हैं उनके जिस्म में फुंसियाँ निकल आती हैं।

तिन सू: ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था । खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

कोको : (चैन की साँस लेकर, स्वगत) मुझे रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे। (दरवाज़े पर दस्तक)

कोको : कौन?

उ बा तुन: मैं हूँ। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

(कोको से) तुम मत उठो कोको। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा।

(ज़ोर से) अभी आई उ बा तुन चाचा।

(उ बा तुन नीला फूलदान लिए आता है)

उ बा तुन: हैलो बच्चो (मेज़ की तरफ़ देखकर) लगता है छोटी-मोटी पार्टी चल रही है।

मिमि : आओ चाचा, आओ।

(उ बा तुन मेज़ के पास बैठ जाता है)

SCERT TELANGANA

मिमि : चाय लेंगे आप?

उ बा तुनः कोई एतराज़ नहीं । बहुत-बहुत शुक्रिया।
(मिमि अलमारी की तरफ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।)

उ बा तुनः (कप से चुस्की लेकर) क्या मज़ेदार चाय है। खुशबूदार ताज़गी लाने वाली ।

तिन सू : चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है?

उ बा तुनः अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुककर कर लूँगा।

मिमि : चाय की दुकान पर जाने की क्या ज़रूरत? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुनः लेकिन...मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू : कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गए हैं।
(उँगली से पेट को छूता है)

उ बा तुनः बहुत-बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज़ कैसी है?

तिन सू : यह चूहे की आवाज़ है। अक्सर यह आवाज़ करता है।

उ बा तुनः मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है।
(उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।)

उ बा तुनः कोको, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

कोको : कुछ नहीं चाचा। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मिमि : उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डट कर किया है।
(उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुँह पोंछता है।)

उ बा तुनः कोको, तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थीं (इधर- उधर देखकर) हाँ, वह रहा।

कोको : क्यों? फूलदान का क्या करना है?

SCERT TELANGANA

उ बा तुनः तुम्हारी माँ ने नीला फूलदान माँगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आई। उनके जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।

उ बा तुन : (कोको से) मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ नीला फूलदान देखेंगी तो बहुत खुश होंगी। अब मैं चलूँगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मिमि-तिन सू : गुडबाई चाचा।

कोको : गुडबाई चाचा (स्वगत) और गुडबाई मेरी चावल की रोटियों।

पी. औंग खिन

अनुवाद-मस्तराम कपूर

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. कहते हैं - एक झूठ बोलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं? क्या आपको नाटक पढ़कर ऐसा लगता है, क्यों?
2. क्या कभी आपने कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई या छिपाने की कोशिश की है? उस समय क्या हुआ था? अपने शब्दों में बताइए।
3. कभी आपको भी खाली पेट रहना पड़ा होगा। उस समय का अपना अनुभव बताइए।

पढ़िए

I. नीचे दिये गये शब्दों पर ध्यान दीजिए और पाठ में से ऐसे अन्य शब्द चुनकर लिखिए।

उदाहरण : चीज़, तरफ़

....

II. पाठ पढ़कर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. कहीं प्रार्थना की घंटियाँ ....हैं।
2. मुझे घर की देखभाल ....है।
3. रेडियो पर खास सूचना..........................है।
4. दरवाज़े पर दस्तक...............................है।
5. वही यह आवाज़ ....है।

III. वाक्य पढ़िए और बताइए कि, किसने- किसे कहा?

1. "हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।"
2. मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले।
3. हाँ, हाँ अलमारी पर है । मैं ले आता हूँ।
4. यह लो, चाय के साथ खाओ ।

SCERT TELANGANA

IV. पाठ पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. जिन पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं उन्हें 'मुख्य पात्र' और जिनकी भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती है उन्हें 'गौण पात्र' कहते हैं। इस नाटक के मुख्य और गौण पात्रों के नाम लिखिए।
2. नीनी कोको के घर क्यों आता है? कोको क्या बहाना बनाता है?
3. मिमि ने केले के पापड़ और चावल की रोटियों के लिए क्या सोचा था?
4. अंत में चावल की रोटियों का क्या होता है ?

लिखिए

1. पाठ में कोको और मिमि अपने व्यंजनों के बारे में सोच रहे थे कि वे बहुत स्वादिष्ट हैं । जब आपकी माँ आपका मनपसंद व्यंजन बनाकर आपके टिफिन में देती है तो उस समय आप क्या सोचते हैं ?
2. आपके माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद आपके मन में कैसे विचार आते हैं ?
3. यदि आप कोको के स्थान पर होते तो क्या करते?

शब्द भंडार

''कोको के माता-पिता धान लगाने के लिए खेतों में गए।'' ''कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाई।'' एक ही चीज के विभिन्न रूपों के अलग-अलग नाम हो सकते हैं। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिये गये हैं। उनमें से सही शब्द चुनकर तालिका में लिखिए।

चावल- आटा - धुली दाल - भात - गेहूँ - सूजी - धान

साबुत दाल - मुरमुरा - मैदा - चिउड़ा - छिलका दाल

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

धान	दाल	गेहूँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

II . दीवार पर बाँस की चटाइयाँ टंगी थी । बाँस से चटाई के अतिरिक्त और क्या-क्या चीजें बनायी जाती हैं। लिखिए।

....

III . 'रोटियाँ' जिन चीज़ों से बनाई जा सकती हैं, उनके नाम वर्ग पहेली में से ढूँढ़कर लिखिए । उदा. जवार

म	स	ल	जौ	....
क	बा	ज	रा	....
ई	क	वा	गी	....
स	म	र	प	....
गे	हूँ	ज	जा	....

- ''मुझे जल्दी घर जाना है, मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

पेट में 'चूहे दौड़ना' इस मुहावरे का अर्थ है, बहुत भूख लगना। इस प्रकार के 'पेट' से संबंधित दो मुहावरे लिखिए और उनका अर्थ बताइए।

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। जहाँ तक रोटी की बात है हमारे देश में कई लोगों के भाग्य में यह नहीं होती है। इसी रोटी के बारे में लिखी इस कविता को आगे बढ़ाइए ।

गोल-गोल रोटी
गेहूँ की रोटी, जवारी की रोटी
अम्मा ने बनाई, जौ की भी रोटी
गोल रोटी, चौकोर रोटी

....

....

....

प्रशंसा

आपकी माँ ने आपका मनपसंद व्यंजन बनाया है। अपनी माँ की पाक-कला के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(के , में, ने, को, से ....)

" कोको <u>की</u> माँ <u>ने</u> कल दुकान <u>से</u> एक फूलदान खरीदा था। "

ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखा खींची है। वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब "अनारको के आठ दिन" का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखिए।

अनारको एक लड़की है। घर ....लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है,सो उस ....हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा है। कहीं मत जा, बारिश ......भीगना मत, अन्नो। और कोई

SCERT TELANGANA

बाहर ....घर में आए तो घरवाले कहेंगे ....ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार ......हुह।

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने ......बहुत बारिश हुई । अनारको ....याद किया और उसे लगा , आज ......सपनों में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों ...... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी। आज......? सपने ....और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

परियोजना कार्य

- चावल से बनी कोई एक खाने की चीज़ बनाने की विधि पता कीजिए और उसे नीचे दिए गए बिंदुओं के हिसाब से लिखिए ।
- सामग्री
- तैयारी
- विधि

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटा नाटक लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-II

7. चुनौती हिमालय की

सोचिए-बोलिए

प्रश्न:

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र में महिला क्या करती हुई दिखायी दे रही है?
3. आपके विचार में पहाड़ पर चढ़ना कैसा काम है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ:

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, ''शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।''

''लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है। '' किशन ने कुली की बात काटी। ''बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।''

''कितनी दूर?'' जवाहरलाल ने पूछा।

''आठ मील, शाब'' कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

''बस ! तब तो ज़रूर चलेंगे।'' जवाहरलाल ने अपने चचेरे भाई की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। अब अमरनाथ जाने में क्या आपत्ति हो सकती थी? फिर जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

''कौन-कौन चलेगा हमारे साथ?'' जवाहरलाल ने जानना चाहा।

तुरंत किशन बोला, शाब मैं चलूँगा। भेड़ें चराने मेरी बेटी चली जाएगी।''

अगले दिन सुबह तड़के तैयार होकर जवाहरलाल बाहर आ गए। आकाश में रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। उदास, फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ सुबह की पहली किरणों का स्पर्श पाकर ताज की भाँति चमक उठे। दूर से छोटे-छोटे ग्लेशियर ऐसे लगते, मानो स्वागत करने के लिए पास सरकते आ रहे हों। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक को ठंडक पहुँचा रहे थे।

जवाहर ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेट कर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी। जवाहर इस चुनौती को कैसे न स्वीकार करते। भाई, किशन और कुली सभी रस्सी के साथ जुड़े थे। किशन गड़ेरिया अब गाइड बन गया।

SCERT TELANGANA

बस आठ मील ही तो पार करने हैं। जोश में आकर जवाहरलाल चढ़ाई चढ़ने लगे। यूँ आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती। लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना दूभर हो गया। एक-एक डग भरने में कठिनाई हो रही थी।

रास्ता बहुत ही वीरान था। पेड़-पौधों की हरियाली के अभाव में एक अजीब खालीपन-सा महसूस हो रहा था। कहीं एक फूल दिख जाता तो आँखों को ठंडक मिल जाती। दिख रही थीं सिर्फ़ पथरीली चट्टानें और सफ़ेद बर्फ़। फिर भी इस गहरे सन्नाटे में बहुत सुकून था। एक ओर सूँ-सूँ करती बर्फ़ीली हवा बदन को काटती तो दूसरी ओर ताज़गी और स्फूर्ति भी देती।

जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी । एक कुली की नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। खुद उन्हें भी कनपटी की नसों में तनाव महसूस हो रहा था, लगता था जैसे दिमाग में खून चढ़ आया हो। फिर भी जवाहरलाल ने आगे बढ़ने का इरादा नहीं बदला।

थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। फिसलन बढ़ गई, चलना भी कठिन हो गया। एक तरफ़ थकान, ऊपर से सीधी चढ़ाई। तभी सामने एक बर्फ़ीला मैदान नज़र आया। चारों ओर हिम शिखरों से घिरा वह मैदान देवताओं के मुकुट के समान लग रहा था। प्रकृति की कैसी मनोहर छटा थीं आँखों और मन को तरोताज़ा कर गई। बस एक झलक दिखाकर बर्फ़ के धुँधलके में ओझल हो गई।

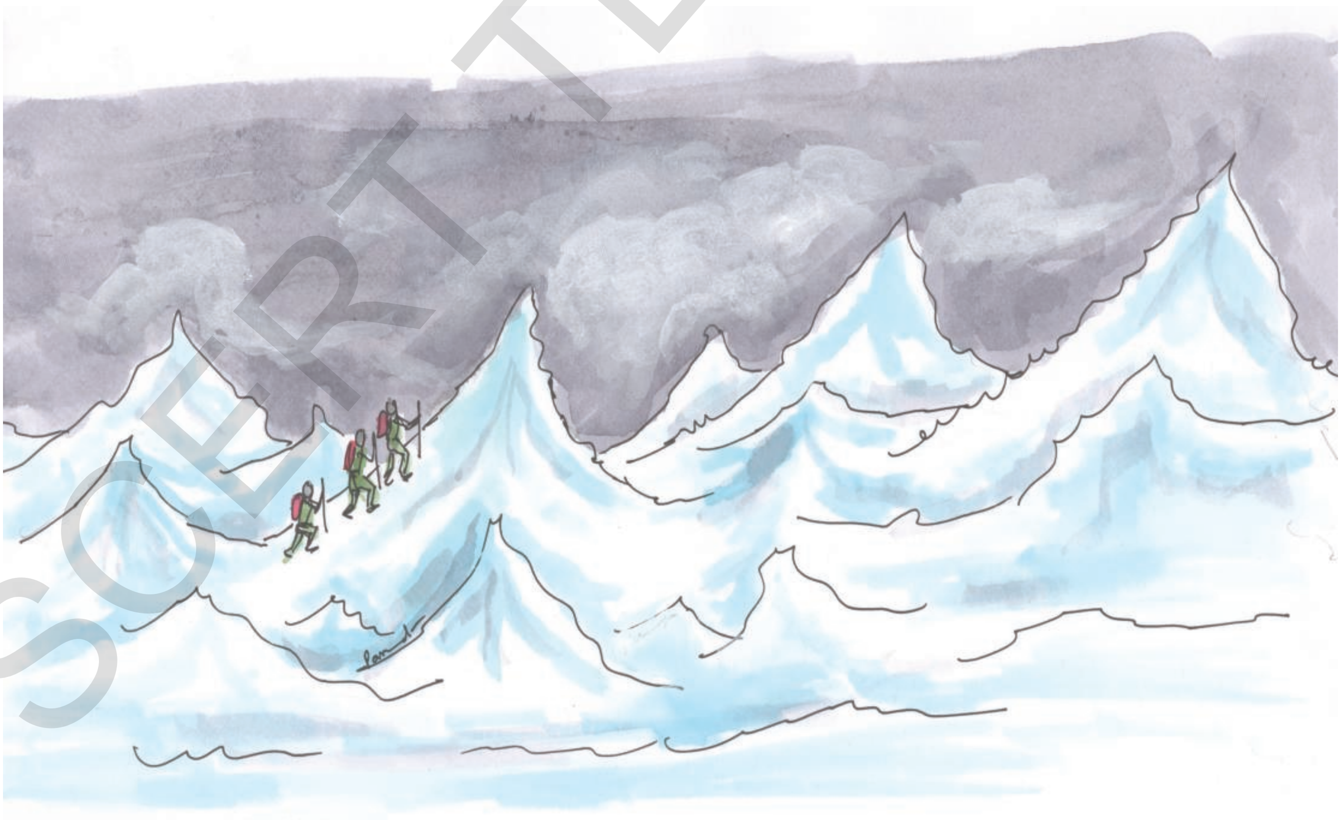

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

दिन के बारह बजने वाले थे। सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे इस वक्त...अमरनाथ से भी ऊपर। पर अमरनाथ की गुफा का दूर-दूर तक पता नहीं था । इस पर भी जवाहरलाल की चाल में न ढीलापन था, न बदन में सुस्ती। हिमालय ने चुनौती जो दी थी । निर्गम पथ पार करने का उत्साह उन्हें आगे खींच रहा था।

''शाब, लौट चलिए। वापस कैंप में पहुँचते -पहुँचते दिन ढल जाएगा,'' एक कुली ने कहा।

''लेकिन अभी तो अमरनाथ पहुँचे नहीं।'' जवाहरलाल को लौटने का विचार पसंद नहीं आया।

''वह तो दूर बर्फ़ के मैदान के पार है.'' किशन बीच में बोल पडा।

''चलो, चलो चढ़ाई तो पार कर ली, अब आधे मील का मैदान ही तो बाकी है, '' कहकर जवाहरलाल ने थके हुए कुलियों को उत्साहित किया।

सामने सपाट बर्फ़ का मैदान दिखाई दे रहा था। उसके पार दूसरी ओर से नीचे उतरकर गुफा तक पहुँचा जा सकता था। जवाहरलाल फुर्ती से बढ़ते जा रहे थे। दूर से मैदान जितना सपाट दिख रहा था। असलियत में उतना ही ऊबड़-खाबड़ था। ताज़ी बर्फ़ ने ऊँची-नीची चट्टानों को एक पतली चादर से ढक कर एक समान कर दिया था। गहरी खाइयाँ थीं, गड्ढे बर्फ़ से ढके हुए थे और गज़ब की फिसलन थी। कभी पैर फिसलता और कभी बर्फ़ में पैर अंदर धँसता जाता, धँसता जाता। बहुत नाप-नाप कर कदम रखने पड़ रहे थे। ये तो चढ़ाई से भी मुश्किल था, पर जवाहरलाल को मज़ा आ रहा था। तभी जवाहरलाल ने देखा सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी। अचानक उनका पैर फिसला। वे लड़खड़ाए और इससे पहले कि सँभल पाएँ वे खाई में गिर पड़े।

''शाब.........गिर गए !'' किशन चीखा।

''जवाहर ...''भाई की पुकार वादियों की शांति भंग कर गई। वे खाई की ओर तेज़ी से बढ़े।

रस्सी से बँधे जवाहरलाल हवा में लटक रहे थे । उफ़, कैसा झटका लगा। दोनों तरफ़ चट्टानें-ही-चट्टानें, नीचे गहरी खाई। जवाहरलाल कसकर रस्सी पकड़े थे, वही उनका एकमात्र सहारा था।
''जवाहर''...! ऊपर से भाई की पुकार सुनाई दी।
मुँह ऊपर उठाया तो भाई और किशन के धुँधले चेहरे खाई में झाँकते हुए दिखाई दिए। ''हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना,'' भाई ने हिदायत दी।

जवाहरलाल जानते थे कि फिसलन के कारण यूँ ऊपर खींच लेना आसान नहीं होगा। ''भाई, मैं चट्टान पर पैर जमा लूँ,'' वह चिल्लाए। खाई की दीवारों से उनकी आवाज़ टकराकर दूर-दूर तक गूँज गई। हल्की-सी पेंग बढ़ा जवाहरलाल ने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मजबूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई।

SCERT TELANGANA

''घबराना मत, जवाहर,'' भाई की आवाज़ सुनाई दी।

''मैं बिल्कुल ठीक हूँ,'' कहकर जवाहरलाल मज़बूती से रस्सी पकड़ एक-एक कदम ऊपर की ओर बढ़ने लगे । कभी पैर फिसलता, कभी कोई हल्का-फुल्का पत्थर पैरों के नीचे सरक जाता, तो वह मन-ही-मन काँप जाते और मज़बूती से रस्सी पकड़ लेते। रस्सी से हथेलियाँ भी जैसे कटने लगीं थी पर जवाहरलाल ने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। कुली और किशन उन्हें खींचकर बार-बार ऊपर चढ़ने में मदद कर रहे थे। धीरे-धीरे सरक कर किसी तरह जवाहरलाल ऊपर पहुँचे। मुड़कर ऊपर से नीचे देखा कि खाई इतनी गहरी थी कि कोई गिर जाए तो उसका पता भी न चले।

''शुक्र है, भगवान का!'' भाई ने गहरी साँस ली।

''शाब, चोट तो नहीं आई? एक कुली ने पूछा।

गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गए। इस हादसे से हल्का-सा झटका ज़रूर लगा फिर भी जोश ठंडा नहीं हुआ। वह अब भी आगे जाना चाहते थे।

आगे चलकर इस तरह की गहरी और चौड़ी खाइयों की तादाद बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी तो नहीं था। निराश होकर जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा। अमरनाथ पहुँचने का सपना तो पूरा ना हो सका पर हिमालय की ऊँचाइयाँ सदा जवाहरलाल को आकर्षित करती रहीं।

सुरेखा पणंदीकर

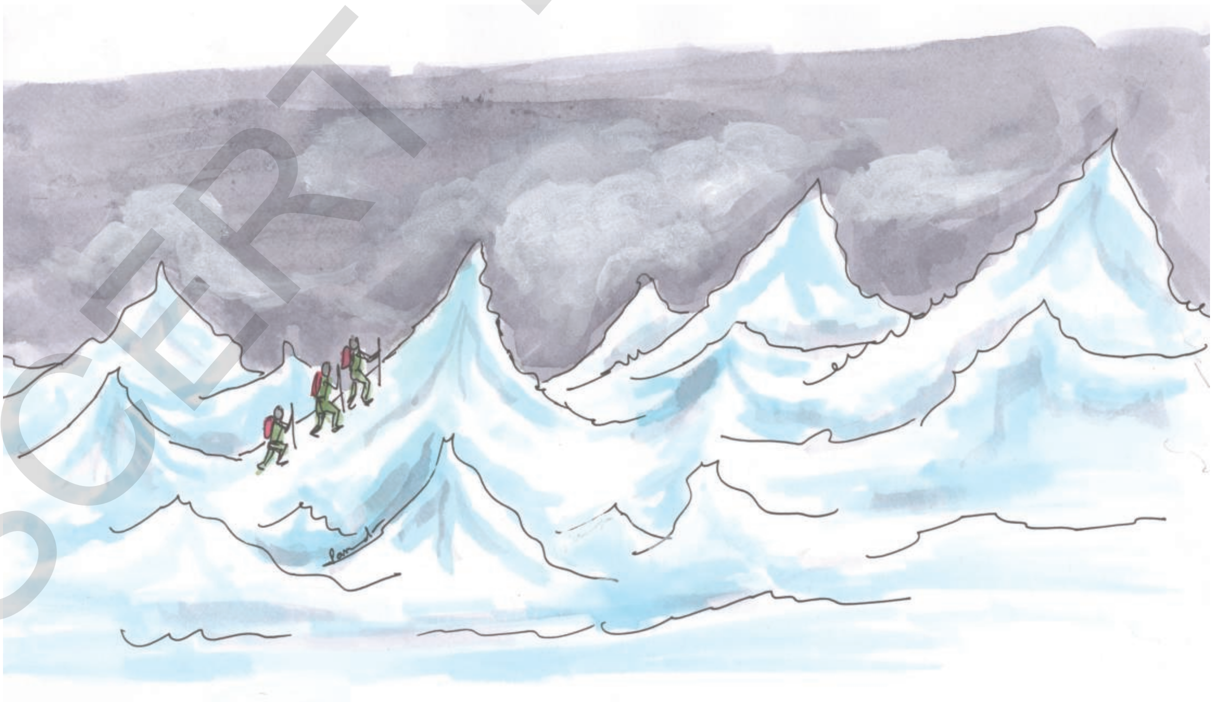

SCERT TELANGANA

लद्दाख जम्मू-कश्मीर राज्य में है। ऊपर दिये भारत के नक्शे में देखकर बताइए कि आपका घर कहाँ है व किस राज्य में है ?

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. आप जहाँ रहते हैं वहाँ से लद्दाख पहुँचने में कितने दिन लग सकते हैं और वहाँ किन-किन ज़रियों से पहुँचा जा सकता है? बताइए।
2. आपके द्वारा की गई किसी यात्रा के बारे में बताइए।
3. पर्वतों के बारे में आप अपनी या किसी और की लिखी हुई कविता सुनाइए।

पढ़िए

I. पाठ पढ़िए और लिखिए कि निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के साथ किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

1. ....चट्टानें	**5**. ....पथ
2..................बर्फ़	**6**. ....चेहरे
3. ....हवा	**7**. ....इलाका
4. ....खाई	**8**. ....पर्वतमाला

II. नीचे दिए गये वाक्यों को पाठ के आधार पर सही क्रम दीजिए।

1. गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गये। (   )

2. हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना। (   )

3. रास्ता बहुत वीरान था। (   )

4. शाब, लौट चलिए। (   )

5. थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। (   )

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

III. पाठ पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. जवाहरलाल, किशन और कुली सभी रस्सी से क्यों बँधे थे?
2. जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे । ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी । जवाहरलाल और उनके साथियों को और कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा?

IV. निम्नलिखित पंक्तियों के आधार पर कोई (तीन) प्रश्न तैयार कीजिए ।

दिन के बारह बजने वाले थे, सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे उस वक्त ।

लिखिए

1. जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़ना पड़ा था। आप उनकी जगह होते तो क्या यात्रा अधूरी छोड़ते, क्यों?
2. बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ों के उदास और फीके लगने की क्या वजह हो सकती थी? वहाँ के वातावरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. पाठ में नेहरु जी ने हिमालय से चुनौती महसूस की? उन्होंने इसे चुनौती क्यों माना होगा? सोचकर लिखिए। आप भी क्या इसे एक चुनौती मानते हैं? क्यों?

शब्द भंडार

''चुनौती हिमालय की'' इस पाठ से संबंधित शब्दों को इस वर्ग पहेली से चुनकर लिखिए ।

प	र्व	त	मा	ला	ज
हा	ग	खा	ठं	वा	ता
ड़	र	ई	ह	ड़	ज़ी
अ	म	र	ना	थ	क
ह	थे	लि	याँ	ब	र्फ़

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

SCERT TELANGANA

2. जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

- 'उत्सुक' शब्द का समानार्थी शब्द लिखकर उससे वाक्य बनाइए।
- 'सफ़र' शब्द का पर्याय लिखकर उससे वाक्य बनाइए।
- 'मुश्किल' शब्द का विलोम लिखकर नया वाक्य लिखिए।

3. दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। रास्ता बहुत ही वीरान था। उपर्युक्त वाक्यों में आए समानार्थी शब्दों को चुनिए और उनसे दो वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कल्पना कीजिए कि अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपनी अंतरिक्ष यात्रा पूरी करके आ चुकी हैं। आप उनका साक्षात्कार लेना चाहते हैं। इसके लिए आप एक प्रश्नावली तैयार कीजिए।

प्रशंसा

आपके भाई ट्रेकिंग (पहाड़ पर चढ़ना) करके घर लौट आए हैं। ट्रेकिंग की विशेषता के बारे में चार वाक्य लिखिए ।

भाषा की बात

1. आकाश में रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी।

इस वाक्य में विशिष्टता बताने वाले शब्दों को छाँटकर लिखिए।

'कालिमा' और 'लालिमा' शब्द रात्रि और प्रातः की विशेषता बता रहे हैं। संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

- इसी प्रकार रंगों से जुड़े कोई पाँच विशेषण शब्द लिखिए।

जैसे : सफेद बर्फ़

SCERT TELANGANA

2. जॉन पुस्तक पढ़ता है ।

सुरेश मकान बनाता है ।

रज़िया भोजन बनाती है ।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। पहले वाक्य में 'जॉन' कर्ता है, दूसरे में 'मकान' कर्म है और तीसरे में 'बनाती' क्रिया है। इसी प्रकार के अन्य वाक्य बनाइए। उन वाक्यों में आये कर्ता, कर्म और क्रिया को तालिका के रूप में लिखिए।

परियोजना कार्य

कोलाज उस तस्वीर को कहते हैं जो कई तस्वीरों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर एक कागज पर चिपका कर बनाई जाती है। आप सब मिलकर पहाड़ों का एक कोलाज़ बनाइए। इसके लिए पहाड़ों से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें इकट्ठा कीजिए। पर्वतारोहण, चट्टान, पहाड़ों के अलग-अलग नज़ारें, चोटी, अलग-अलग किस्म के पहाड़। अब उन्हें एक बड़े से कागज़ पर पहाड़ के आकार में ही चिपकाइए। चित्रों पर आधारित शब्दों का एक कोलाज बनाइए। कोलाज में ऐसे शब्द हों जो इन चित्रों का वर्णन कर पा रहे हों या मन में उठने वाली भावनाओं को बता रहे हों। अब इन दोनों कोलाजों को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर किसी यात्रा के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

मेरी दैनिकी

उपवाचक

अभिजीत को दशहरे की छुट्टियाँ थीं। हर साल दशहरे की छुट्टियों में वह कहीं-न-कहीं घूमने जाता था। वह जहाँ भी घूमने जाता, वहाँ के अनुभव अपनी दैनंदिनी (डायरी) में अवश्य लिखता और जब कभी ऊब जाता, डायरी के इन पन्नों को पढ़कर पुरानी यादें ताजा कर लेता। अभिजीत के भैया मनोहर बासर में आई.आई.आई.टी. कॉलेज में बी.टेक की पढ़ाई कर रहे थे। बासर आदिलाबाद जिले में है। एक बार अभिजीत अपनी बहन स्नेहा के साथ उनसे मिलने बासर गया । आइए! हम अभिजीत की डायरी के कुछ पन्ने पढ़ें, जो उसने पिछली यात्रा के दिनों में लिखे थे।

15/10/2012

मैं और स्नेहा सुबह जल्दी नहा धोकर तैयार हो गये। स्नेहा बहुत ही उत्साहित नज़र आ रही थी क्योंकि वह पहली बार रेलगाड़ी में बैठ रही थी। एक बजे तक हमें सिकंदराबाद स्टेशन पर पहुँचना था। हमने नाश्ता किया, सूटकेस में कपड़े रखे और ऑटो से स्टेशन पहुँच गये। हमें मुंबई जाने वाली देवगिरी एक्सप्रेस पकड़नी थी। ठीक सवा बजे गाड़ी स्टेशन पर आ खड़ी हुई। हम भी गाड़ी में बैठ गये। डेढ़ बजे गाड़ी चल दी । ट्रेन तेज़ी से दौड़ रही थी । हमने पेड़, पहाड़ों, घरों को दौड़ते हुए देखा। धीरे-धीरे हमारी ट्रेन 'कामारेड्डी' के घने जंगलों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। दोपहर का समय होने के कारण स्नेहा को नींद आ रही थी किन्तु वह सुंदर दृश्यों को छोड़ना नहीं चाहती थी, इसलिए वह नींद भगाने का भरसक प्रयत्न कर रही थी।

अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी। हमने चाय पी। बासर आने ही वाला था। हम बेसब्री से बासर आने की प्रतीक्षा करने लगे। चार घंटे के सफ़र के पश्चात हम बासर पहुँचे। मनोहर भैया प्रतीक्षा में खड़े थे। हमें देखकर बहुत खुश हुए। हम उनके कमरे पर गये। उन्होंने दूसरे दिन 'बासर' के प्रसिद्ध मंदिर को ले जाने का वादा किया। उसके बाद हम सब सो गये।

SCERT TELANGANA

16/10/2012

दूसरे दिन आठ बजे हम गोदावरी नदी के किनारे पहुँचे। गोदावरी के स्वच्छ जल को देखकर मेरी तैरने की इच्छा हुई। किन्तु भैया ने मुझे रोक दिया। हमने मुँह हाथ धोये और 'सरस्वती मंदिर' के दर्शन के लिए निकल पड़ें। बासर 'व्यासपुर' का अपभ्रंश रूप है। महाभारत और भागवत की रचना करने वाले वेद व्यास जी ने इस क्षेत्र को बसाया था, इसलिए इसका नाम 'व्यासपुर' पड़ा। बाद में यह व्यासपुर से 'बासर' हो गया। 'बासर' की लोकप्रियता का प्रमुख कारण यहाँ का विश्वप्रसिद्ध सरस्वती मंदिर है। मनोहर भैया ने बताया कि यहाँ बच्चों को अक्षराभ्यास करवाने की प्रथा है। मैंने,स्नेहा और मनोहर भैया ने मंदिर में 'सरस्वती देवी' की मूर्ति के दर्शन किये। माँ से विद्या प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेकर हम बाहर निकल आये। मंदिर के बाहर कृत्रिम प्रपात दिखाई पड़ा। पास ही एक तंग गुफा थी। स्नेहा को छोटी-छोटी पहाड़ियों पर चढ़ने-उतरने में मज़ा आ रहा था। कुछ देर वहाँ खेलने के बाद हमने पास के होटल में भोजन किया। वहाँ से मनोहर भैया हमें 'वेदवती शिला' दिखाने ले गये। गाँव के बस-स्टॉप के पास एक बड़ी शिला घड़े के आकार में खड़ी थी। इस शिला की अपनी अलग ही विशेषता थी। इस शिला पर पत्थर की चोट करने और चोट पर कान लगाकर सुनने पर हर जगह से अलग-अलग बर्तनों की आवाज़ें आ रही थीं। स्नेहा को यह बड़ा अजीब लग रहा था। वह बार-बार शिला पर पत्थर से चोट करती, अलग-अलग आवाज़ें सुनती और खिलखिला कर हँस पड़ती। बड़ी मुश्किल से मैं और मनोहर भैया उसे वहाँ से हटाकर ले आये। फिर मनोहर भैया ने हमें उनका आई.आई.आई.टी. कॉलेज दिखाया।

वहाँ से हम वापस अपने कमरे पर आ गये क्योंकि शाम को ही हमें हैदराबाद के लिए निकलना था। गोदावरी नदी की कल-कल आवाज़ों के बीच से गुज़रते हुए हम हैदराबाद वापस आ गये।

SCERT TELANGANA

इकाई-III

8. एक माँ की बेबसी

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. लड़की पहिया कुर्सी पर क्यों बैठी होगी?
3. लड़की के बारे में महिला क्या सोच रही होगी?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह कविता पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

(इस कविता को पढ़ते समय, आँखों के सामने कई चित्र बनते हैं। बचपन का चित्र, बचपन के खास समय-खेल और साथियों का चित्र, उन साथियों में एक खास साथी रतन का और एक माँ का चित्र। इसे पढ़ो और महसूस करो।

कविता धीरे-धीरे पढ़ने की चीज़ है। उसे मन में उतरने में काफ़ी समय लगता है। कभी-कभी तो बरसों बाद हम बचपन की पढ़ी कविता पढ़ते हैं तो लगता है पहली बार पढ़ा है इसे। कविता पढ़ने के बाद मन के किसी कोने में घर बना लेती हैं। किसी मौके पर वह उभर आती है।

कविता, कहानी, सबके साथ यह होता है। इसलिए हमें इससे चिंतित होने की ज़रूरत नहीं कि कविता एक बार में पूरी तरह समझ में आ रही है या नहीं। अगर उससे सिर्फ़ एक चित्र ही उभरता है तो भी कविता कामयाब है।)

न जाने किस अदृश्य पड़ोस से
निकल कर आता था वह
खेलने हमारे साथ -
रतन, जो बोल नहीं सकता था
खेलता था हमारे साथ
एक टूटे खिलौने की तरह
देखने में हम बच्चों की ही तरह
था वह भी एक बच्चा।
लेकिन हम बच्चों के लिए अजूबा था
क्योंकि हमसे भिन्न था
थोड़ा घबराते भी थे हम उससे
क्योंकि समझ नहीं पाते थे
उसकी घबराहटों को,
न इशारों में कही उसकी बातों को,
न उसकी भयभीत आँखों में

SCERT TELANGANA

हर समय दिखती
उसके अंदर की छटपटाहटों को।
जितनी देर वह रहता

पास बैठी उसकी माँ
निहारती रहती उसका खेलना ।
अब जैसे-जैसे
कुछ बेहतर समझने लगा हूँ
उनकी भाषा जो बोल नहीं पाते हैं
याद आती
रतन से अधिक
उसकी माँ की आँखों में
झलकती उसकी बेबसी ।

कुँवर नारायण

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. रतन किस विषय में दूसरों से भिन्न था?
2. चलने, सुनने और देखने में असमर्थ आदि विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों को अपने जीवन में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा?
3. यदि सड़क पर चलते समय कोई विशेष आवश्यकता वाला व्यक्ति आपको मिल जाय, तो आप क्या करेंगे?

पढ़िए

1. यह बच्चा कवि के पड़ोस में रहता था, फिर भी कविता 'अदृश्य पड़ोस' से शुरू होती है। इसके कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे -
   (क) कवि को मालूम नहीं था कि बच्चा ठीक-ठीक किस घर में रहता था।
   (ख) पड़ोस में रहने वाले बाकी बच्चे एक-दूसरे से बातें करते थे, पर यह बच्चा बोल नहीं पाता था, इसलिए पड़ोसी होने के बावजूद वह दूसरे बच्चों के लिए अनजाना था।
   इन दोनों में से कौन-सा अर्थ तुम्हें ज्यादा सही लगता है? क्या कोई और अर्थ भी हो सकता है ?
2. 'अंदर की छटपटाहट' उसकी आँखों में किस रूप में प्रकट होती थी।
   (अ) चमक के रूप में
   (आ) डर के रूप में
   (इ) जल्दी घर लौटने की इच्छा के रूप में
3. नीचे दिए गए भाव के अनुसार कविता की पंक्ति चुनकर लिखिए -
   (अ) वह हमारे लिए एक अजूबा था और हमसे भिन्न था।
   (आ) उसके इशारों, बातों और आँखों में हमेशा घबराहट दिखाई देती थी।
   (इ) जब तक वह रहता था तब तक उसकी माँ उसका खेल निहारती रहती थी।
4. दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द कविता में से सुनकर लिखिए।

(अ) कह -	(आ) अलग -
(इ) संकेत -	(ई) लड़का -
(उ) भीतर -	(ऊ) गायब -

SCERT TELANGANA

5. कविता ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(अ) 'थोड़ा घबराते भी थे हम उससे
क्योंकि समझ नहीं पाते थे'
रतन के बारे में कवि क्या नहीं समझ पाते थे?

(आ) रतन देखने में कैसा था ? वह बच्चों के लिए अजूबा क्यों था?

(इ) जब रतन खेल रहा होता था, तब उसकी माँ क्या करती थी?

लिखिए

1. 'लेकिन हम बच्चों के लिए अजूबा था' अजूबा क्या होता है? रतन के लिए यह शब्द क्यों कहा गया होगा?
2. जो बच्चा बोल नहीं सकता है, वह किस-किस बात की आशंका से घबराहट महसूस कर सकता है?
3. रतन की माँ की आँखों में बेबसी क्यों झलकती होगी?

शब्द भंडार

1. कवि ने बच्चे को टूटे खिलौने की तरह बताया है। जब कोई खिलौना टूट जाता है तो वह उस तरह से काम नहीं कर पाता जिस तरह से पहले करता था। संदर्भ के अनुसार निम्न तालिका की पूर्ति कीजिए।

खिलौना	टूटने का कारण	नतीजा
गाड़ी	पहिया निकल जाने पर	चल नहीं पाती
गुड़िया	सीटी निकल जाने पर	....
गेंद	....	....
जोकर	चाबी निकल जाने पर	....

SCERT TELANGANA

2. 'बेबस' शब्द 'बे' और 'वश' को जोड़कर बना है। यहाँ 'बे'का अर्थ 'बिना' है। नीचे दिए शब्दों में यही 'बे' छिपा है। इस सूची में कुछ और शब्द जोड़िए।

बेजान बेचैन ....

बेसहारा बेहिसाब ....

3. 'समझ नहीं पाते थे उसकी घबराहट को।' घबराहट शब्द 'घबराना' से बना है। इसी प्रकार के अन्य शब्द लिखिए ।

उदाः घबराना - घबराहट

(अ) रुकना - .... (आ) सजाना - ....

(इ) छटपटाना - .... (ई) मुस्कुराना - ....

4. अपने दोस्तों से पूछकर पता करें कि कौन क्या सोचकर और किस काम को करने से घबराता है । कारण भी पता कीजिए ।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

''याद आती रतन से अधिक
उसकी माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी ''

1. रतन की माँ की आँखों में कैसी बेबसी दिखाई देती थी?

अपनी माँ के बारे में सोचते हुए नीचे लिखे वाक्य पूरे कीजिए ।

(अ) मेरी माँ बहुत खुश होती हैं जब ....

(आ) माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं क्योंकि ....

(इ) मेरी माँ चाहती है कि मैं ....

(ई) माँ उस समय बहुत बेबस हो जाती है जब ....

(उ) मैं चाहती /चाहता हूँ कि मेरी माँ ....

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

सड़क पर हुई एक दुर्घटना में एक लड़की ने दुर्घटनाग्रस्त आदमी को पहले अस्पताल पहुँचाया फिर उसके परिवार वालों को सूचित किया। लड़की के साहसिक कार्य के बारे में लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे आँखों से संबंधित कुछ मुहावरे दिए गये हैं। इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

- आँख दिखाना
- नज़र चुराना
- आँख का तारा
- नज़रें फेर लेना
- आँख पर पर्दा पड़ना

2. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ अपनी मातृभाषा में लिखिए -

(अ) रतन, जो बोल नहीं सकता था
खेलता था हमारे साथ।

(आ) न उसकी भयभीत आँखों में,
हर समय दिखती,
उसकी अंदर की छटपटाहट को।

(इ) कुछ बेहतर समझने लगा हूँ,
उनकी भाषा को जो बोल नहीं पाते हैं।

3. निम्न वाक्यों को क्रम में लिखकर अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए ।

(अ) है खिलौना मेरा गया टूट ।

....

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

(आ) बातें वह इशारों में अपनी था कहता ।

....

(इ) उसका माँ खेलना उसकी थी रहती निहारती।

....

परियोजना कार्य

किसी एक ऐसे विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए जिन्होंने जीवन में हार नहीं मानी और उन्नति के शिखर पर जा पहुँचे। उनका चित्र कॉपी में चिपकाइए और जानकारी भी लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता लय के साथ सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से तुकबंद वाक्य लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

उपवाचक

नन्हा नटखट खरगोश

एक नन्हा-सा खरगोश घर छोड़कर भागना चाहता था। उसने अपनी माँ से कहा- मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ।

उसकी माँ ने कहा- अगर तुम घर छोड़कर जाओगे तो मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे आऊँगी, क्योंकि तुम मेरे लाड़ले बेटे जो हो!

नन्हे खरगोश ने कहा-अगर तुम पीछे-पीछे आओगी तो मैं मछली बन जाऊँगा और नदी में तैरकर तुमसे दूर चला जाऊँगा।

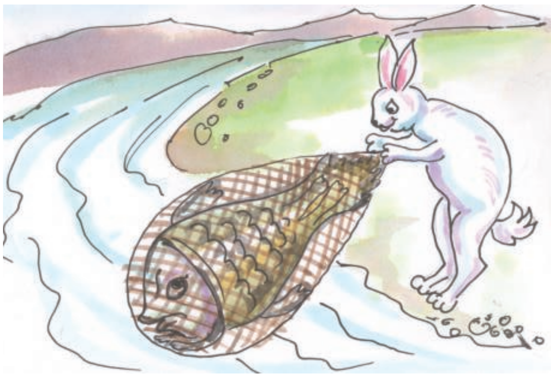

खरगोश की माँ ने कहा - अगर तुम मछली बनकर नदी में तैरोगे तो मैं मछुआरा बनकर जाल में तुम्हें पकड़ने आऊँगी।

नन्हे खरगोश ने कहा - अगर तुम मछुआरा बनोगी तो मैं फूल बनकर बाग में छिप जाऊँगा।

खरगोश की माँ ने कहा -
अगर तुम बाग में फूल बनकर छिपोगे तो मैं माली बनकर तुम्हें खोजूँगी।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

नन्हे खरगोश ने कहा- अगर तुम माली बनकर मुझे ढूँढ़ोगी तो मैं चिड़िया बनकर तुमसे बहुत दूर उड़ जाऊँगा।

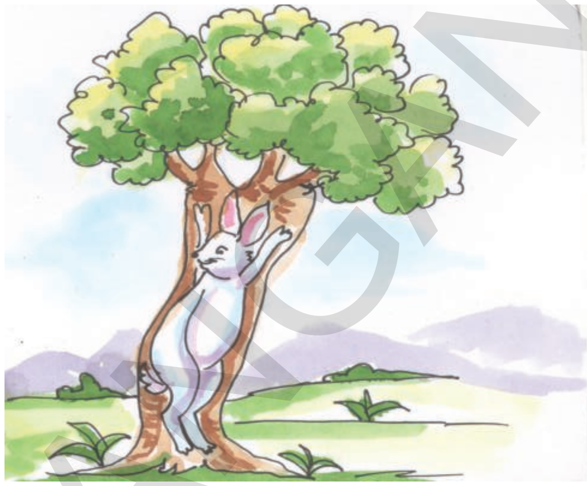

खरगोश की माँ ने कहा - अगर तुम चिड़िया बनकर मुझसे दूर उड़ कर जाओगे तो मैं पेड़ बन जाऊँगी जहाँ तुम शाम को आकर सुस्ता सको।

नन्हे खरगोश ने कहा- अगर तुम पेड़ बनोगी तो फिर मैं नाव बनकर तुमसे बहुत-बहुत दूर चला जाऊँगा ।

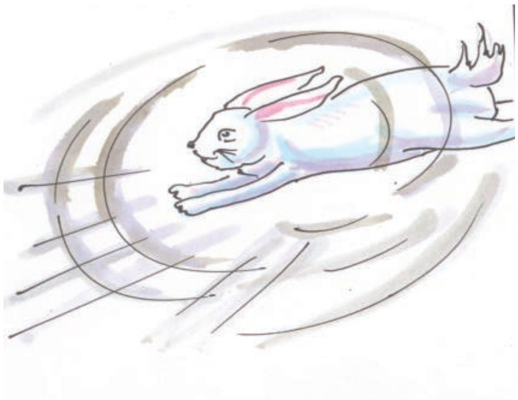

खरगोश की माँ ने कहा- अगर तुम नाव बनकर बहुत-बहुत दूर जाओगे तो मैं हवा का झोंका बन जाऊँगी । मैं अपनी मर्ज़ी से तुम्हें चाहूँ वहाँ बहा कर ले जाऊँगी।

नन्हे खरगोश ने कहा - अगर तुम हवा बनकर मुझे बहा कर ले जाओगी तो मैं एक छोटा लड़का बनकर घर की ओर दौड़ लगाऊँगा ।

SCERT TELANGANA

खरगोश की माँ ने कहा- अगर तुम नन्हे लड़के जैसे घर की ओर दौड़ोगे तो मैं तुम्हारी माँ बनकर तुम्हें पकड़ूँगी और अपने गले से लगा लूँगी ।

नन्हे खरगोश ने कहा - इससे तो अच्छा होगा कि मैं आराम से अपनी माँ के साथ घर पर ही रहूँ।

सबसे अलग घर को पहचानिए

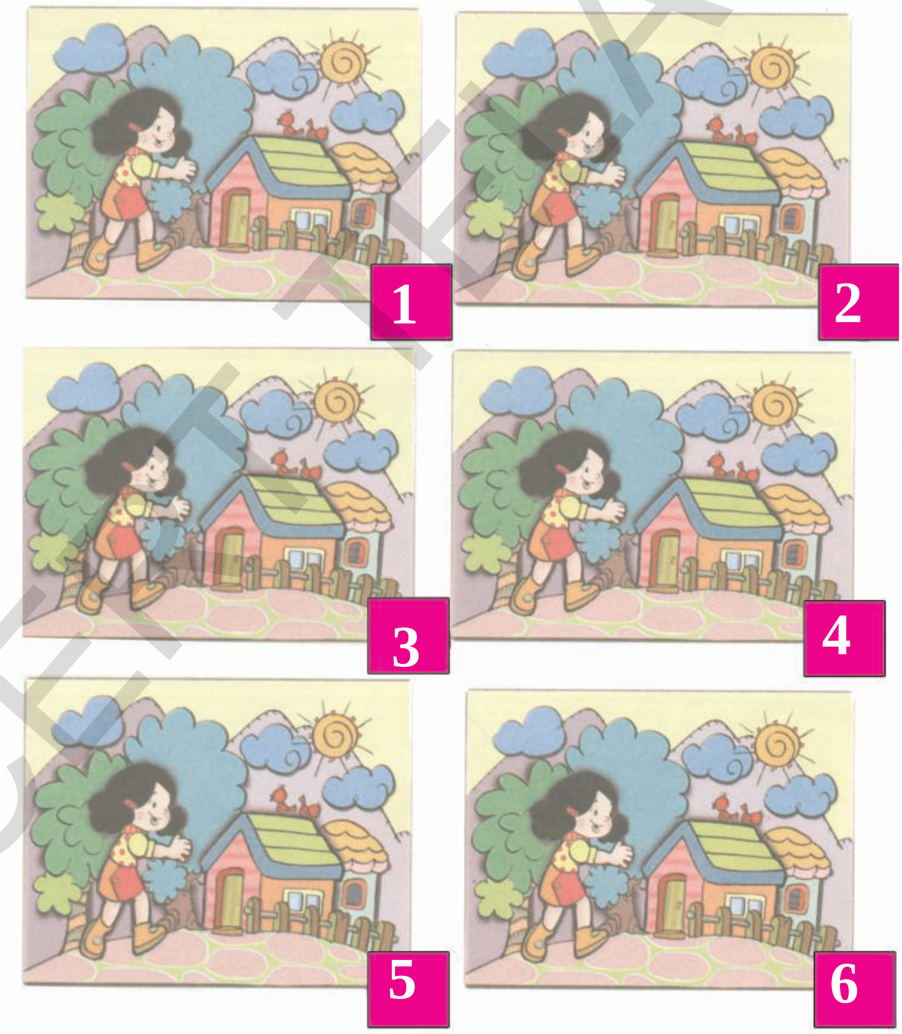

SCERT TELANGANA

इकाई-III

9. एक दिन की बादशाहत

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. पाठशाला में यह दृश्य किस दिन दिखायी देता है?
3. उस दिन बच्चे क्या करते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

''आरिफ़...सलीम...चलो फ़ौरन से जाओ,'' अम्मी की आवाज़ ऐन उस वक्त आती थी, जब वे दोस्तों के साथ बैठे कव्वाली गा रहे होते थे। या फिर सुबह बड़े मज़े में आइसक्रीम खाने के सपने देख रहे होते कि आपा झिंझोड़कर जगा देतीं ''जल्दी उठो, स्कूल का वक्त हो गया।''

दोनों की मुसीबत में जान थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्ज़ी से चूँ भी न कर सकते थे। कभी आरिफ़ को गाने का मूड आता, तो भाई-जान डाँटते ''चुप होता है या नहीं? हर वक्त मेंढक की तरह टर्राए जाता है।''

बाहर जाओ, तो अम्मी पूछतीं ''बाहर क्यों गए?'' अंदर रहते, तो दादी चिल्लाती ''हाय, मेरा दिमाग फटा जा रहा है शोर के मारे! अरी रज़िया, ज़रा इन बच्चों को बाहर हाँक दें! जैसे बच्चे न हुए मुर्गी के चूज़े हो गए!''

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी। लिहाज़ा दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई और अब्बा की ख़िदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

''कोई ज़रूरत नहीं है ऊधम मचाने की!'' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डाँट पिलाई। लेकिन अब्बा जाने किस मूड में थे कि न सिर्फ़ मान गए बल्कि यह इकरार भी कर बैठे कि कल दोनों को हर किस्म के अधिकार मिल जाएँगे।

अभी सुबह होने में कई घंटे थे कि आरिफ़ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला ''अम्मी, जल्दी उठिए, नाश्ता तैयार कीजिए!'' अम्मी ने चाहा एक झापड़ रसीद करके सो रहें, मगर याद आया कि आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।

फिर दादी ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद दवाइयाँ खाना और बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, तो आरिफ़ ने उन्हें रोका ''तौबा है, दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप....पेट फट जाएगा!'' और दादी ने हाथ उठाया मारने के लिए।

नाश्ता मेज़ पर आया, तो आरिफ़ ने खानसामा से कहा ''अंडे और मक्खन वगैरह हमारे सामने रखो, दलिया और दूध-बिस्कुट इन सबको दे दो!''

आपा ने कहर-भरी नज़रों से उन्हें घूरा, मगर बेबस थीं क्योंकि रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए नहीं रख सकती थीं। सब

SCERT TELANGANA

खाने बैठे, तो सलीम ने अम्मी को टोका, ''अम्मी, ज़रा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं!''

''मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ,'' अम्मी ने टालना चाहा!

''नहीं, चलिए, उठिए!'' अम्मी निवाला तोड़ चुकी थीं, मगर सलीम ने जबरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया।

अम्मी को गुसलखाने में जाते देखकर सब हँस पड़े, जैसे रोज़ सलीम को ज़बरदस्ती भगा के हँसते थे।

फिर वह अब्बा की तरफ़ मुड़ा ''ज़रा अब्बा की गत देखिए! बाल बढ़े हुए, शेव नहीं की, कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले! आखिर अब्बा के लिए कितने कपड़े बनाए जाएँगे!''

यह सुनकर अब्बा का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया। आज ये दोनों कैसी सही नकल उतार रहे थे सबकी! मगर फिर अपने कपड़े देखकर वह सचमुच शर्मिंदा हो गए।

थोड़ी देर बाद जब अब्बा अपने दोस्तों के बीच बैठे अपनी नई ग़ज़ल लहक-लहक कर सुना रहे थे, तो आरिफ़ फिर चिल्लाने लगा ''बस कीजिए, अब्बा! फ़ौरन आफ़िस जाइए, दस बज गए!''

''चु....चु...चोप'' अब्बा डाँटते-डाँटते रुक गए। बेबसी से ग़ज़ल की अधूरी पंक्ति दाँतों में दबाए पाँव पटकते आरिफ़ के साथ हो लिए।

''रज़िया, ज़रा मुझे पाँच रुपये तो देना,'' अब्बा दफ़्तर जाने को तैयार होकर बोले।

''पाँच रुपये का क्या होगा? कार में पेट्रोल तो है।'' आरिफ़ ने तुनककर अब्बा जान की नकल उतारी, जैसे अब्बा कहते हैं कि इकन्नी का क्या करोगे, जेब-खर्च तो ले चुके!

थोड़ी देर बाद खानसामा आया ''बेगम साहब,आज क्या पकेगा।''

''आलू, गोश्त, कबाब, मिर्चों का सालन....'' अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार कहना शुरू किया।

SCERT TELANGANA

''नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी!'' सलीम ने किताब रखकर अम्मी की नकल उतारी, ''आज गुलाब-जामुन, गाजर का हलवा और मीठे चावल पकाओ!''

''लेकिन मिठाइयों से रोटी कैसे खाई जाएगी?'' अम्मी किसी तरह सब्र न कर सकीं।

''जैसे हम रोज़ सिर्फ़ मिर्चों के सालन से खाते हैं! दोनों ने एक साथ कहा।

दूसरी तरफ़ दादी किसी से तू-तू मैं-मैं किए जा रही थीं।

''ओफ्फो ! दादी तो शोर के मारे दिमाग पिघलाए दे रही हैं! आरिफ़ ने दादी की तरह दोनों हाथों में सिर थामकर कहा।

इतना सुनते ही दादी ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया कि आज ये लड़के मेरे पीछे पंजे झाड़ के पड़ गए हैं। मगर अब्बा के समझाने पर खून का घूँट पीकर रह गई।

कॉलेज का वक्त हो गया, तो भाई जान अपनी सफ़ेद कमीज़ को आरिफ़-सलीम से बचाते दालान में आए ''अम्मी, शाम को मैं देर से आऊँगा, दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाना है।''

''खबरदार! आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। कोई ज़रूरत नहीं फिल्म देखने की! इम्तिहान करीब हैं और हर वक्त सैर-सपाटों में गुम रहते हैं आप!''

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

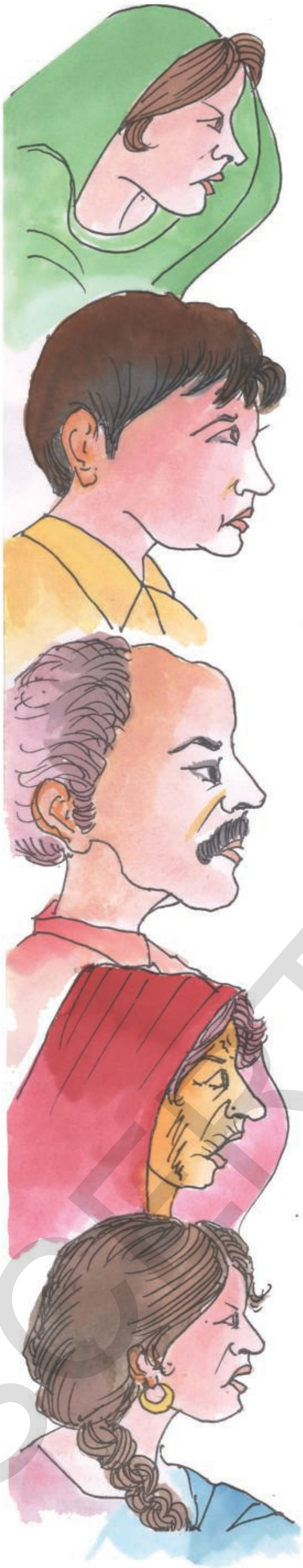

पहले तो भाई जान एक करारा हाथ मारने लपके, फिर कुछ सोचकर मुस्कुरा पड़े। ''लेकिन हुज़ूरे-आली, दोस्तों के साथ खाकसार फिल्म देखने की बात पक्की कर चुके हैं इसलिए इज़ाजत देने की मेहरबानी की जाए!'' उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा।

''बना करे....बस, मैंने एक बार कह दिया!'' उसने लापरवाही से कहा और सोफ़े पर दराज़ होकर अखबार देखने लगा।

उसी वक्त आपा भी अपने कमरे से निकली। एक निहायत भारी साड़ी में लचकती-लटकती बड़े ठाठ से कॉलेज जा रही थीं।

'आप..!' सलीम ने बड़े गौर से आपा का मुआयना किया। ''इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी? शाम तक गारत हो आएगी। इस साड़ी को बदल कर जाइए। आज वह सफ़ेद वॉयल की साड़ी पहनना!''

''अच्छा अच्छा....बहुत दे चुके हुक्म....'' आपा चिढ़ गई। ''हमारे कॉलेज में आज फ़ंक्शन है'', उन्होंने साड़ी की शिकनें दुरस्त कीं।

''हुआ करें...मैं क्या कह रहा हूँ...सुना नहीं..?अपनी इतनी अच्छी नकल देखकर आपा शर्मिंदा हो गई -बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज़ उतरवा कर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।

दूसरी सुबह हुई।

सलीम की आँख खुली, तो आपा नाश्ते की मेज़ सजाए उन दोनों के उठने का इंतजार कर रही थीं। अम्मी खानसामा को हुक्म दे रहीं थीं कि हर खाने के साथ एक मीठी चीज़ ज़रूर पकाया करो। अंदर आरिफ़ के गाने के साथ भाई जान मेज़ का तबला बजा रहे थे और अब्बा सलीम से कह रहे थे ''स्कूल जाते वक्त एक चवन्नी जेब में डाल लिया करो...क्या हर्ज़ है ...!''

जीलानी बानो

उर्दू से अनुवाद-लक्ष्मीचंद्र गुप्त

सुनिए-बोलिए

1. बादशाहत क्या होती है? आपके विचार से कहानी का नाम ''एक दिन की बादशाहत'' क्यों रखा गया है। आप भी अपने मन से सोचकर कहानी का कोई शीर्षक दीजिए।
2. अब्बा ने क्या सोचकर आरिफ़ की बात मान ली थी?
3. अगर आप को घर के सारे अधिकार एक दिन के लिए दे दिए जाएँ तो आप क्या करेंगे?

पढ़िए

1. पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए (1,2....5)
   (अ) ''अच्छा अच्छा.....बहुत दे चुके हुक्म ..''आपा चिढ़ गई । (   )
   (आ) ''खबरदार'' आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। (   )
   (इ) ''मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ'' अम्मी ने टालना चाहा। (   )
   (ई) ''नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी।'' (   )
   (उ) ''बाहर आओ, तो अम्मी पूछती'' बाहर क्यों गए? (   )

2. ''.............आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।''
   (अ) अम्मी के अधिकार किसने छीन लिये थे?
   (आ) उन्होंने अम्मी के कौन-कौन से अधिकार छीने थे?

3. कहानी में आए हुए मुहावरों को पढ़िए, रेखांकित कीजिए और लिखिए।

4. पाठ पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
   (अ) आरिफ़ और सलीम ने पाबंदियों से बच निकलने की क्या तरकीब निकाली?
   (आ) एक दिन के लिए घर के सारे अधिकार आरिफ़ और सलीम को मिल गये थे। उस दिन उन्होंने बड़ों के किन-किन कामों पर रोक लगाई?
   (इ) दूसरे दिन से बड़ों के बर्ताव में क्या बदलाव आया?

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

लिखिए

1. बच्चों को बड़ों की कौन-सी बातें अच्छी नहीं लगती हैं? सोचकर लिखिए।
2. आपके विचार में बच्चों को घर में कौन-कौन से अधिकार देने चाहिए?
3. कहानी में ऐसे कई काम बताये गए हैं जो बड़े लोग आरिफ़ और सलीम से करने के लिए कहते थे। आपके विचार से उनमें से कौन-कौन से काम उन्हें बिना शिकायत किए कर लेने चाहिए थे और कौन-कौन से कामों के लिए मना कर देना चाहिए था।

शब्द भंडार

1. कौन-कौन-सी चीज़ें आपको बिल्कुल बेकार लगती हैं?

(क) पहनने की चीज़ें	....	....	....
(ख) खाने-पीने की चीज़ें	....	....	....
(ग) करने के काम	....	....	....
(घ) खेल	....	....	....

2. पाठ में बहुत सारे शब्द उर्दू के हैं। कुछ शब्द चुनकर उनके समानार्थी शब्द हिन्दी में और अपनी मातृभाषा में लिखिए।

उर्दू	हिन्दी /	मातृभाषा
वक्त	समय	....
अब्बा	....	....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

'यदि मैं बादशाह होता' इस विषय पर अपनी कल्पना से एक निबंध लिखिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

आपको अपने पिताजी की जो बातें अच्छी लगती हैं, उन बातों के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(क) इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी?

यहाँ पर 'भारी साड़ी' से क्या मतलब है?

- साड़ी का वज़न ज़्यादा था।
- साड़ी पर बेल-बूटों की कढ़ाई थी।

(ख)- भारी साड़ी - भारी अटैची

ऊपर 'भारी' विशेषण का दो अलग-अलग संज्ञाओं के साथ इस्तेमाल किया गया है। इन दोनों में 'भारी' का अर्थ एक-सा नहीं है। इनमें क्या अंतर है?

(ग) 'भारी' की तरह हल्का का भी अलग-अलग अर्थों में इस्तेमाल कीजिए।

परियोजना कार्य

'बादाम' एक सूखा मेवा है। इससे कई चीज़ें बनाई जा सकती हैं। जैसे - हरीरा, हलुआ आदि। आप कुछ अन्य सूखे मेवों के चित्र इकट्ठे करके कॉपी में चिपकाइए। उनके नाम लिखिए साथ में यह भी लिखिए कि उनसे क्या-क्या बनाया जा सकता है?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटी कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-III

10. फ़सलों के त्यौहार

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र किस त्यौहार से संबंधित है?
3. कुछ त्यौहारों के नाम बताइए?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरूआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतजार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रजाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ बिल्कुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल-पहल अब पता चल रही है। रह-रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, ''जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?''

''आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।''

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा-धोकर हम एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! ''खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देख नी सारा देह कनकना दे ता! '' पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं- झक-झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हल्के -फुल्के बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिल्कुल धुली-धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे-छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी-बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा-दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेगी ....आज खिचड़ी जो है। खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल के लड्डू , गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया। खाते-खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर, हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी,

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

विमला दिद्दा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े-बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच-बीच में अपनी पतंग को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्यौहार !

जनवरी माह के मध्य में भारत में लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई-न-कोई त्यौहार मनाया जाता है। कोई फ़सलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फ़सल तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर-संक्रांति या तिल संक्रात, असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग और आंध्र प्रदेश में संक्रांति का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्यौहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग-अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल जोशो-खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग-अलग जनजातियाँ इसे अलग-अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी-मार्च में, तो औरांव लोग इसे मार्च-अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती

SCERT TELANGANA

है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री-पुरूष दोनों ही ढोल-मंजीरे लेकर रात भर नाचते-गाते हैं। चारों ओर फैली हुई छोटी-छोटी घाटियाँ, लंबे-लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस-पास बसे छोटे-छोटे गाँव। लिपे-पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहे डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर-घर जाते हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर-घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने-पीने का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन बसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

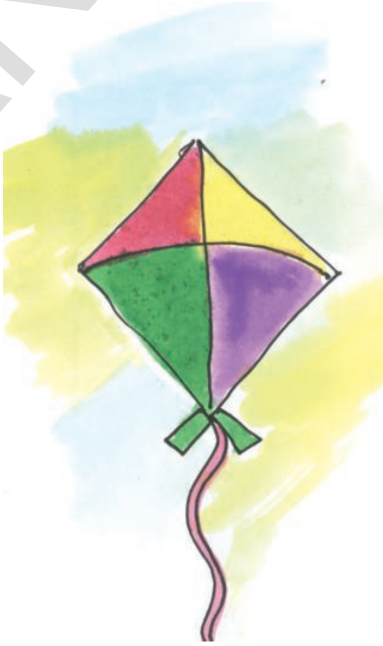

तमिलनाडु में मकर संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्यौहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ़ की फ़सलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके से मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस-बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो ''पोंगला-पोंगल, पोंगला-पोंगल'' (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर-संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग-रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलें। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म,जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों-लाखों पतंगों से सूर्य भी ढँक-सा जाता है।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँधकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह-तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे-डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़-तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गीत गाते हैं-

कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

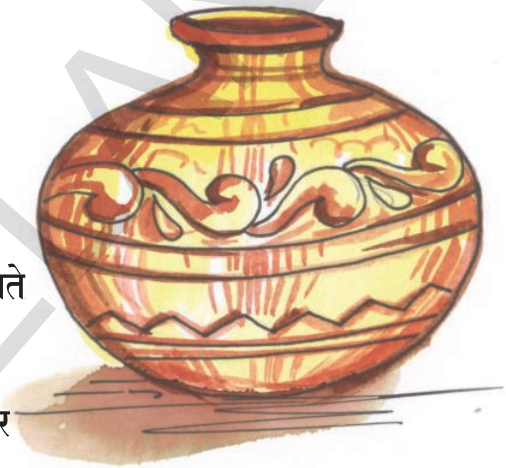

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं।

है न कितने अलग-अलग अंदाज़ मकर संक्रांति को मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फ़ीले पानी में कम-से-कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर-संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग-अलग ढंग से मनाते हैं।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. फ़सलों से जुड़ा त्यौहार सारे भारत में मनाया जाता है। तेलंगाणा में भी इसे मनाते हैं। तो हमारे राज्य में इसे क्या कहते हैं और इसे कैसे मनाते हैं? बताइए।
2. गुजरात में पतंगों के बिना मकर संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाता है। आप भी संक्रांति के दिन पतंग उड़ाते होंगे। पतंग उड़ाने के आपके अनुभवों में से किसी एक अनुभव को बताइए।
3. पाठ में लेखक ने कहा है कि- बाहर देखने से समय का अंदाज नहीं हो रहा था। ऐसा क्यों हुआ होगा? जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते होंगे? बताइए।

पढ़िए

I. पाठ में अनेक प्रदेशों के नाम आये हैं । उन्हें रेखांकित कीजिए और लिखिए।

II. पाठ पढ़िए और वाक्यों की पूर्ति कीजिए ।

1. नहा-धोकर हम सभी एक कमरे में ....।
2. चार दिनों तक इसका ....।
3. इसी दिन से बसंत ऋतु की ....।
4. कुमाऊँ में मकर संक्रांति को ....।
5. कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में.............................।

III. नीचे दिये गये वाक्यों के अर्थों से मिलते-जुलते वाक्य पाठ में से चुनकर लिखिए।

1. मुझे सोने का घड़ा लाकर दो।
2. इतनी कड़ाके की ठंड हमने पहले कभी नहीं देखी।
3. आज इन लोगों को उठना नहीं है क्या?

IV. पाठ पढ़िए और निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. मकर संक्रांति का त्यौहार भारत के विभिन्न प्रांतों में किन-किन नामों से मनाया जाता है?
2. तिलकुट में क्या-क्या चीज़ें डाली जाती हैं?
3. आदिवासी लोग इस त्यौहार को कैसे मनाते हैं?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. पाठ में विशेषतः संक्रांति के त्यौहार का वर्णन है। संक्रांति के अलावा कौनसा त्यौहार है जो सारे देश में ऐसे ही मनाया जाता है?
2. पाठ में बताया गया है कि- ''पूरे दस दिन हो गये सूरज लापता है।'' क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले? अगर ऐसा होगा तो क्या होगा?
3. लोग ठंड से ठिठुरते हैं फिर भी बर्फ़ीले पानी में डुबकी लगाते हैं? यदि उन्हें बर्फीले पानी के स्थान पर गरम पानी दे दिया जाय तो वे कैसा अनुभव करेंगे और क्यों?

शब्द भंडार

I. नीचे दिये गये वाक्यों में रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए।

1. गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया।

   (शौक/इच्छा)

2. उनके सामने केले के पत्ते कतार में रखे हैं।

   (फ़र्श/पंक्ति)

3. कही-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है।

   (भीड़/आदमी)

II. तिल से तेल बनता है। और किन-किन चीज़ों से तेल बनता है। उनके नाम लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसान और खेती हममें से बहुत से लोगों की जानी-पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं हैं। विशेष रूप से शहर के लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी जिंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को जिंदा रहने के लिए

SCERT TELANGANA

बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिन भर जो चीज़ें खाते हैं, वे कहाँ से आती हैं, तो किसानों की हमारी जिंदगी में भूमिका को हम समझ पायेंगे। किसानों की इस भूमिका का वर्णन करते हुए उन्हीं की वाणी में एक कहानी लिखिए। जिसका शीर्षक होगा 'मेरी कहानी'।

प्रशंसा

'गया' शहर तिलकुट के लिए प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी-बड़ी ऐसी कई जगहें हैं, जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। उन खास पकवानों के बारे में मालूम कीजिए और उनके विशेष स्वाद के बारे में लिखिए।

भाषा की बात

पिछले दो वर्षों से आपने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना। इन शब्दों को क्रिया भी कहते हैं। क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम करने से है। नीचे पोंगल बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच-बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा कीजिए।

1. भूनना   2. मिलाना   3. पकना   4. परोसना

पोंगल (पाँच व्यक्तियों के लिए)

1. चावल	-	1 प्याला
2. मूँग दाल	-	1/2 प्याला
3. पानी	-	1 प्याला
4. गुड़ या शक्कर	-	2 प्याला
5. इलायची	-	पाँच
6. कालीमिर्च	-	पाँच दाने
7. घी	-	चार बड़े चम्मच

SCERT TELANGANA

विधि

एक बर्तन में एक चम्मच घी में मूँगदाल को सुनहरी भूरी होने तक..............लो। उसमें धुले हुए चावल डालो। उसमें एक प्याला पानी डालो। उसके बाद पाँच प्याले दूध को पलटे से .... हुए डालो। दोनों के................ के बाद गुड़ या शक्कर उसमें मिलाओ। पलटे से मिलाते रहो। उसमें काली मिर्च डालो। तीन चम्मच घी को भी उसमें ....। अंत में इलायची को मिलाओ।......... गरमागरम या ठंडा।

परियोजना कार्य

विविधता हमारे देश की पहचान है। फ़सलों का त्यौहार हमारे देश के विविध रंग-रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिये गये हैं। पाँच-पाँच बच्चों का समूह एक-एक उदाहरण लें और उस पर जानकारी इकट्ठी करें। (जानकारी चित्र,फोटोग्राफ, कहानी,कविता, सूचनात्मक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह को इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करना होगा ।

- भाषा
- कपड़े
- नया वर्ष
- भोजन
- लोक कला
- लोक संगीत

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर त्यौहार के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-III

11. जहाँ चाह वहाँ राह

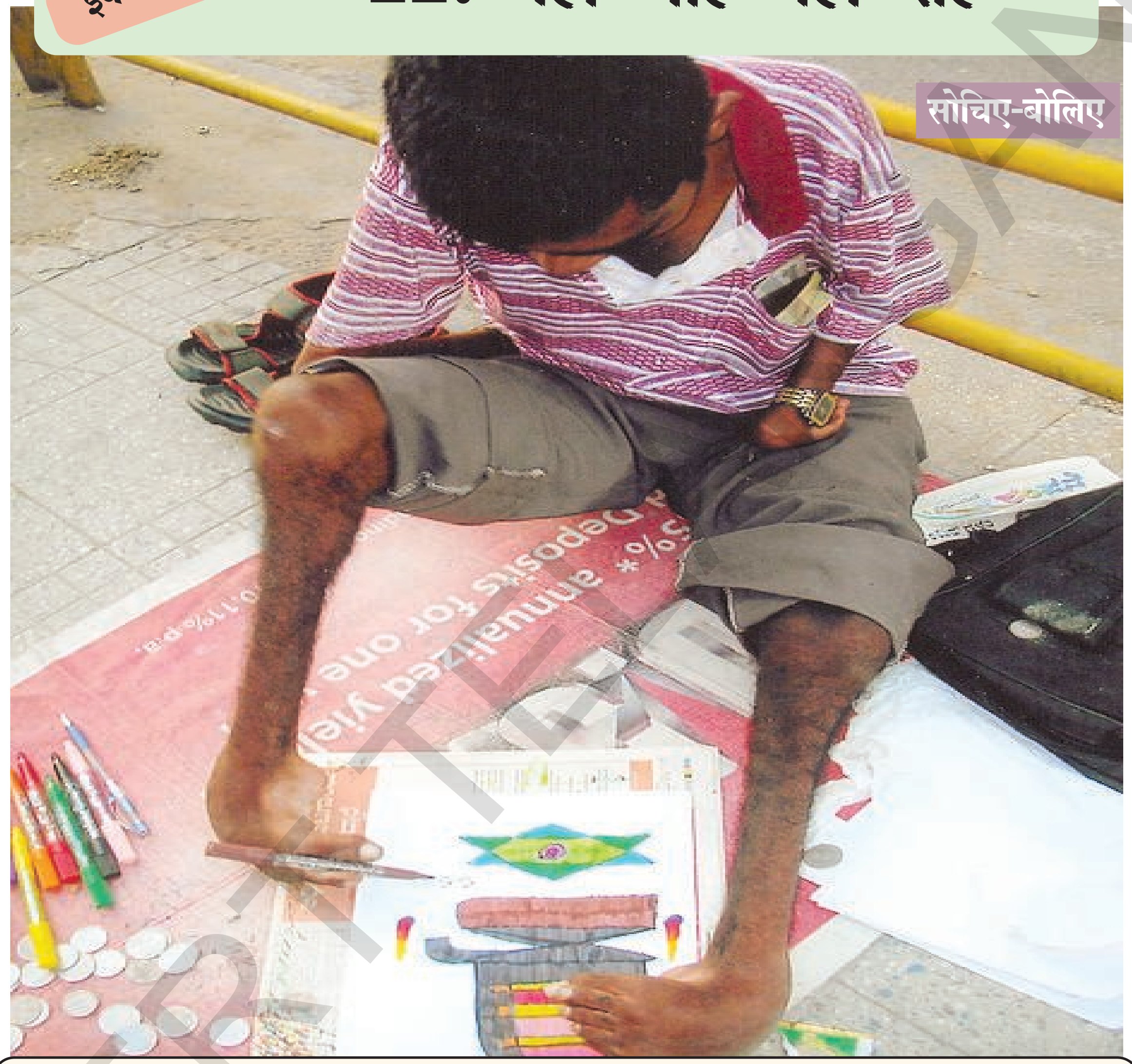

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस चित्र को देखकर आप क्या सोच रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

मलमली धोती का बादामी रंग खिल उठा था। किनारों पर कसूती के टाँकों से पिरोयी हुई बेल थी। पल्लू पर भरवाँ टाँके अपना कमाल दिखा रहे थे। सुनहरे-रूपहले बेल-बूटों से जान आ गई थी मलमल में। इन बेल-बूटों को सजाया था इला सचानी ने। इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं ये कढ़ाई के नमूने।

छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजाकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

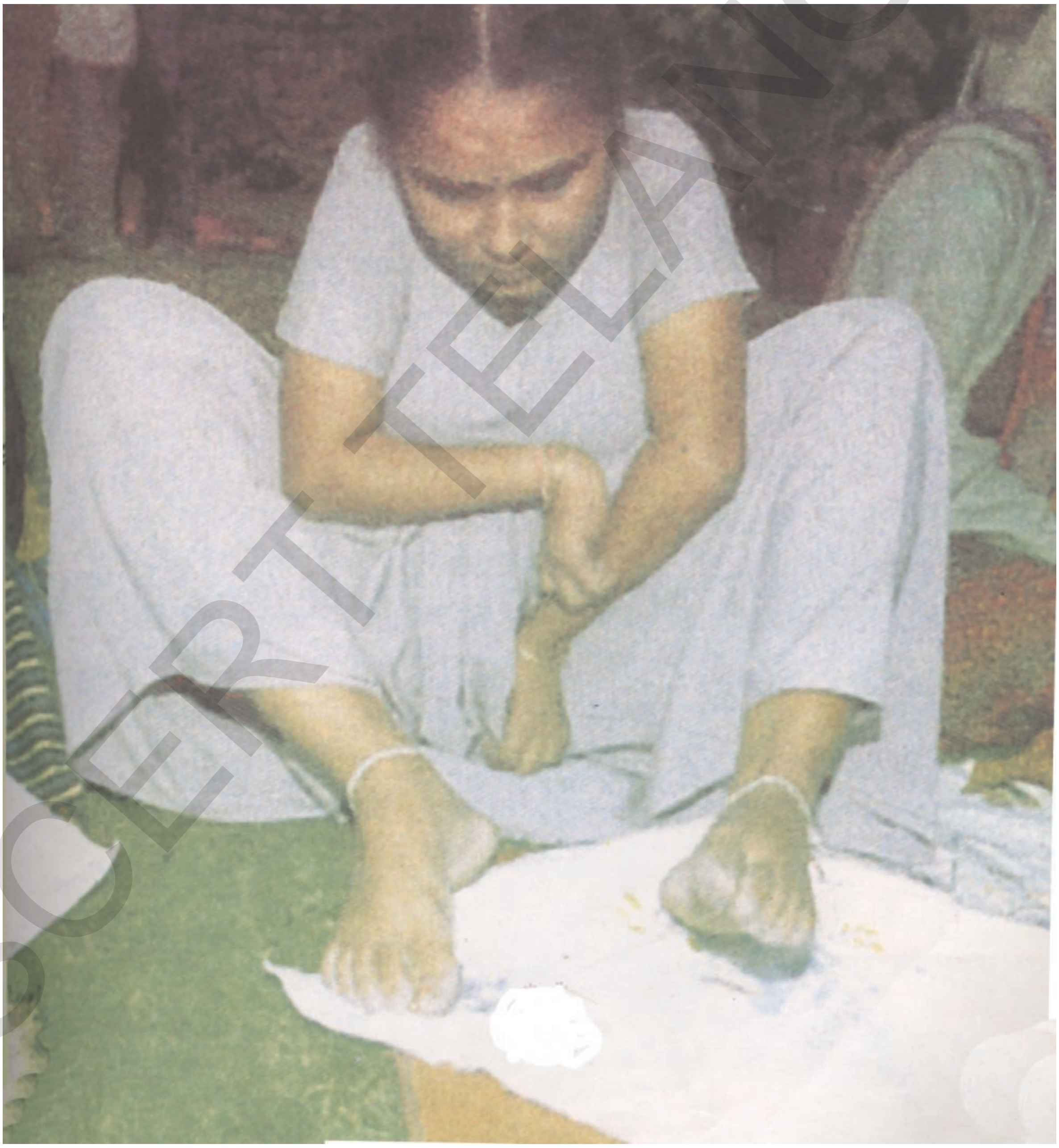

SCERT TELANGANA

साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तों से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर-उधर से टूटे-फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्टू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला डालकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते -

कच्चे नीम की निंबौरी

सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन-ही-मन सोचती, ''मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला किसी न किसी तरह तो उनके साथ खेल सके। कभी-कभार वह पकड़म-पकड़ाई और विष-अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'धप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने का ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस जिद को एक चुनौती माना।

SCERT TELANGANA

उसने वह सब कुछ अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल-भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते। पर किसी-किसी काम में थोड़ी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं परीक्षा पास नहीं कर पाई। इला को यह मालूम न था परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय नहीं मिल सकता है। उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना अच्छा रहता। पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थी। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान ली। यहाँ भी उसने अपने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पंद्रह-सोलह साल की होते-होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन-से लगें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया जब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ-साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा था। इला ने काठियावाड़ी टाँकों के साथ-साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और जंजीर से उठा रखा था।

पारंपरिक डिज़ाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाई।

इला के पाँव अब रुकते नहीं हैं। आँखों में चमक, होंठों पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूपहली बूटियाँ उकेरते थकती नहीं हैं।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. इला या इला जैसी कोई लड़की यदि आपकी कक्षा में दाखिला ले ले तो आप के मन में कौन-कौन से प्रश्न उठेंगे? बोलिए।
2. इस लेख को पढ़ने के बाद क्या आपकी सोच में कुछ बदलाव आया है? यदि आया है तो कैसा बदलाव आया है? बताइए?
3. यदि इला जैसी कोई लड़की आपके विद्यालय में आ जायेगी तो उसे किन-किन कार्यों को करने में परेशानी आएगी?

पढ़िए

I. सही वाक्य के आगे (✔) का निशान लगाइए।

इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी क्योंकि ......

- ○ परीक्षा के लिए उसने अच्छी तरह तैयारी नहीं की थी।
- ○ वह परीक्षा पास करना नहीं चाहती थी?
- ○ लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न पत्र पूरा नहीं कर पाती थी।

II. बच्चे पेड़ की डालियों पर झूला झूलकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते थे, वे क्या गाते थे -

III. पाठ पढ़िए और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इला की कशीदाकारी में खास बात क्या थी?
2. इला ने वह सब अपने पैरों से करना सीखा था जो हम हाथों से करते हैं। वे सभी काम क्या हैं? बताइए और लिखिए।

लिखिए

1. इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था? अपने उत्तर के कारण लिखिए।
2. अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम कर देते और उसको कुछ

SCERT TELANGANA

करने का मौका नहीं देते, तो क्या इला पैर के अँगूठे से काम करना सीख पाती? नहीं, तो फिर वह क्या करती।

3. इला परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। इस वाक्य से आप क्या समझते हैं?

शब्द भंडार

1. इस पाठ में सिलाई-कढ़ाई से संबंधित कई शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाइए। अब देखिए कि इस पाठ को पढ़कर आपने कितने नए शब्द सीखे हैं।

2. "कभी-कभार वह 'विष-अमृत' के खेल में शामिल हो जाती।" उपर्युक्त पंक्ति में एक दूसरे का विपरीतार्थक शब्द आया है। उसे पहचान कर लिखिए।

- ऐसे ही विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग करते हुए कम-से-कम पाँच वाक्य बनाइए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. छब्बीस साल की इला अब समझिए 30-35 साल की हो गई है। वह सफलता की कितनी सीढ़ियाँ चढ़ चुकी होगी? बताइए और कहानी को आगे बढ़ाइए।

प्रशंसा

पैरा-ओलंपिक खेल ओलंपिक खेलों का ही एक भाग है, जो कुदरत को चुनौती मानकर प्रतिभा दिखानेवाले खिलाड़ियों के लिए होते हैं। सितंबर 2012 के लंदन पैरा-ओलंपिक खेलों में कर्नाटक के 24 वर्षीय गिरीश ने पुरुषों की 1.74 मीटर की ऊँचाई को लाँघकर हाई जंप में रजत-पदक जीत लिया। श्री गिरीश की प्रशंसा करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

I. (क) इन खेलों से मन भर जाता था।

(ख) वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। मन और घुटने शरीर के अंग

SCERT TELANGANA

हैं। शरीर के अंगों से संबंधित तीन और मुहावरे लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

एक सादा रूमाल कपड़ा काटकर बनाइए । उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई कीजिए।

जंजीर

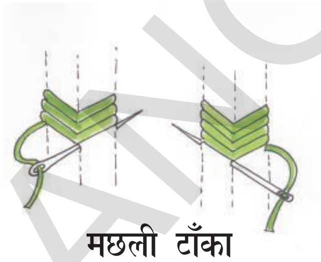

मछली टाँका

भरवाँ टाँका

उल्टी बखिया

ये काम कक्षा के लड़के-लड़कियाँ सब करें।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटा लेख लिख सकता/सकती हूँ।		

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

12. बाघ आया उस रात

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. लड़की क्या सपना देख रही होगी?
3. यदि कभी आपने ऐसी कल्पना की है तो उसके बारे में बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह कविता पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

''वो इधर से निकला
उधर चला गया ''
वो आँखें फैलाकर
बतला रहा था -
''हाँ बाबा, बाघ आया उस रात,
आप रात को बाहर न निकलो!
जाने कब बाघ फिर से आ जाए!''
''हाँ, वो ही..ी..ी ! वो ही जो
उस झरने के पास रहता है
वहाँ अपन दिन के वक्त
गए थे न एक रोज़?
बाबा, उधर ही तो रहता है
बाबा, उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है...''
दूसरा बालक बोला -
''बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ़्तर में
न कॉलेज में..''
छोटू बोला -
''स्कूल में भी नहीं...
पाँच-साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
''अब रात को बाहर होकर
बाथरूम न जाना ''!

नागार्जुन

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. जब हम कविता के ज़रिए कोई बात कहते हैं तो आम तौर पर शब्दों के क्रम को बदल देते हैं। जैसे कविता का शीर्षक है ''बाघ आया उस रात'' गद्य शैली में वह ''उस रात बाघ आया''। ऐसा क्यों किया जाता होगा?
2. इस कविता के लिए कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए।
3. इस कविता में बताया गया है

    बाघिन सारा दिन पहरा देती है

    बाघ या तो सोता है

    या बच्चों से खेलता है ....

    इन पंक्तियों के आधार पर बताइए कि आपके घर में आपके माता-पिता या भाई-बहन क्या-क्या काम करते हैं?

पढ़िए

I. जैसा हमारा परिवार वैसा ही बाघ का परिवार। कविता की किन-किन पंक्तियों के द्वारा आपको बाघ के परिवार का पता चलता है। लिखिए।

II. इस किताब की दूसरी कविताएँ भी पढ़िए और शब्दों के क्रम में आए बदलाव पर गौर कीजिए।

जैसे - वहाँ अपन दिन के वक्त गए थे न एक रोज़

इस वाक्य को गद्य में इस प्रकार लिख सकते हैं।

एक दिन हम वहाँ दिन के समय गए थे न।

ऐसे ही चार वाक्यों की सूची बनाइए।

III. कविता पढ़िए और लिखिए कि काम तथा पढ़ाई से संबंधित स्थान का बोध किन पंक्तियों से होता है।

IV. कविता पढ़कर लिखिए।

1. वो आँखें फैलाकर क्या बतला रहा था?
2. बाघिन सारा दिन क्या काम करती है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. जंगल का राजा बाघ या दूसरे जीवों का शिकार मना है। फिर भी चोरी छिपे इन बाघों को मारा जा रहा है। इनको बचाने के लिए आप क्या कोशिश करेंगे? लिखिए।
2. बाघ या जंगली जानवर पड़ोस के गाँवों में कभी-कभी आते हैं। ऐसा क्यों होता है?
3. उस रात को और क्या-क्या हुआ होगा?अपने साथियों से बातचीत करके लिखिए।

शब्द भंडार

1. नीचे दिये गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान और अर्थ में परिवर्तन न करते हुए शब्द बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।

   उदा : वो उधर से निकला।

   वह उधर से निकला।

   (अ) ''वहाँ अपन दिन के वक्त गए थे न एक रोज़।''

   (आ) ''पाँच साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया''

2. पाँच साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया।

   'आगाह किया' का मतलब क्या हो सकता है?

   - सचेत किया
   - बताया
   - मनोरंजन किया
   - समझाया

3. नीचे दिए गए शब्दों के लिए पर्याय शब्द बक्से में से चुनकर लिखिए।

   (अ) आँख ....

   (आ) रात ....

   (इ) वक्त ....

   (ई) दिन ....

नेत्र	रात्रि
दिवस	काल
वासर	नयन
निशा	समय

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

एक दिन आपके गाँव / मुहल्ले में अचानक बाघ आ जाता है। इस घटना के बारे में एक 'समाचार' लिखिए।

प्रशंसा

दूरदर्शन पर एनिमल प्लानेट, डिस्कवरी चैनेल या नेशनल जियोग्राफिक चैनल पर समुद्री जीव-जंतुओं पर प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रमों के महत्व के बारे में लिखिए।

भाषा की बात

1. वो आँखें फैलाकर बतला रहा था।

उपर्युक्त वाक्य में ''आँखें फैलाना'' मुहावरे का प्रयोग हुआ है। नीचे आँख से संबंधित कुछ मुहावरे दिये गये हैं। इनके अर्थ बताइए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

- आँख लगना
- आँख दिखाना
- आँख मूँदना
- आँख बचाना
- आँखें भर जाना
- सिर आँखों पर बैठाना

2. दिये गये उदाहरण को ध्यान से पढ़िए ।

उदाः बाघ - बाघिन

नीचे दी गई वर्ग पहेली में से अक्षरों को जोड़कर ऐसी ही अन्य जोड़ियाँ बनाइए-

बै	ल	कु	ति	या	चू
गा	बा	त्ता	घ	हा	हा
य	ऊँ	चु	हि	या	थी
ऊँ	ट	नी	न	बे	घ
घो	ड़ा	ह	थि	नी	मो
ड़ी	ज	मो	र	नी	र

SCERT TELANGANA

परियोजना कार्य

जंगल में रहने वाले जानवरों से संबंधित चित्र इकट्ठा कीजिए। उनकी विशेषता बताइए और एक चित्रात्मक पुस्तक तैयार कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता लय के साथ सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं की भाव सहित व्याख्या कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के शब्दों से तुकबंद वाक्य लिख सकता/सकती हूँ।		

वन्य जीवों की सुरक्षा कीजिए।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

13. चिट्ठी का सफ़र

सोचिए-बोलिए

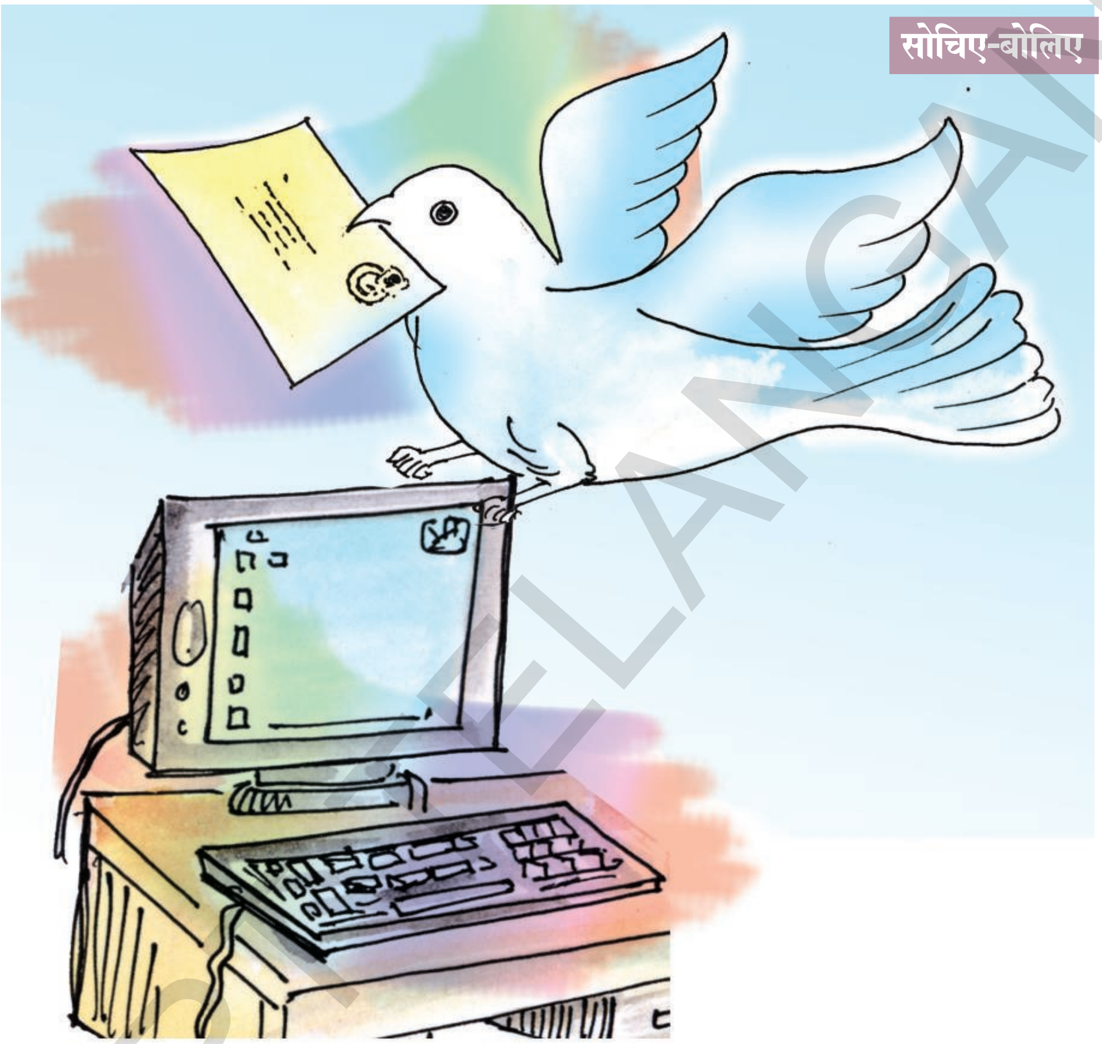

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. कबूतर क्या कर रहा है?
3. चिट्ठी पहुँचाने के लिए किन-किन साधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

अपनी दस-बारह साल की ज़िंदगी में तुमने कुछ पत्र लिखे ही होंगे। वे पत्र अपने सही पते और समय पर किस तरह पहुँचे होंगे - यह बहुत-सी बातों पर निर्भर करता है। जैसे कि, चिट्ठी किस स्थान से किस स्थान पर भेजी जा रही है, संदेश पहुँचाने की कितनी जल्दी है, तुमने पूरा और ठीक पता लिखा है कि नहीं, तुमने उस पर डाक टिकट लगाया है कि नहीं, आदि। अब प्रश्न यह उठते हैं कि -

- आखिर चिट्ठी पर डाक टिकट लगाया ही क्यों जाए?
- पूरे और ठीक पते से क्या मतलब है?
- ज़रूरत पड़ने पर संदेश को जल्दी कैसे पहुँचाया जाए?
- स्थान बदलने से चिट्ठी के पहुँचने पर क्या असर पड़ता है?

इनमें से कुछ सवालों के लिए ज़रा नीचे दिए गए लिफ़ाफ़ों को गौर से देखिए।

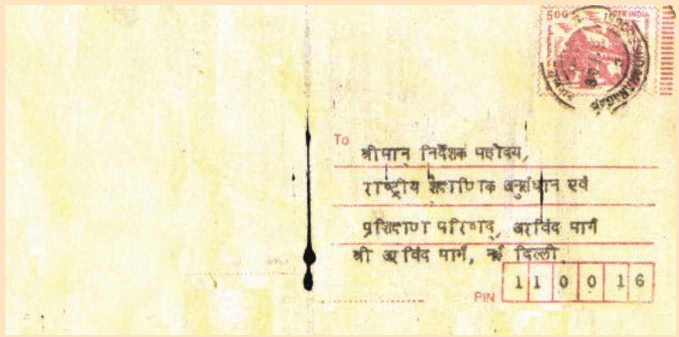

SCERT TELANGANA

ये दोनों पते किस तरह से भिन्न हैं? गांधीजी को भेजे गए पत्र में पते की जगह पर लिखा है - ''महात्मा गांधी, जहाँ हो वहाँ वर्धा।'' जबकि लिफ़ाफे पर इमारत या संस्थान से लेकर शहर तक का नाम लिखा हुआ है। पते में सबसे छोटी भौगोलिक इकाई से शुरू करके बड़ी की ओर बढ़े हैं। छोटी से बड़ी भौगोलिक इकाई का मतलब यह हुआ कि घर के नंबर के बाद गली-मोहल्ले का नाम, फिर गाँव, कस्बे, शहर के जिस हिस्से में है उसका नाम, फिर गाँव या शहर का नाम। शहर के नाम के बाद लिखे अंक को पिनकोड कहते हैं। हर जगह को एक पिनकोड दिया गया है। यह सोचने लायक बात है कि आखिर पिनकोड की ज़रूरत क्या है? हमारे देश में अनेक ऐसे कस्बे/गाँव/शहर हैं जिनके नाम एक जैसे हैं। पते के बाद पिन कोड लिखने से गंतव्य स्थान का पता लगाने में डाक छाँटने वाले कर्मचारियों को मदद मिलती है और पत्र जल्दी बाँटे जा सकते हैं।

पिनकोड की शुरूआत 15 अगस्त 1972 को डाक तार विभाग ने पोस्टल नंबर योजना के नाम से की। ज़ाहिर है कि गांधीजी को मिले इस पत्र और उन्हें मिले किसी भी पत्र पर पिनकोड का इस्तेमाल नहीं किया गया था। फ़र्क सिर्फ़ पिनकोड का ही नहीं है । समय के साथ डाक सेवाओं में निरंतर बदलाव और विकास होता जा रहा है ।

पिन शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर (**P**ostal **I**ndex **N**umber) का छोटा रूप है। किसी भी जगह का पिनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास स्थानीय अर्थ है।

उदाहरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी को भेजे गए लिफ़ाफ़े

पर लिखा अंक-110016

इससे पहले स्थान पर दिया गया अंक यह बताता है कि यह पिनकोड दिल्ली,हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, पंजाब या जम्मू-कश्मीर का है। अगले दो अंक यानि 10 यह तय करते हैं कि यह दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के उपक्षेत्र दिल्ली का कोड है। अगले तीन अंक यानी 016 दिल्ली उपक्षेत्र के ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।

- अब तुम्हारा स्कूल जहाँ पर है उस इलाके का पिनकोड पता करो।
- अपने घर के इलाके का पिनकोड नंबर भी पता करो।

पिनकोड की जानकारी डाकघर से प्राप्त की जा सकती है। डाकघरों में टेलीफोन डाइरेक्टरी की तरह पिनकोड डाइरेक्टरी भी मिलती है। तुम्हारे इलाके का पिनकोड तो तुम्हारे मोहल्ले में लगे बाक्स पर ही लिखा होगा।

- प्रमुख जगहों / शहरों के पिनकोड नंबर तुम्हें कहाँ-कहाँ मिल सकते हैं?

SCERT TELANGANA

टिकट-संग्रह का शौक काफ़ी लोकप्रिय है। धीरे-धीरे इसमें टिकट-संग्रह के अलावा डाक से जुड़ी और बहुत-सी चीज़ें शामिल हो गई हैं। इसको डाक का विज्ञान कहना गलत नहीं होगा। क्या तुम जानते हो इस विज्ञान को क्या नाम दिया गया है?

. . . .

बहुत पुराने समय में कबूतरों के द्वारा संदेश भेजे जाते थे। जब संदेशवाहक कबूतरों की बात हो रही है तो उन इंसानों की बात कैसे न हो जो ऐसे समय डाक पहुँचाने का काम करते रहे, जब संचार और परिवहन के साधन बेहद सीमित थे! बात हो रही है उन हरकारों की जो पैदल ही आम आदमी तक चिट्ठी-पत्री पहुँचाने का काम करते रहे। राजा, महाराजाओं के पास घुड़सवार हरकारे हुआ करते थे। हरकारों को न सिर्फ़ हर तरह की जगहों पर पहुँचना होता था, बल्कि डाक की रक्षा भी करनी होती थी। डाकू, लुटेरों या जंगली जानवरों की चपेट में आने का डर हमेशा बना रहता था। आज भी भारतीय डाक सेवा दुर्गम व पहाड़ी इलाकों तक डाक पहुँचाने के लिए हरकारों पर निर्भर करती है। जम्मू-कश्मीर के लद्दाख खंड में पदम (ज़ंस्कार) जैसी कई जगहें हैं जहाँ हरकारे डाक पहुँचाते हैं।

आजकल तो संदेश भेजने के नए-नए और तेज़ साधन आसानी से उपलब्ध हो गए हैं। डाक बाँटने में हवाई जहाज़, पानी के जहाज़ और जाने कौन-कौन से साधन इस्तेमाल किए जा रहे हैं। डाक-विभाग भी पत्र, मनीआर्डर के साथ-साथ ई-मेल, बधाई कार्ड आदि लोगों तक पहुँचा रहा है। कबूतरों की उड़ान से लेकर हवाई डाक सेवाओं

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

तक का सफ़र दिलचस्प करने वाला है। यह सोचकर आश्चर्य होता है कि कबूतर जैसा पक्षी संदेशवाहक भी हो सकता है। कबूतर की कई प्रजातियाँ होती हैं और ये सभी संदेश लाने ले जाने का काम नहीं कर सकतीं। गिरहबाज़ या हूमर वह प्रजाति है जिसे प्रशिक्षित करके डाक संदेश भेजने के काम में लाया जाता है। आखिर कबूतर अपना रास्ता ढूँढ़ कैसे लेता है? उन प्रवासी पक्षियों के बारे में सोचो और पता करो कि वे कैसे सैकड़ों मील का रास्ता और सही जगह तय कर पाते हैं।

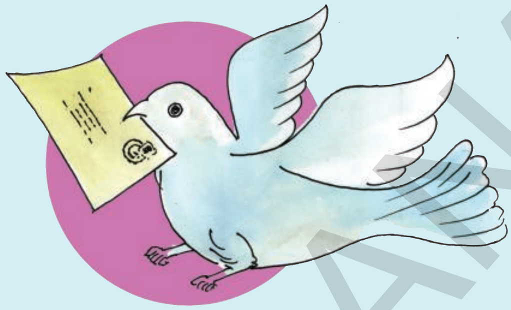

उड़ीसा पुलिस खास तौर पर हूमर कबूतरों का इस्तेमाल राज्य के कई दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लिए कर रही है। कानून-व्यवस्था, संकट और अन्य मौकों पर संदेश के लिए ये कबूतर बहुत उपयोगी साबित हुए। कबूतरों की संदेश सेवा बहुत सस्ती है और उन पर खास खर्च नहीं आता है। इन कबूतरों का जीवन 15-20 साल होता है और 8-10 साल तक वे बहुत अच्छा काम करते हैं। स्वस्थ कबूतर एक दिन में एक हज़ार किलोमीटर तक का सफ़र कर सकता है। यदि कोई महत्वपूर्ण संदेश पहुँचाना हो तो दो कबूतरों को भेजा जाता है ताकि बाज के हमले जैसी अनहोनी स्थिति में भी दूसरा कबूतर संदेश पहुँचा दे।

शायद यह पढ़कर तुम एक ऐसे कबूतर की कहानी पढ़ना चाहो जो दूसरे विश्व युद्ध में संदेश पहुँचाता था। इस कबूतर की कहानी नेशनल बुक ट्रस्ट से अँग्रेज़ी में छपी एक किताब में दी गई है। किताब का नाम है 'ग्रेनेक', जो कि इस किताब के हीरो का भी नाम है। अगर तुम हिंदी में पढ़ना चाहते हो तो क्यों न नेशनल बुक ट्रस्ट को पत्र लिखो कि वे इस किताब को हिंदी में भी छापें। यह रहा उनका पता - नेशनल बुक इंडिया, ए-5 पार्क, नई दिल्ली- 110016

सुनिए-बोलिए

1. गांधी जी को सिर्फ उनके नाम और शहर के नाम के सहारे पत्र कैसे पहुँच गया होगा?
2. अगर एक पत्र में पते के साथ किसी का नाम न हो, तो क्या पत्र ठीक जगह पर पहुँच जाएगा? इसमें क्या परेशानी है? बताइए।
3. पते में पिनकोड न होने से क्या समस्याएँ आ सकती हैं?
4. यदि आपको पत्र लिखने को कहा जाएगा, तो आप किसे पत्र लिखना पसंद करेंगे? कौन-सी बात लिखेंगे।

पढ़िए

I. 'डाकघर' से संबंधित शब्दों को पाठ में रेखांकित कर लिखिए।

II. संदेश भेजने में उपयोगी कबूतर की प्रजातियों के नाम लिखिए।

III. डाक बाँटने में किन-किन साधनों का उपयोग होता है, पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।

IV. पाठ पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पूरे और ठीक पते से क्या मतलब है? उन्हें किस क्रम में लिखना चाहिए?
2. पिनकोड की जानकारी आप कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं? पाठ पढ़कर बताइए।
3. हरकारों को किस-किस तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता था?

लिखिए

1. स्थान बदलने से पत्र के पहुँचने पर क्या असर पड़ता है?
2. डाक टिकटें और पुराने पत्रों को इकट्ठा करने से क्या-क्या जानकारी प्राप्त कर सकते हैं?
3. चिट्ठी पर डाक टिकट क्यों लगाया जाता है? किस आधार पर लगाया जाता है?
4. आपके विचार में क्या आगे चलकर भी पत्र का उपयोग होगा? यदि होगा तो किसलिए होगा?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

I नीचे शब्दकोश का एक अंश दिया गया है जिसमें 'संचार' शब्द का अर्थ भी दिया गया है।

संगीतज्ञ - संगीत जानने वाला, संगीत की कला में निपुण।

संग्रह - 1. जमा करना, इकट्ठा करना, एकत्र करना, संचय।
प्रयोग. दीपक आजकल पक्षियों के पंखों का संग्रह करने में लगा है।
2. इकट्ठी की हुई चीजों का समूह या ढेर, संकलन जैसे - टिकट-संग्रह, निबंध संग्रह।

संचार - 1. किसी एक संदेश को दूर तक या बहुत-से लोगों तक पहुँचाने की क्रिया या प्रणाली, कम्यूनिकेशन। उ. टेलीफ़ोन, टेलीविजन, सेटेलाइट आदि संचार के माध्यमों से दुनिया आज छोटी हो गई है।
2. किसी चीज़ का प्रवाह, चलना, फैलना, जैसे- शरीर में रक्त का संचार, विद्युत का संचार।

(1) बताइए कि कौन-सा अर्थ पाठ के संदर्भ में ठीक है?
(2) शब्दकोश में दिए गए शब्दों के साथ क्या-क्या जानकारी दी गई होती है?

II **भारत के कुछ प्रमुख शहरों के नाम और उनका पिनकोड लिखिए।**

1. नई दिल्ली - **110016**
2. कलकत्ता ....
3. ....
4. ....
5. ....

III **रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) यह सोचने लायक <u>बात</u> है।
(2) बहुत पुराने समय में <u>कबूतरों</u> के द्वारा संदेश भेजे जाते थे।
(3) वह <u>पता</u> किस तरह से भिन्न है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

हमारे जवान देश की रक्षा के लिए अपने परिवार से बहुत दूर दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में सीमा पर तैनात रहते हैं। जब उन्हें अपने परिवार वालों की चिट्ठी मिलती है तो उन्हें किस प्रकार खुशी होती होगी। कल्पना करके नीचे दी गयी कविता आगे बढ़ाइए -

चिट्ठी आई है, मेरी
चिट्ठी आई है ....
माँ ने भेजा है ....
पिता का मिला है आशीर्वाद

SCERT TELANGANA

भाई ने ....
....
....
....

प्रशंसा

पत्र पहुँचाने के लिए कई मुश्किलों का सामना करते हुए डाकिया हमें चिट्ठी, पत्र, पार्सल पहुँचाता है। डाकिये के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

निम्न वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और उनके अंतर को समझिए।

(1) मैंने पूरा और ठीक पता लिखा था।
(2) मैंने पूरा और ठीक पता लिखा है।
(3) मैं पूरा और ठीक पता लिखूँगा।

अब आप **देखा था**, **पढ़ी है**, **खेलूँगा**, जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए उपर्युक्त तरीके से तीन-तीन वाक्य बनाइए।

परियोजना कार्य

चिट्ठी भेजने के लिए आमतौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफ़ाफ़ा इस्तेमाल किया जाता है । डाकघर जाकर इनका मूल्य पता करके लिखिए।

पोस्टकार्ड ....
अंतर्देशीय पत्र........................
लिफ़ाफ़ा ....

डाक टिकट इकट्ठा कीजिए। एक रुपये से लेकर दस रुपये तक के डाक टिकटों को क्रम से कॉपी में चिपकाइए। इकट्ठा किए गए डाक टिकटों पर अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर चिट्ठी के सफ़र के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी

उपवाचक

शिमला की माल रोड पर जनरल पोस्ट ऑफ़िस है। उसी पोस्ट ऑफ़िस के एक कमरे में डाक छाँटने का काम चल रहा है। सुबह के 11.30 बजे हैं, खिड़की से गुनगुनी धूप छनकर आ रही है। इस धूप का मज़ा लेते हुए दो पैकर और तीन महिला डाकिया फटाफट डाक छाँटने का काम कर रहे हैं। वहीं पर मैंने सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिया कँवरसिंह जी से बात की। यही बातचीत आगे दी जा रही है।

- **आपका शुभ नाम**

  मेरा नाम कँवरसिंह है। मैं हिमाचल प्रदेश से शिमला ज़िले के नेरवा गाँव का निवासी हूँ। मेरी उम्र पैंतालीस साल है।

- **आपके परिवार में कौन-कौन हैं? उनके बारे में कुछ बताइए।**

  मेरे चार बच्चे हैं। तीन लड़कियाँ और एक लड़का। दो लड़कियों की शादी हो चुकी हैं। मेरा एक और बेटा भी था। वह मेरे गाँव में एक पहाड़ी से लकड़ियाँ लाते हुए गिर गया जिससे उसकी मौत हो गई।

- **आपके बेटे के साथ जो हुआ उसका मुझे बहुत दुख है। आपके इलाके में इस तरह की घटनाएँ क्या अक्सर होती हैं?**

  जी, ऐसी घटनाओं का होना असाधारण नहीं है। यहाँ हर साल तिरछी ढलानों या ढांको से घास काटते हुए कई औरतें गिर कर मर जाती हैं। फिर भी यहाँ ऐसे ही रास्ते से चलना पड़ता है क्योंकि दूसरे कोई रास्ते होते ही नहीं। हमारे गाँव में अभी तक बस नहीं पहुँच पाती है। हिमाचल में हज़ारों ऐसे गाँव हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँच सकते हैं।

- **फिर आपके बच्चे पढ़ने कैसे जाते होंगे?**

  मेरे बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते हैं। स्कूल लगभग पाँच किलोमीटर दूर है। मेरी एक लड़की दसवीं तक पढ़ी है, दूसरी बारहवीं तक। तीसरी लड़की बारहवीं कक्षा में पढ़ रही है। बेटा दसवीं में पढ़ता है।

- **आप जहाँ काम करते हैं वहाँ आपके अलावा और कौन-कौन हैं? क्या आपको डाकिया ही कहकर बुलाते हैं?**

  पहले मैं भारतीय डाक सेवा में ग्रामीण डाक सेवक था। अब मैं पैकर बन गया हूँ। पर हूँ वही नीली वर्दी वाला डाक सेवक।

SCERT TELANGANA

- **डाक सेवक को क्या-क्या करना होता है?**
मुझे! मुझे बहुत कुछ करना होता है। चिट्ठियाँ,रजिस्ट्री पत्र, पार्सल, बिल लोगों की पेंशन आदि छोड़ने गाँव-गाँव जाता हूँ।
- **क्या यह सब अभी भी करना पड़ता है? क्योंकि अब तो सूचना और संदेश देने के बहुत से नए तरीके आ गए हैं।**
शहरों में भले ही आज संदेश देने के कई साधन आ गए हैं। जैसे-फ़ोन,मोबाईल, ई-मेल वगैरह, लेकिन गाँव में तो आज भी संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा ज़रिया डाक ही है। इसलिए गाँव में लोग डाकिए का बड़ा आदर और सम्मान करते हैं। अपनी चिट्ठी आदि पाने के लिए डाकिए का इंतजार करते हैं।
- **हमने सुना है कि हमारी डाक सेवा दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है, यह भला कैसे?**
सुना तो आपने बिल्कुल ठीक है। हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी। केवल पाँच रुपये में देश के किसी भी कोने में हम चिट्ठी भेज सकते हैं। पोस्टकार्ड तो केवल पचास पैसे का ही है। यानी पचास पैसे में भी हम देश के हर कोने में अपना संदेश भेज सकते हैं।
- **आपको अपनी नौकरी में बहुत मजा आता होगा?**
मुझे अपनी नौकरी बहुत अच्छी लगती है। जब मैं दूर नौकरी करने वाले सिपाही का मनीऑर्डर लेकर उसके घर पहुँचता हूँ तो उसके बूढ़े माँ-बाप का खुशी भरा चेहरा देखते ही बनता है। ऐसे ही जब किसी का रजिस्टरी पत्र पहुँचाता हूँ जिसमें कभी रिज़ल्ट, कभी नियुक्ति पत्र होता है तो लोग बहुत खुश होते हैं। बूढ़े दादा और बूढ़ी नानी तो पेंशन के पैसे मिलने पर बहुत खुश होते हैं। छह महीनों तक, वे मेरा इसके लिए इंतजार करते हैं। हिमाचल में बूढ़े लोगों को पेंशन हर छह महीनों के बाद इकट्ठी ही दी जाती है।
- **आप क्या शुरू से इसी डाकघर में काम कर रहे हैं?**
शुरू में तो मैंने लाहौल स्पीति जिले के किब्बर गाँव में तीन साल तक नौकरी की है। यह हिमाचल का सबसे ऊँचा गाँव है। इसके बाद पाँच साल तक इसी जिले के काज़ा में और पाँच साल तक किन्नौर जिले में नौकरी की है। उस वक्त इन गाँवों में टेलीफोन नहीं थे। बसें भी सिर्फ़ मुख्यालयों तक ही जाती थीं। अभी भी कई ऐसे गाँव हैं जहाँ न तो बस जाती है और न ही वहाँ टेलीफ़ोन है। ऐसी जगह में ग्रामीण डाक सेवक का बहुत मान किया जाता है।
- **आप पहाड़ी इलाके में रहते हैं। ज़ाहिर है डाक पहुँचाना आसान काम तो नहीं होगा।**
हाँ, मुश्किलें तो आती ही हैं। जब मैं किन्नौर जिले के मुख्यालय रिकांगपिओ में नौकरी करता था तो सुबह छह बजे मेरी ड्यूटी शुरू हो जाती थी। मैं छह बजे शिमला जाने वाली बस में डाक का बोरा रखता था और रात को आठ बजे शिमला से आने वाली बस से डाक का बोरा उतारता था। पैकर को ये सब काम करने पड़ते हैं। किन्नौर और लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश

के बहुत ठंडे तथा ऊँचे जिले हैं। इन जिलों में अप्रैल महीने में भी बर्फ़बारी हो जाती है। बर्फ़ में चलते हुए पैरों को ठंड से बचाना पड़ता है। वरना स्नोबाइट हो जाते हैं जिससे पैर नीले पड़ जाते हैं और उनमें गैंगरीन हो जाती है जिससे उँगलियाँ झड़ सकती हैं। इन जिलों में मुझे एक घर से दूसरे घर तक डाक पहुँचाने के लिए लगभग 26 किलोमीटर रोज़ाना चलना पड़ता था। हिमाचल में एक गाँव से दूसरे गाँव छोटे-छोटे होते हैं। एक गाँव में बस आठ से दस या कभी-कभी छह-सात घर ही होते हैं। इसलिए चलना काफ़ी पड़ता है। चलना तो खैर हमारी आदत में ही शामिल हो चुका है ग्रामीण डाकिए की जिंदगी में तो चलना ही चलना है।

- **आपने बताया था कि पहले आप डाक सेवक थे, अब पैकर हैं, इसके आगे भी कोई प्रमोशन है क्या?**

पैकर के बाद डाकिया बन सकते हैं। बस एक इम्तिहान पास करना पड़ता है। अभी तो काम के हिसाब से हमारा वेतन काफ़ी कम रहता है। सारा दिन कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले बाबू का वेतन कहीं ज़्यादा होता है। पैकर का वेतन बाबू के जितना ही हो जाता है। अब तो डाकिए की नौकरी में लगना भी बहुत मुश्किल हो चुका है। हममें से जितने डाकिए रिटायर हो चुके हैं, उनकी जगह नए डाकियों को नहीं रखा जा रहा है। इससे पुराने डाकियों पर काम का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। न जाने, आने वाला समय कैसा होगा?

- **काम के दौरान कभी कोई बहुत ख़ास बात हुई हो?**

एक घटना आपको सुनाता हूँ। मेरा तबादला शिमला के जनरल पोस्ट ऑफिस में हो गया था। वहाँ मुझे रात के समय रैस्ट हाउस और पोस्ट ऑफिस चौकीदारी का काम दिया गया था। यह 1998 की बात है। 29 जनवरी को रात लगभग साढ़े दस बजे का समय था। बाहर से किसी ने पोस्ट ऑफिस का दरवाज़ा खटखटाया। मैंने पूछा 'कौन है' जवाब आया 'दरवाजा खोलो तुमसे बात करनी है।' मैंने दरवाज़ा खोला तो अचानक पाँच-छह लोग अंदर घुसे और मुझे पीटना शुरू कर दिया। मैंने पूछा क्यों पीट रहे हैं? तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। सारे ऑफ़िस की लाईटे बंद कर दी। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता मेरे सिर कर किसी भारी चीज़ से कई बार मारा जिससे मेरा सिर फट गया। मैं लगातार चिल्लाता रहा। उसके बाद मै बेहोश हो गया और मुझे कुछ भी पता न चला। अगले दिन जब मुझे होश आया तो मैं शिमला के इंदिरा गाँधी मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में दाखिल था। सिर में भयंकर दर्द हो रहा था। उन दिनों मेरा 17 साल का बेटा मेरे साथ ही रहता था। उसी से पता चला कि मेरे चिल्लाने की आवाज सुनकर लड़का और ऑफ़िस के दूसरे लोग जो नज़दीक ही रहते थे, दरवाजों के शीशे तोड़कर अंदर आए और मुझे अस्पताल पहुँचाया। मेरे सिर पर कई टाँके लगे थे। उसकी वजह से आज भी मुझे एक आँख से दिखाई नहीं देता है। सरकार ने मुझे जान पर खेलकर डाक की चीज़ें बचाने के लिए 'बेस्ट पोस्टमैन' का इनाम दिया। यह इनाम 2004 में मिला। इस इनाम में 500 रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। मैं और मेरा परिवार बहुत खुश हुए। आज भी मैं गर्व से कहता हूँ - ''मैं बेस्ट पोस्ट मैन हूँ।''

-प्रतिमा शर्मा

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

14. बिशन की दिलेरी

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. यह 26 जनवरी के दिन पुरस्कार प्राप्त बालक का चित्र है। इसे पुरस्कार क्यों दिया गया होगा? बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

सुबह का समय था। पहाड़ों के पीछे से सूरज झाँक रहा था। दस वर्ष का बिशन घर से बाहर निकल आया। वह रोज़ इसी समय, इसी रास्ते से कर्नल दत्ता के फ़ार्म हाउस पर जाता है। कर्नल दत्ता की पत्नी पढ़ाई में उसकी मदद करती हैं। फ़ार्म से लगे सेबों के बाग में कीटनाशक दवा का छिड़काव हो रहा था। बहुत तड़के काम शुरू हो जाता था।

बिशन पगडंडी से अभी सड़क तक आ ही रहा था कि उसे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने इधर-उधर देखा, कोई भी दिखाई नहीं दिया। वह कुछ ही दूर चला था कि उसे फिर गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। इस बार एक नहीं, दो-तीन गोलियाँ एक साथ चली थीं। गोलियों की आवाज़ से पूरी घाटी गूँज गई । पंछी घबरा गए। आसमान में गोल-गोल चक्कर काटने लगे। बिशन सहमकर पेड़ों की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया।

बिशन जहाँ खड़ा था, वहीं चुपचाप खड़ा रहा। उसे वहाँ से सीढ़ीनुमा खेत और फलों के बाग साफ़ दिखाई दे रहे थे। खेतों में काम करते हुए किसान भी दिखाई दे रहे थे। फ़सल तैयार खड़ी थी । सुबह की हल्की धूप में खेत सुनहरे दिखाई दे रहे थे। बिशन अभी सोच ही रहा था कि गोली किसने और क्यों चलाई होगी कि तभी एक और गोली की आवाज़ आई। एकाएक बिशन को गोली चलने का कारण समझ में आ गया। जब फसल पक जाती है तब गेहूँ के खेतों में दाना चुगने ढेरों तीतर आ जाते हैं। शिकारी इस बात को जानते हैं। इसलिए वे सुबह-सुबह ही तीतर मारने चले आते हैं। पिछले साल भी शिकारियों ने इसी तरह बहुत से तीतर मारे थे। कुछ तीतर तो वे उठा ले गए, बाकी को वहीं छोड़ गए। खेतों को काटते समय किसानों को बहुत से मरे और ज़ख्मी तीतर मिले।

बिशन ने सोचा, ''कितना दुख पहुँचाने वाला काम करते हैं ये शिकारी! वह समझ गया कि शिकारी ही तीतरों पर गोलियाँ चला रहे हैं। इसलिए वह पेड़ों के बीच से निकलकर खेतों के किनारे-किनारे चलने लगा। वह चलते-चलते सोच रहा था कि इन शिकारियों को सबक सिखाया जाना चाहिए। लेकिन उन्हें कैसे सबक सिखाया जाए। यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। तभी उसके पाँव के पास सरसराहट-सी हुई। उसने देखा एक घायल तीतर गेहूँ की बालियों के बीच फँसा छटपटा रहा है। बिशन वहीं घुटनों के बल बैठ गया उसने घायल तीतर को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन घबराया हुआ तीतर छिटककर खेत के और अंदर चला गया। बिशन जानता था कि शिकारी इस तीतर को ढूँढ़ नहीं पाएँगे और घायल तीतर यहीं तड़प-तड़पकर मर जाएगा। उसने स्वेटर उतारा और मौका देखकर तीतर पर डाल दिया। तीतर स्वेटर में फँस गया तो बिशन ने उसे पकड़ लिया। बिशन ने उसे अपने सीने से चिपका लिया और खेत में से निकलकर पहाड़ी की ओर भागने लगा। वह इतना तेज़ चल रहा था मानो उसके पंख लग गए हों।

कर्नल दत्ता के घर के रास्ते में एक तरफ़ गेहूँ के खेत थे और दूसरी तरफ़ कँटीले तारों की बाड़ । बिशन वैसे तो कँटीले तारों की बाड़ में से

SCERT TELANGANA

होकर निकल सकता था, परंतु इस समय वह दोनों हाथ से तीतर को पकड़े हुए था। तीतर को सँभालना बहुत ज़रूरी था। इसलिए वह खेतों के साथ-साथ छिप-छिपकर चलने लगा ताकि शिकारी उसे देख न लें।

वह कुछ ही दूर गया कि पीछे से भारी-सी आवाज़ आई, ''लड़के, रुक जा, नहीं तो गोली मार दूँगा।''

लेकिन बिशन नहीं रुका। वह चुपचाप चलता रहा।

''रुकता है या नहीं।'' उस आदमी ने दुबारा चिल्लाकर कहा। तब तक बिशन कँटीले तारों के पास आ गया था। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। आगे बढ़ना मुश्किल लग रहा था। लेकिन फिर भी वह रुका नहीं और न ही उसने कोई जवाब दिया।

तभी बिशन को भारी-भरकम जूतों की आवाज़ सुनाई दी, जो तेज़ी से उसके पास आती जा रही थी । पीछे से आ रहा शिकारी गुस्से में जोर-जोर से चिल्ला रहा था, ''मैं तुझे देख लूँगा, तू मेरा शिकार चुराकर नहीं ले जा सकता!''

बिशन के लिए आगे निकल भागने का रास्ता नहीं था। अगर वह सड़क से जाता तो शिकारी को साफ़ दिखाई दे जाता। इसलिए उसने खेतों के छोटे रास्ते से जाना तय किया। खेतों से आगे के रास्ते में काँटेदार झाड़ियाँ थीं। बिशन उसी रास्ते पर घुटनों के बल चलने लगा। बहुत सँभलकर चलने पर भी उसके हाथ-पाँव पर काँटों की बहुत-सी खरोंचें उभर आईं। खरोंचों से खून निकलने लगा। उसकी कमीज़ की एक आस्तीन भी फट गई। वह जानता था कि कमीज़ फटने पर उसे माँ से डाँट खानी पड़ेगी। पर बिशन को इस बात का संतोष था कि वह अब तक तीतर की जान बचाने में कामयाब रहा। झाड़ी के बाहर आकर वह सोचने लगा कि कैसे पहाड़ी के कोने-से फिसलकर नीचे पहुँचा जाए, लेकिन उस कोने में घास बहुत ज्यादा थी और ओस के कारण फिसलन भी। बिशन थककर वहीं एक किनारे बैठ गया। अभी वह बैठा ही था कि उसे पाँवों की आहट सुनाई दी। आहट सुनते ही वह उठकर दौड़ पड़ा। दौड़ते-दौड़ते वह आधी पहाड़ी पार कर चुका था। उसके कपड़े पसीने से तर-ब-तर हो गए, फिर भी वह रुका नहीं और किसी तरह दत्ता के फ़ार्म हाउस के पिछवाड़े पहुँच ही गया। पिछवाड़े दरवाज़ा खुला था। उसने ताड़ के पेड़ का सहारा लिया और फ़ार्म हाउस के अंदर पहुँच गया। तीतर को वह बड़ी सावधानी के साथ अपने सीने से लगाए हुए था।

फ़ार्म हाउस में खामोशी थी। बस, रसाई घर में प्रेशर कुकर की सीटी की आवाज़ आ रही थी। मुर्गियाँ अभी अपने दड़बे में थीं और गुलाब चंद सामने का बरामदा साफ़ कर रहा था।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

अचानक कर्नल साहब का अल्सेशियन कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। वह किसी अजनबी को देखकर ही इस तरह भौंकता है। बिशन समझ गया कि शिकारी इधर ही आ रहे हैं।

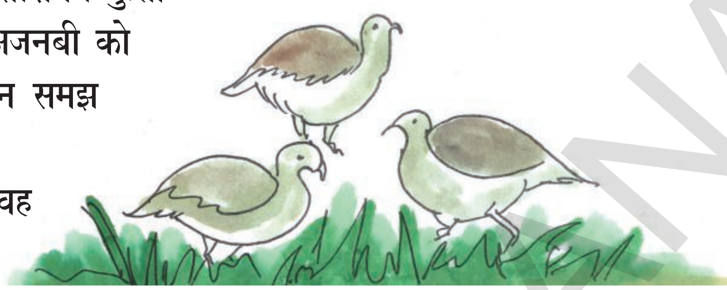

उसने इधर-उधर देखा ताकि वह तीतर को कहीं अच्छी तरह से छिपा सके। एक ओर शेड के नीचे बहुत सारा कबाड़ पड़ा था। उसी में एक टूटी टोकरी बिशन को दिखाई दे गई। ''ये ठीक है'' सोचते हुए उसने तीतर को टोकरी में रखकर स्वेटर से ढक दिया। घायल तीतर घबराया हुआ था इसलिए वह चुपचाप पड़ा रहा। तीतर को छुपाने के बाद बिशन ने सोचा कि अब बाहर चलकर देखना चाहिए। पर वह शिकारियों के सामने भी नहीं पड़ना चाहता था, इसलिए उसने छत पर चढ़कर बैठना ठीक समझा। बिना सीढ़ी के छत पर चढ़ना उसके लिए बहुत आसान काम था। वह अकसर इस शेड की ढलवाँ छत के सहारे ऊपर चढ़ जाता था। बिशन लकड़ी के खंभे पर बंदर की तरह छलाँग लगाकर लटक गया और ऊपर की ओर खिसकते-खिसकते छत पर जा पहुँचा। खपरैल की ढलावदार छत थी, इसलिए वह चिमनी के पीछे छिपकर बैठ गया ताकि वह किसी और को दिखाई न दे, लेकिन वह स्वयं सब कुछ देख सके। उसने देखा कि दो शिकारी इधर ही चले आ रहे हैं और उनको देखकर कर्नल साहब का अल्सेशियन कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा है।

कर्नल ने कुत्ते को डाँटा, ''चुप रहो।'' पर वह न माना। पिछले दोनों पाँवों पर खड़े हो वह उछल-उछलकर भौंकने लगा।

वे दोनों शिकारी करीब आ गए तो कर्नल ने रौबदार आवाज़ में पूछा, ''कौन हो तुम? यहाँ किसलिए आए हो?''''साहब, हम शिकारी हैं! हर साल यहाँ शिकार के लिए आते हैं।''

''अच्छा....तो तुम्हीं लोगों की गोलियों की आवाज़ें गूँज रही थीं सुबह से!''

''जी हाँ, हमारे पास लाइसेंस वाली बंदूकें हैं । सरपंच माधो सिंह भी हमें जानता है ।''

''तो तुम हर साल तीतरों का शिकार करते हो,'' कर्नल ने मज़ाक-सा उड़ाते हुए कहा।

''जी हाँ, तीतर भी मार लेते हैं कभी-कभी। अभी-अभी एक लड़का हमारे शिकार तीतर को लेकर आपके यहाँ आ छिपा है, हम उसे ही ढूँढ रहे हैं।''

''अच्छा, तुम जो इतने सारे तीतर मारते हो उनका क्या करते हो?'' कर्नल साहब ने पूछा।

''सीधी-सी बात है साहब, खाते हैं।'' दूसरे शिकारी ने जवाब दिया। फिर कुछ रुककर बोला, ''अब तो उस लड़के को ढूँढ़वा दीजिए साहब! वह इधर ही कहीं छुप गया है।''

कर्नल दत्ता ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और गुस्से से कहा, ''कैसे हो तुम लोग, हर साल आकर इतने तीतर मार डालते हो! कुछ को खा लेते हो, और बाकी को घायल करके यहाँ तड़प-तड़पकर मरने के लिए छोड़ जाते हो। जब फ़सल कटती है तब ढेरों मरे हुए तीतर मिलते हैं।''

SCERT TELANGANA

कर्नल दत्ता की बात सुनकर वे दोनों कुछ घबरा गए। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि कर्नल इस तरह उन्हें डाँट देंगे । कर्नल दत्ता ने उन्हें इतना ही कहकर नहीं छोड़ा, आगे बोले, पक्षियों को मारने और उससे ज़्यादा उन्हें इतना घायल करके छोड़ जाने में तो कोई बहादुरी नहीं है। अब तुम दोनों यहाँ से जा सकते हो। वे दोनों शिकारी बिना कुछ बोले मुड़े और वापस चल दिए।

कर्नल दत्ता ने गुलाब चंद से दवाई छिड़कने वाली मशीन लाने को कहा।

तभी बिशन छप्पर से शेड पर होता नीचे कूद पड़ा। उसने तीतर को उठा लिया और घर में घुसते ही मालकिन को पुकारने लगा, ''बहूजी! बहूजी! जल्दी आइए, यह बहुत ज़ख्मी है, आकर इसे देखिए!''

बिशन की आवाज़ सुनकर कर्नल दत्ता भी अंदर जा पहुँचे और बोले, ''अच्छा! तो तीतर चुराने वाला लड़का तू ही था!''

''क्या करता बाबूजी, इसे बहुत चोट लगी है! अगर मैं न लाता तो यह मर जाता!''

''अब तू इसका क्या करेगा?''

''इसे पालूँगा बाबूजी,'' बिशन ने कहा।

कर्नल साहब मुस्करा दिए। उन्होंने घायल तीतर को देखा। उसका एक पंख टूट गया था। अब शायद ही वह उड़ सके।

''जाओ, दवाइयों का बक्सा लेकर आओ।'' बिशन दौड़कर बक्सा ले आया।

कर्नल दत्ता ने तीतर के पैरों के ज़ख्म साफ़ किए। फिर दवाई लगा दी। पंख को फैलाकर टेप लगा दिया ताकि ज़्यादा हिले-डुले नहीं । फिर उन्होंने बिशन से कहा, ''बिशन, अगर तुम इसे गेंदे के पत्तों का रस दिन में दो-तीन बार पिलाओगे तो यह जल्दी ठीक हो जाएगा।''

तब तक बहूजी एक कटोरी में दलिया ले आई और तीतर को दलिया खिलाते हुए बोलीं, ''इसे रोज़ दलिया भी खिलाना बिशन, तीतर को दलिया बहुत पसंद होता है।''

''तब तो यह बिशन के पीछे-पीछे ही घूमता रहेगा,'' कर्नल ने हँसते हुए कहा।

''अच्छा बिशन, तुम जानते हो तीतर कैसे बोलता है?'' बहूजी ने पूछा।

बिशन ने अपने हाथों को मुँह पर रखकर तीतर की आवाज़ निकाली, ''क्वाक... क्वाक... क्वाक... कर्नल दत्ता ठहाका मारकर हँस पड़े।

बहूजी भी मुँह पर पल्लू रखकर हँसने लगीं।

बिशन भी हँसता हुआ हिरन की तरह छलाँगें लगाता तीतर के साथ वहाँ से अपने घर की ओर भाग चला।

- प्रतिभा नाथ

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. आमतौर पर पहाड़ी क्षेत्रों में घर की छतें ढलावदार बनाई जाती हैं। ऐसा क्यों किया जाता होगा?
2. इस कहानी में सेबों के खेतों और सीढ़ीनुमा खेत का जिक्र आया है। अनुमान लगाकर बताइए कि यह कहानी भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र की होगी और वहाँ सीढ़ीनुमा खेती क्यों की जाती होगी?

पढ़िए

1. पाठ पढ़िए, खाली स्थान भरिए।

(अ) बिशन .....से .....तक आ ही रहा था कि उसे ....की आवाज़ सुनाई दी।

(आ) उसे वहाँ से सीढ़ीनुमा ......और फलों के .... साफ़ दिखाई दे रहे थे।

(इ) इसलिए वह.......के बीच से निकल कर.....के किनारे-किनारे चलने लगा।

2. पाठ ध्यानपूर्वक पढ़िए। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(अ) ''कितना दुख पहुँचाने वाला काम करते हैं ये शिकारी''यह वाक्य किसने कहा?

(आ) शिकारी और कर्नल दत्ता के बीच क्या बातचीत हुई ?

(इ) बिशन ने घायल तीतर को कैसे बचाया ?

लिखिए

1. बिशन एक साहसी बच्चा था। यह आप पाठ के आधार पर कैसे सिद्ध कर सकते हैं।
2. बिशन के स्थान पर यदि आप होते तो परिस्थिति का सामना कैसे करते?

शब्द भंडार

1. इस कहानी में पहाड़ी, घाटी जैसे शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। पहाड़ी इलाके से जुड़े हुए कुछ और शब्द सोचकर लिखिए ।
2. कर्नल साहब के कहने पर बिशन दौड़कर 'दवाइयों का बक्सा' ले आया। इसे आप प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स/ फ़र्स्ट एड बाक्स के नाम से जानते होंगे।

(अ) इस बक्से में क्या-क्या चीज़ें होती हैं?

(आ) इसका इस्तेमाल कब-कब किया जाता है?

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कई जीव-जंतु, पशु-पक्षी लुप्त होने की कगार पर है या उनकी संख्या कम होती जा रही है। उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। इस संदर्भ में कुछ नारे लिखिए।

प्रशंसा

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने वाले साहसी बच्चों की प्रशंसा में पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्यों के साथ दिये गये कोष्ठक में कुछ सर्वनाम शब्द दिये गये हैं। उनके सही रूप से वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

  (क) मास्टर साहब ने अप्पाराव को ....पास बुलाकर कहा.........
  कल..............घर आना । (अपने, तुम, मैं)

  (ख) सेंटीला ....घर नागालैंड के किस शहर में है ? (तुम)

  (ग) मोहन को समझ में नहीं आ रहा कि ....क्या करना चाहिए (वह)

- निम्नलिखित वाक्यों को अपनी मातृभाषा या अन्य भाषा में लिखिए।

  (क) सुबह की हल्की धूप में खेत सुनहरे दिखाई दे रहे थे।

  (ख) वह इतना तेज़ चल रहा था मानो उसे पंख लग गये हों।

परियोजना कार्य

कुछ अलग-अलग पत्तों को इकट्ठा कीजिए। उन्हें ड्राइंगशीट पर टेप से चिपकाकर उनके नाम और उपयोगिता लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

शब्द कोश

अनमना	=	उदास, खिन्न (Agitated)
अनूठा	=	अनोखा, सुंदर (Curious)
असमंजस	=	समझ में न आना कि क्या करें (Hesitation)
आकृति	=	बनावट, रूप (Shape)
आगाह	=	चेतावनी देना (Acquainted with aware)
इकरार	=	स्वीकृति, हाँ करना (Acceptance)
इठलाना	=	इतराना (To walk Affectedly)
उकेरना	=	पत्थर, लकड़ी आदि पर कुछ बनाना (engraving)
कछार	=	नदी के किनारे की ज़मीन, घाटी (Law and Moist land of a River)
करीने	=	ढंग,तरीका (Good Mannered, Arrangement)
कसूती	=	कर्नाटक की एक तरह की कढ़ाई (A stich of Karnataka)
कहर	=	आफ़त (Disaster, Calamity)
कांथा	=	बंगाल की एक तरह की कढ़ाई (A Stich of Bengal)
काढ़ना	=	बेलबूटे बनाना, निकालना (to embroider, to draw out)
कातर	=	सहमा हुआ, बेबसी का भाव (Nervous)
केरा	=	केला (Banana)
कोष	=	खज़ाना (Treasure)
खाकसार	=	तुच्छ, नाचीज़ (Low, mean, Humble)
खेद	=	दुख (Sorrow)
गंतव्य	=	जहाँ किसी चीज़ या व्यक्ति को पहुँचाना हो (Destination)
प्रथा	=	रीति-रिवाज, प्रणाली (Custom, rule)
प्रशस्ति	=	स्तुति, प्रशंसा (Praise, Excellence)

SCERT TELANGANA

गमछा	=	बदन पोंछने का कपड़ा (A towel or a napkin)
गारत	-	खराब, बर्बाद (Destroyed)
गिलट	=	चाँदी के रंग की एक धातु (Nickel)
गुसलखाना	=	स्नानागार (Bathroom)
घिरनी	=	चरखी, गरारी (A wheel for winding thread)
घूरा	=	कूड़ा फेंकने की जगह (rubbish)
चाँपाकल	=	हैंडपंप, बरमा, बंबा (Borewell)
छटपटाहट	=	बेचैनी (Restlessness)
छप्पर	=	फूस आदि की छत (A thatched Roof)
छितराना	=	बिखराना, फैलाना (To scatter, to disperse)
ज़ाजिम	=	दरी के ऊपर बिछाने की चादर (A printed bedsheet, a floor cloth, a carpet)
टापू	=	द्वीप (Island)
ठीकरे	=	मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा (broken pieces of earth ware)
ठौर	=	जगह, उपयुक्त स्थान (Place, Residence)
तपसी	=	तपस्वी,तपस्या करने वाला (An ascetic, a devotee)
तल्खी	=	कड़वाहट (Bitterness)
ताक	=	आला, दीवार में बनी छोटी सी जगह(A small recess in a Wall)
दुरुस्त	=	ठीक, उचित (Fit proper, accurate)
दूभर	=	दुःसाध्य, कठिन (Arduous)
नक्का जोड़ी	=	सुई का वह छेद जिसमें डोरा पिरोया जाता है। ताश का एक्का, कौड़ी (The eye of a needle an ace at cards or dice)
नफ़ीस	=	बढ़िया, स्वच्छ, सुंदर (Excellent, Exquisite, Clean)
नियमित	=	निश्चित, नियमानुसार (Regulated, Prescribed)
परिधान	=	पोशाक (dress, a garment)
पिट्ठू	=	सहायक, खुशामदी (Helper, Supporter)
पुश्तैनी	=	कई पीढ़ियों से चला आया हुआ(Ancestral,

SCERT TELANGANA

बावर्चीखाना = रसोईघर (Kitchen)

बोरसी = अँगीठी (An Earthen pot to hold fire)

भौचक = हक्का-बक्का, चकित (Astonished)

मँझोला = मध्यम आकार का (Of average size of dimension, Middling)

मचिया = छोटी चारपाई

मनोरम = आकर्षक, सुंदर (Attractive, beautiful)

मातम = शोक, दुख (Mourning)

मुआयना = जाँच-पड़ताल (Inspection)

रज़ाई = छोटा लिहाफ (Small Blanket)

रेल-पेल = भीड-भाड़ (A crowd)

वर्गाकार = चौकोर (Square)

शूरमा = बहादुर, लड़ाका (Courageous)

संदेशवाहक = संदेश लाने ले जानेवाला (Message Runner)

सुघड़ = जिसकी बनावट सुंदर हो, सुडौल, हुनरमंद (elegant)

स्वगत = अपने-आप से (Speaking to Oneself)

हिकमत = बुद्धिमानी, चतुराई (Wisdom, Clever)

हौदा = हाथी पर बैठने के लिए बनाया गया लकड़ी का खाँचा (An open seat placed over the back of an Elephant)

SCERT TELANGANA